विशेषांक

रायपुर, वर्ष-18, अंक-01, जनवरी 2022, मूल्य ₹ 10

# दीप कमल

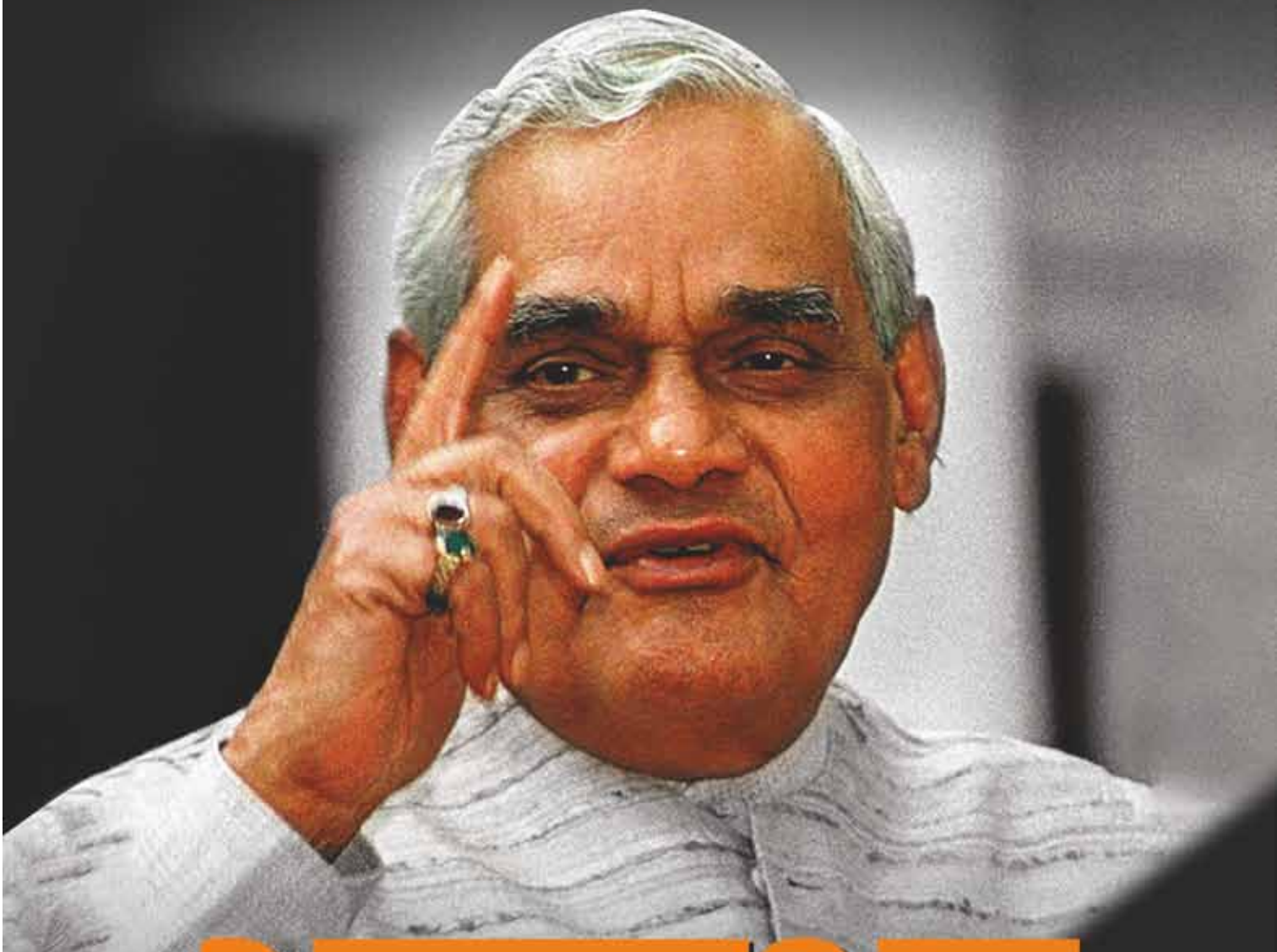

# अजातशत्रु

## अटल स्मृति अंक

# ...संघर्ष पथ पर जो मिला ये भी सही, वो भी सही

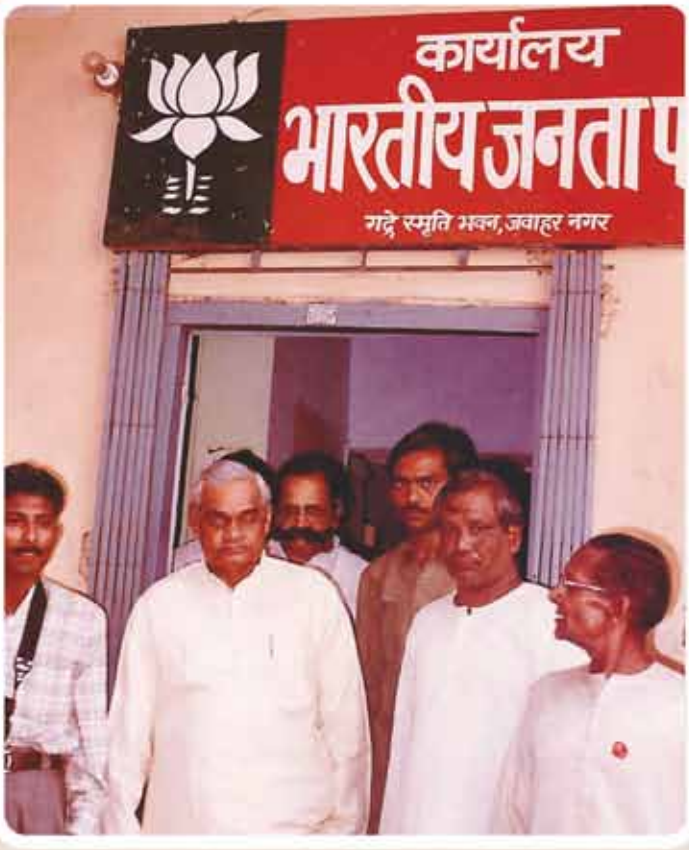

# अनुक्रमणिका


## दीप कमल

**संपादक**
सुभाष राव

**कार्यकारी संपादक**
पंकज कुमार झा

मुद्रक एवं प्रकाशक विष्णुदेव साय द्वारा, भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़, के लिए मूणत ऑफसेट प्रिंटर्स रायपुर से मुद्रित एवं एकात्म परिसर, रजबंधा मैदान रायपुर से प्रकाशित।

फोटो साभार श्री विनय शर्मा, श्री गोकुल सोनी एवं अन्य।


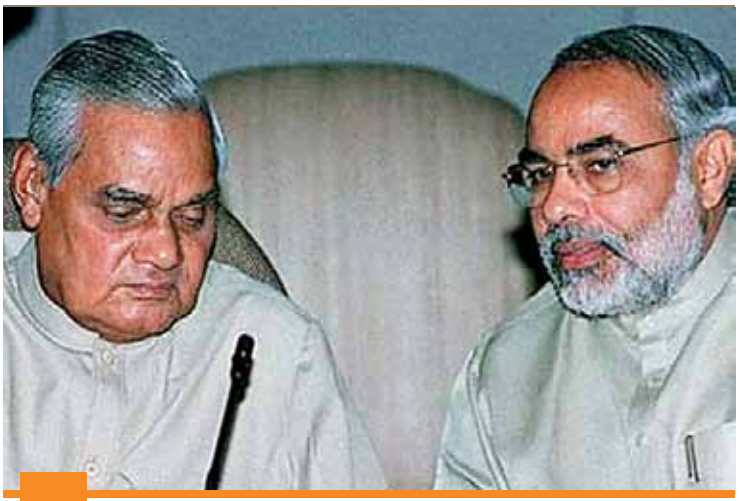


7 **मेरे अटल जीः नरेंद्र मोदी**
अटल जी अब नहीं रहे। मन नहीं मानता। अटल जी, मेरी आंखों के सामने हैं, स्थिर हैं। जो हाथ मेरी पीठ पर धौल जमाते थे, जो स्नेह से, मुस्कुराते हुए मुझे अंकवार में भर लेते थे, वे स्थिर हैं। अटल जी की यह स्थिरता मुझे झकझोर रही है, अस्थिर कर रही...

**अटल जी से जुड़ी हर स्मृति ...**

9 भारत रत्न श्रध्देय अटल बिहारी बाजपेयी भारतीय राजनीति...

**शून्य से शिखर तक के अनथक...**

13 भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी...

**सनातन चिंतन के ध्वजवाहक...**

15 श्रद्धेय स्व. अटलबिहारी जी वाजपेयी देश के ऐसे राजनेता...



**स्वत्वाधिकारी**
भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ़

**ई-मेल**
jay7feb@gmail.com

**फोन**
0771-2233500, 4266000



चाणक्य की नीति और विवेकानंद ... 21
भारतीय भाषाएं, छत्तीसगढ़ और राज्य... 24
राष्ट्र की अखंडता के लिए अटल जी ... 27
भारतीय राजनीति का करिश्माई ... 29
अमिट रहेगी संसद के उस ऐतिहासिक... 31
जो पाया उसमें खो न जायें, जो खोया ... 32
मेरे मार्गदर्शक व राजनैतिक गुरु थे... 34
जनता के हृदय की धड़कन को... 36
कांग्रेस के हाथों में देश सुरक्षित नहीं... 38
किया नहीं विध्वंस विश्व का ... 40
सचमुच 'बड़ा दिन' हो गया... 42
एक कवि राजनेता - अटल बिहारी ... 45
राष्ट्रीयता के सबसे प्रखर और मुखर ... 47
छत्तीसगढ़ का स्वप्न और मा. अटलजी... 50

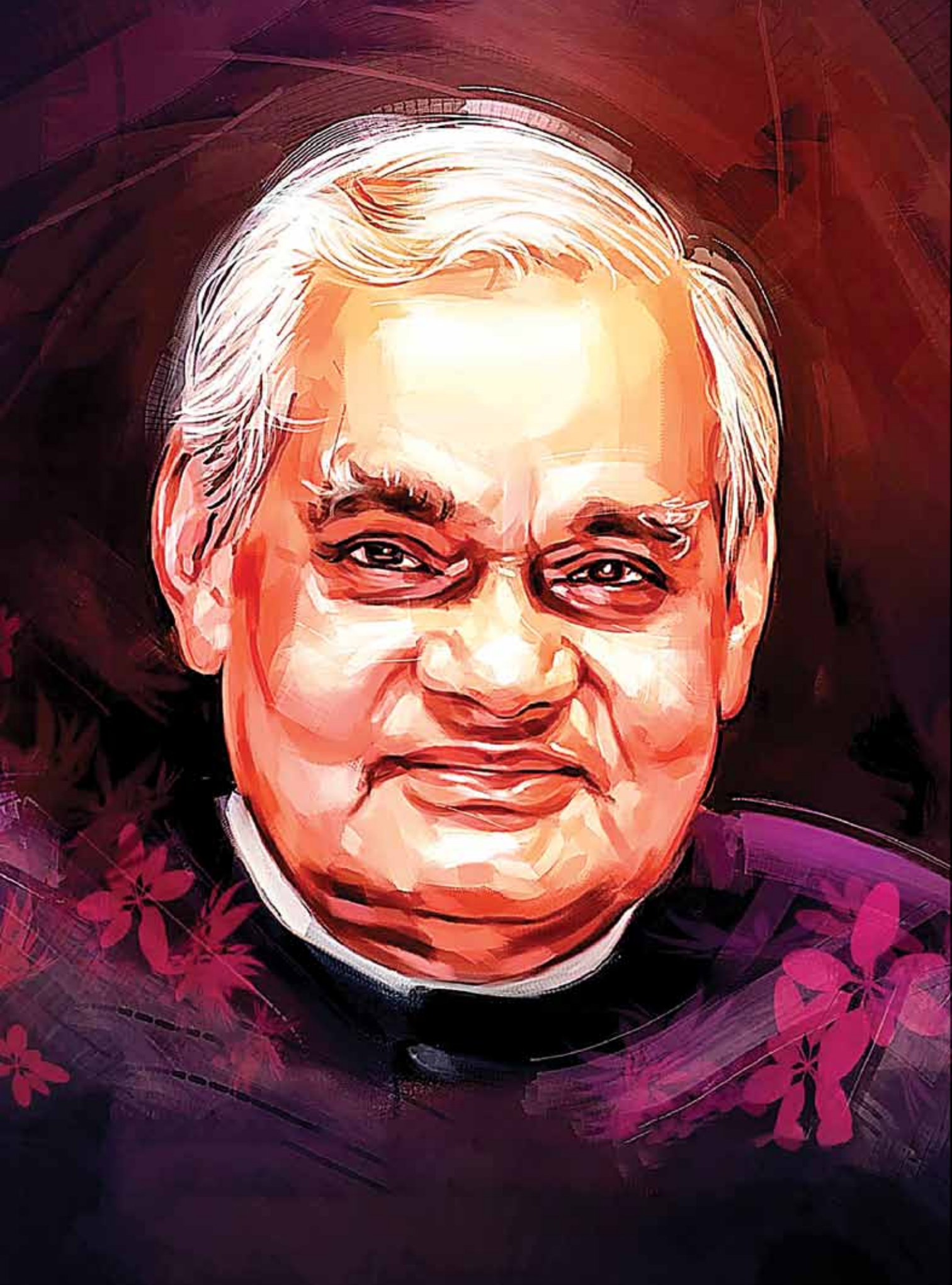

प्रकाशकीय

# अटल जी की स्मृतियों के साथ कदमताल करता दीपकमल

कोरोना की भीषण त्रासदी में समाज के हर क्षेत्र की तरह प्रकाशन व्यवसाय भी काफी हद तक प्रभावित रहा। प्रदेश भाजपा का मुखपत्र 'दीपकमल' भी इससे अछूता नहीं रह सका। कुछ अन्य अपरिहार्य कारणवश भी पिछले कुछ समय से पत्रिका आपके हाथों तक नहीं पहुंच पा रही थी। अब कोरोना से भी प्रदेश में थोड़ी राहत है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में अधिकांश टीके लग जाने के कारण प्रदेश में भी अब लोग थोड़ी राहत महसूस कर रहे हैं। उम्मीद कर रहे हैं कि अब इसकी तीसरी लहर का सामना नहीं करना होगा। ईश्वर से भी यही प्रार्थना भी है।

ऐसे समय में अब समाज काज फिर से पटरी पर लौटता दिख रहा है। भाजपा भी अब फिर से आभासीय दुनिया से निकल विधि-निषेधों का पालन करते हुए व्यक्तिशः संपर्क की अपनी पुरानी दुनिया में वापस लौटने लगी है। ऐसे में अब फिर से आपका मुखपत्र 'दीपकमल' भी नयी साज-सज्जा के साथ आपके हाथों में है। इस लोकप्रिय पत्रिका का प्रकाशन फिर से सुचारू हो, इसकी कोशिश रहेगी। पुनः प्रकाशन का यह अंक भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी जी की स्मृति को समर्पित है। अटल जी की छत्रछाया में ही हम जैसे लाखों कार्यकर्ताओं ने अपने राजनीतिक-सामजिक जीवन की यात्रा तय की है। राज्य निर्माता के अनेकानेक संस्मरण स्मृति पटल पर चलचित्र की तरह अंकित है। पत्रिका ने बड़े ही मनोहारी ढंग से प्रदेश के उनसे संबंधित अनेक स्मृतियों को सहेजा है।

अजातशत्रु अटल जी की जयंती पर उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। •

**विष्णुदेव साय**
**प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा छत्तीसगढ़.**

संपादकीय

# हम सदैव ऋणी रहेंगे अटलजी के

एक अंतराल के बाद 'दीप कमल' का अंक आपके हाथों में है। पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती के अवसर पर अटल स्मृति को यह अंक समर्पित है। पत्रिका का प्रकाशन नियमित एवं निरंतर होता रहे, यह प्रयास रहेगा।

सन 2003 में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. वैंकेया नायडू एवं प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह जी थे। भारतीय जनता पार्टी उन दिनों विपक्ष में रहकर संघर्षरत थी एवं पार्टी की केन्द्रीय योजना के अंतर्गत एवं प्रदेश के कार्यकर्ताओं को वैचारिक रूप से तैयार करने की दृष्टि से एक मुखपत्र के प्रकाशन की आवश्यकता महसूस हुई। यह इस समाचार पत्रिका का सौभाग्य रहा कि इसका विमोचन तब यशस्वी लोकनायक अटल जी ने ही प्रधानमंत्री के रूप में बिलासपुर में किया था। अब नए कलेवर और तेवर के साथ इसका पुनः प्रकाशन भी 'अटल विशेषांक' के रूप में हो रहा है।

यह अंक मुख्यतया अटल जी से संबंधित संस्मरणों पर आधारित है। 5 अप्रैल 2003 को बिलासपुर में भारतीय जनता पार्टी ने परिवर्तन रैली के रूप में अपने चुनावी संघर्ष की आक्रामक शुरुआत की। उस रैली में संघर्ष का शंखनाद करने तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल जी का प्रवास निश्चित हो गया। उसी अवसर पर श्रद्धेय अटल जी के कर-कमलों से 'दीपकमल' का विमोचन हुआ था।

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण को 21 वर्ष हो चुके हैं। इन 21 वर्षों में 6 वर्ष जहां कांग्रेस का शासन रहा वहीं 15 वर्षों तक भाजपा सत्ता में रही। कहने की आवश्यकता नहीं है कि भाजपा के 15 वर्षों की सत्ता के दौरान छत्तीसगढ़ ने विकास के जिस मुकाम को हासिल किया है वह अनेक अग्रणी और विकसित राज्यों के लिए भी आश्चर्य का विषय रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के पूर्व लोकसभा के आम चुनाव में श्रद्धेय अटल जी ने रायपुर की आम सभा में भाजपा को समर्थन देने की अपील की थी एवं भाजपा की सरकार बनने पर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण का आश्वासन दिया था। भाजपानीत राजग गठबंधन की सरकार बनते ही अटल जी ने अपना वादा पूरा कर छत्तीसगढ़ समेत उत्तराखंड और झारखंड प्रदेश का गठन किया। इसके लिए प्रदेशवासी सदैव अटल जी के ऋणी रहेंगे।

श्रद्धेय अटल जी का छत्तीसगढ़ विशेषकर वनवासी अंचलों से विशेष लगाव था। जनसंघ के काल से भारतीय जनता पार्टी के संघर्ष काल एवं उनके नेतृत्व में भाजपानीत गठबंधन की सरकार में प्रधानमंत्री रहते छत्तीसगढ़ में किए गए उनके अनेक प्रवास अविस्मरणीय हैं। एक वक्ता के रूप में उनकी लोकप्रियता उन दिनों भी उफान पर थी जब भाजपा सत्ता से कोसों दूर थी, और जब स्वयं अटल जी ग्वालियर से चुनाव हार गए थे। तब पार्टी को मात्र 2 लोकसभा सीटें मिली थी। बावजूद इसके अटल जी की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई।

अटल जी से संबंधित छत्तीसगढ़ के अनेक संस्मरण हैं। सबके हिस्से इनकी अनेक कहानियां हैं। किंतु एक संस्मरण मुझे विशेष तौर पर याद है। अटल जी तब के छत्तीसगढ़ अंचल के प्रवास पर थे। वे रायगढ़ के कार्यक्रम के बाद रेल से सीधे दुर्ग जा रहे थे। रायपुर स्टेशन पर 20 मिनट का ठहराव था। इस दौरान हम सब कार्यकर्ता चाय इत्यादि लेकर स्टेशन पर थे। रायपुर के समाचार पत्रों के प्रतिनिधि भी वहां अटल जी से मिलने पहुंचे एवं संक्षिप्त चर्चा की। दूसरे दिन अटल जी रायपुर आए एवं समाचार पत्रों में छपे उनकी चर्चा जो प्रकाशित हुई थी उसे पढ़ा एवं मुझसे कहा कि मैंने ऐसा नहीं कहा था। पत्रकारों ने गलत लिखा है। उन्होंने पहले तो मुझसे कहा कि इसका खंडन भेज दो और मुझे खंडन का मैटर लिखवा भी दिया। फिर कहा, नोटबुक लाओ। और उन्होंने स्वयं 5-6 पन्नों में खंडन लिखकर मुझे दिया और कहा कि इसे टाइप करवा कर समाचार पत्रों में भेज दो। दूसरे दिन सभी समाचार पत्रों में अटल जी का खंडन उनके लिखे अनुसार प्रमुखता के साथ प्रकाशित हुआ। ऐसे थे अपने अटल जी।

दीपकमल का अटल जी पर विशेषांक उनके ऐसे संस्मरणों से परिपूर्ण है। यह विशेषांक भाजपा कार्यकर्ताओं एवं सुधी पाठकों के लिए संग्रहणीय रहे, ऐसी अपेक्षा है। अटल जी की जयन्ती पर इस महान लोकनायक को उनके अपने प्रदेश भाजपा परिवार की तरफ से अशेष श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। विनम्र स्मरणांजलि। •

**-सुभाष राव।**

# मेरे अटल जी

-नरेंद्र मोदी

अटल जी अब नहीं रहे। मन नहीं मानता। अटल जी, मेरी आंखों के सामने हैं, स्थिर हैं। जो हाथ मेरी पीठ पर धौल जमाते थे, जो स्नेह से, मुस्कुराते हुए मुझे अंकवार में भर लेते थे, वे स्थिर हैं। अटल जी की यह स्थिरता मुझे झकझोर रही है, अस्थिर कर रही है। एक जलन सी है आंखों में, कुछ कहना है, बहुत कुछ कहना है, लेकिन कह नहीं पा रहा। मैं खुद को बार-बार यकीन दिला रहा हूं कि अटल जी अब नहीं हैं, लेकिन यह विचार आते ही खुद को इस विचार से दूर कर रहा हूं। क्या अटल जी वाकई नहीं हैं...? नहीं, मैं उनकी आवाज़ अपने भीतर गूंजते हुए महसूस कर रहा हूं, कैसे कह दूं, कैसे मान लूं, वे अब नहीं हैं।

वे पंचतत्व हैं। वे आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सबमें व्याप्त हैं, वे अटल हैं, वे अब भी हैं। जब उनसे पहली बार मिला था, उसकी स्मृति ऐसी है, जैसे कल की ही बात हो। इतने बड़े नेता, इतने बड़े विद्वान। लगता था, जैसे शीशे के उस पार की दुनिया से निकलकर कोई सामने आ गया है। जिनका इतना नाम सुना था, जिन्हें इतना पढ़ा था, जिनसे बिना मिले, इतना कुछ सीखा था, वे मेरे सामने थे। जब पहली बार उनके मुंह से मेरा नाम निकला, तो लगा, पाने के लिए बस इतना ही बहुत है। बहुत दिनों तक मेरा नाम लेती हुई उनकी वह आवाज़ मेरे कानों से टकराती रही। मैं कैसे मान लूं कि वह आवाज अब चली गई है।

कभी सोचा नहीं था, कि अटल जी के बारे में ऐसा लिखने के लिए कलम उठानी पड़ेगी। देश और दुनिया अटल जी को एक स्टेट्समैन, धाराप्रवाह वक्ता, संवेदनशील कवि, विचारवान लेखक, धारदार पत्रकार और विज़नरी जननेता के तौर पर जानती है। लेकिन मेरे लिए उनका स्थान इससे भी ऊपर का था। सिर्फ इसलिए नहीं कि मुझे उनके साथ बरसों तक काम करने का अवसर मिला, बल्कि मेरे जीवन, मेरी सोच, मेरे आदर्शों-मूल्यों पर जो छाप उन्होंने छोड़ी, जो विश्वास उन्होंने मुझ पर किया, उसने मुझे गढ़ा है, हर स्थिति में अटल रहना सिखाया है।

हमारे देश में अनेक ऋषि, मुनि, संत आत्माओं ने जन्म लिया है। देश की आज़ादी से लेकर आज तक की विकास यात्रा के लिए भी असंख्य लोगों ने अपना जीवन समर्पित किया है, लेकिन स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र की रक्षा और 21वीं सदी के सशक्त, सुरक्षित भारत के लिए अटल जी ने जो किया, वह अभूतपूर्व है।

> **हमारे देश में अनेक ऋषि, मुनि, संत आत्माओं ने जन्म लिया है, देश की आज़ादी से लेकर आज तक की विकास यात्रा के लिए भी असंख्य लोगों ने अपना जीवन समर्पित किया है, लेकिन स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र की रक्षा और 21वीं सदी के सशक्त, सुरक्षित भारत के लिए अटल जी ने जो किया, वह अभूतपूर्व है.**

उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था - बाकी सब का कोई महत्व नहीं। इंडिया फर्स्ट – भारत प्रथम, यह मंत्र वाक्य उनका जीवन ध्येय था। पोखरण देश के लिए ज़रूरी था, तो चिंता नहीं की प्रतिबंधों और आलोचनाओं की, क्योंकि देश प्रथम था। सुपर कम्प्यूटर नहीं मिले, क्रायोजेनिक इंजन नहीं मिले, तो परवाह नहीं, हम खुद बनाएंगे, हम खुद अपने दम पर अपनी प्रतिभा और वैज्ञानिक कुशलता के बल पर असंभव दिखने वाले कार्य संभव कर दिखाएंगे। और ऐसा किया भी। दुनिया को चकित किया। सिर्फ एक ताकत उनके भीतर काम करती थी - 'देश प्रथम' की ज़िद।

'काल के कपाल' पर लिखने और मिटाने की ताकत, हिम्मत और चुनौतियों के बादलों में विजय का सूरज उगाने का चमत्कार उनके सीने में था, तो इसलिए, क्योंकि वह सीना 'देश प्रथम' के लिए धड़कता था। इसलिए हार और जीत उनके मन पर असर नहीं करती थी। सरकार बनी, तो भी, सरकार एक वोट से गिरा दी गई, तो भी, उनके स्वरों में पराजय को भी विजय के ऐसे गगनभेदी विश्वास में बदलने की ताकत थी कि जीतने वाला ही हार मान बैठे।

अटल जी कभी लीक पर नहीं चले। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में नए रास्ते बनाए और तय किए। 'आंधियों में

भी दिये जलाने' की क्षमता उनमें थी। पूरी बेबाकी से वे जो कुछ भी बोलते थे, सीधा जनमानस के हृदय में उतर जाता था। अपनी बात को कैसे रखना है, कितना कहना है और कितना अनकहा छोड़ देना है, इसमें उन्हें महारत हासिल थी।

राष्ट्र की जो उन्होंने सेवा की, विश्व में मां भारती के मान-सम्मान को उन्होंने जो बुलंदी दी, इसके लिए उन्हें अनेक सम्मान भी मिले। देशवासियों ने उन्हें 'भारत रत्न' देकर अपना मान भी बढ़ाया। लेकिन वे किसी भी विशेषण, किसी भी सम्मान से ऊपर थे।

जीवन कैसे जीया जाए, राष्ट्र के काम कैसे आया जाए, यह उन्होंने अपने जीवन से दूसरों को सिखाया। वे कहते थे, "हम केवल अपने लिए न जीएं, औरों के लिए भी जीएं... हम राष्ट्र के लिए अधिकाधिक त्याग करें। अगर भारत की दशा दयनीय है, तो दुनिया में हमारा सम्मान नहीं हो सकता। किंतु यदि हम सभी दृष्टियों से सुसंपन्न हैं, तो दुनिया हमारा सम्मान करेगी..."

देश के गरीब, वंचित, शोषित के जीवनस्तर को ऊपर उठाने के लिए वे जीवनभर प्रयास करते रहे। वे कहते थे, "गरीबी, दरिद्रता गरिमा का विषय नहीं हैं, बल्कि यह विवशता है, मजबूरी है और विवशता का नाम संतोष नहीं हो सकता..." करोड़ों देशवासियों को इस विवशता से बाहर निकालने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किए। गरीब को अधिकार दिलाने के लिए देश में आधार जैसी व्यवस्था, प्रक्रियाओं का ज्यादा से ज्यादा सरलीकरण, हर गांव तक सड़क, स्वर्णिम चतुर्भुज, देश में विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर, राष्ट्र निर्माण के उनके संकल्पों से जुड़ा था।

आज भारत टेक्नोलॉजी के जिस शिखर पर खड़ा है, उसकी आधारशिला अटल जी ने ही रखी थी। वे अपने समय से बहुत दूर तक देख सकते थे - स्वप्नद्रष्टा थे, लेकिन कर्मवीर भी थे। कवि हृदय, भावुक मन के थे, तो पराक्रमी सैनिक मन वाले भी थे। उन्होंने विदेश की यात्राएं कीं। जहां-जहां भी गए, स्थायी मित्र बनाए और भारत के हितों की स्थायी आधारशिला रखते गए। वे भारत की विजय और विकास के स्वर थे।

अटल जी का प्रखर राष्ट्रवाद और राष्ट्र के लिए समर्पण करोड़ों देशवासियों को हमेशा से प्रेरित करता रहा है। राष्ट्रवाद उनके लिए सिर्फ एक नारा नहीं था, बल्कि जीवन शैली थी। वे देश को सिर्फ एक भूखंड, ज़मीन का टुकड़ा भर नहीं मानते थे, बल्कि एक जीवंत, संवेदनशील इकाई के रूप में देखते थे। "भारत ज़मीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है..." यह सिर्फ भाव नहीं, बल्कि उनका संकल्प था, जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया। दशकों का सार्वजनिक जीवन उन्होंने अपनी इसी सोच को जीने में, धरातल पर उतारने में लगा दिया. आपातकाल ने हमारे लोकतंत्र पर जो दाग लगाया था, उसे मिटाने के लिए अटल जी के प्रयास को देश हमेशा याद रखेगा।

**"भारत ज़मीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है..." यह सिर्फ भाव नहीं, बल्कि उनका संकल्प था, जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया, दशकों का सार्वजनिक जीवन उन्होंने अपनी इसी सोच को जीने में, धरातल पर उतारने में लगा दिया।**

राष्ट्रभक्ति की भावना, जनसेवा की प्रेरणा उनके नाम के ही अनुकूल अटल रही. भारत उनके मन में रहा, भारतीयता तन में। उन्होंने देश की जनता को ही अपना आराध्य माना। भारत के कण-कण, कंकर-कंकर, भारत की बूंद-बूंद को, पवित्र और पूजनीय माना।

जितना सम्मान, जितनी ऊंचाई अटल जी को मिली, उतना ही अधिक वह ज़मीन से जुड़ते गए। अपनी सफलता को कभी भी उन्होंने अपने मस्तिष्क पर प्रभावी नहीं होने दिया। प्रभु से यश, कीर्ति की कामना अनेक व्यक्ति करते हैं, लेकिन ये अटल जी ही थे, जिन्होंने कहा,

*"हे प्रभु ! मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना।*
*गैरों को गले न लगा सकूं, इतनी रुखाई कभी मत देना..."*

अपने देशवासियों से इतनी सहजता और सरलता से जुड़े रहने की यह कामना ही उनको सामाजिक जीवन के एक अलग पायदान पर खड़ा करती है।

वे पीड़ा सहते थे, वेदना को चुपचाप अपने भीतर समाए रहते थे, पर सबको अमृत देते रहे - जीवनभर। जब उन्हें कष्ट हुआ, तो कहने लगे - "देह धरण को दंड है, सब काहू को होये, ज्ञानी भुगते ज्ञान से मूरख भुगते रोए..." उन्होंने ज्ञान मार्ग से अत्यंत गहरी वेदनाएं भी सहन कीं और वीतरागी भाव से विदा ले गए।

यदि भारत उनके रोम-रोम में था, तो विश्व की वेदना उनके मर्म को भेदती थी। इसी वजह से हिरोशिमा जैसी कविताओं का जन्म हुआ। वे विश्व नायक थे। मां भारती के सच्चे वैश्विक नायक। भारत की सीमाओं के परे भारत की कीर्ति और करुणा का संदेश स्थापित करने वाले आधुनिक बुद्ध।

कुछ वर्ष पहले लोकसभा में जब उन्हें वर्ष के सर्वश्रेष्ठ सांसद के सम्मान से सम्मानित किया गया था, तब उन्होंने कहा था, "यह देश बड़ा अद्भुत है, अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा रहा है, अभिनंदन किया जा सकता है..."

अपने पुरुषार्थ को, अपनी कर्तव्यनिष्ठा को राष्ट्र के लिए समर्पित करना उनके व्यक्तित्व की महानता को प्रतिबिंबित करता है। यही सवा सौ करोड़ देशवासियों के लिए उनका सबसे बड़ा और प्रखर संदेश है। देश के साधनों, संसाधनों पर पूरा भरोसा करते हुए, हमें अब अटल जी के सपनों को पूरा करना है, उनके सपनों का भारत बनाना है।

नए भारत का यही संकल्प, यही भाव लिए मैं अपनी तरफ से और सवा सौ करोड़ देशवासियों की तरफ से अटल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, उन्हें नमन करता हूं। •

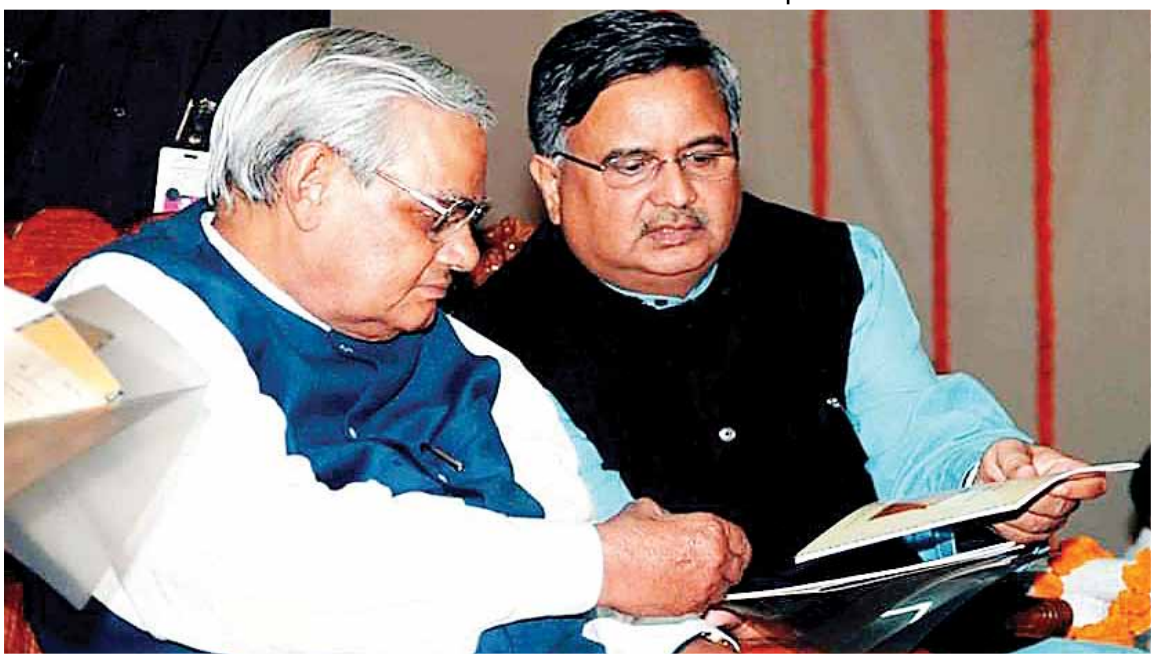

# अटल जी से जुड़ी हर स्मृति आज भी हृदय में अटल है

-डॉ. रमन सिंह

भारत रत्न श्रध्देय अटल बिहारी बाजपेयी भारतीय राजनीति के वो सूर्य हैं, जिसके प्रकाश से मुझ जैसे भारतीय जनता पार्टी के करोड़ो कार्यकर्ता आगे बढ़ रहे हैं। श्रद्धेय अटल जी ने राजनीति को दलगत और स्वार्थ की वैचारिकता से अलग हटकर अपनाया और उसको जिया भी है। कई तरह के उतार-चढ़ाव उनके जीवन में आये लेकिन उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उन्होंने राजनीति में वो मिसाल कायम की है, जो युगों-युगों तक हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी।

मेरा अटल जी के साथ गुरू-शिष्य का रिश्ता रहा है। मैंने सदैव उनके पदचिन्हों पर चलकर राजनीति सीखी है, हर निर्णय, हर योजना में अटल जी के विचारों को केन्द्र में रखकर कार्यान्वित किया है। मुश्किल से मुश्किल समय में भी मुझे अटल जी ने जो सिखाया, बताया उसी के आधार पर मैं आगे बढ़ा। उनके साथ जुड़ी मेरी एक-एक स्मृति मेरे लिए प्राणवायु से कम नहीं है। वो आज हमारे साथ नहीं हैं लेकिन पग-पग पर उनका मार्गदर्शन मुझे मिल रहा है, वह सही अर्थों में मेरे जीवनशिल्पी हैं, मार्गदर्शक हैं।

अटल जी से जुड़ी कई स्मृतियां मेरे हृदय में हैं, उन्हें याद करते ही मन प्रफुल्लित हो उठता है। यह मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे उनके प्रधानमंत्री काल में उनके मंत्रिमंडल में केन्द्रीय राज्य मंत्री (वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय) के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। सामान्य कार्यकर्ता से लेकर केन्द्रीय मंत्री और फिर छत्तीसगढ़ का मुख्यमंत्री बनने तक कई अमिट स्मृतियां मेरी अटल जी के साथ जुड़ी हैं। एक बड़ी ही रोचक घटना मुझे याद आती है। यह बात लगभग 1977-78 होगी। उस समय आरिफ बेग साहब कवर्धा होते हुए जबलपुर जा रहे थे। उस समय मैं कवर्धा जिले का युवा मोर्चा का अध्यक्ष था। उस समय अटल जी का कवर्धा आना हम सभी के जी गौरव व प्रसन्नता की बात थी।

> **यह मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे उनके प्रधानमंत्री काल में उनके मंत्रिमंडल में केन्द्रीय राज्य मंत्री (वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय) के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। सामान्य कार्यकर्ता से लेकर केन्द्रीय मंत्री और फिर छत्तीसगढ़ का मुख्यमंत्री बनने तक कई अमिट स्मृतियां मेरी अटल जी के साथ जुड़ी हैं।**

मैं और मेरे साथी अटल जी से मिलने रात्रि 9 बजे सर्किट टाऊस पहुंचे। उनकी गाड़ी खराब होने के कारण अटल जी और आरिफ बेग साहब को कवर्धा सर्किट हाउस

में रुकना पड़ा। हम सभी खुश थे कि अटल जी, हमारे कवर्धा में रुकने वाले हैं। हम सभी ने अटल जी से आग्रह किया कि आप पहली बार कवर्धा आए हैं, आपकी आज्ञा हो तो हम सभी कार्यकर्ता एक सभा यहां आयोजित कराना चाहते हैं।

अटल जी ने कहा कि इतने कमय समय में सभा कैसे संभव है? मैंने कहा कि आप चिंता न करें, हम सभी पूरी रात काम कर तैयारी कर लेंगे। मैंने अटल जी से कहा कि आप जब सर्किट हाउस से निकलेंगे तो महावीर चौक में सभा करा लेंगे। आपको कहीं जाना भी नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा कि ठीक है लेकिन क्या लोग आ जायेंगे? यदि लोग आ जाएंगे तो मैं सभा कर लूंगा। उनका इतना कहना था कि हम सभी खुशी से झूम उठे। विश्वास ही नहीं हो रहा था कि कवर्धा में वो भी बिना कोई पूर्व तैयारी के अटल जी सभा के लिए तैयार हो जाएंगे। लेकिन उनकी यही सहजता, सरलता, कार्यकर्ताओं के प्रति स्नेह ही तो उनका विराट व्यक्तित्व था।

अब थोड़ी चिंता हम लोगों को थी कि इतने कम समय में तैयारी कैसे होगी। लोग कैसे आएंगे। लेकिन अटल जी से मिलकर हम में इस कदर ऊर्जा भर गई कि हमने पूरी रात जागकर तैयारी की। सुबह 7 बजे से लाउडस्पीकर लगाकर कार्यक्रम की जानकारी शहरवासियों को दी। आसपास के गांवों में भी कार्यकर्ताओं ने लोगों से सभा में आने का आग्रह किया। जैसे ही सुबह हुई हम सभी अटल जी के पास पहुंचे और सभा में चलने का निवेदन किया। अटल जी ने बड़ी ही सहजता से कहा कि सभा में लोग इतनी जल्दी आ गये होंगे? तब मैंने कहा- सभा में तो भयंकर भीड़ है। भयंकर शब्द सुनते ही वो मुस्कुराने लगे और कहा जब भयंकर भीड़ है तो चलना ही पड़ेगा।

जब हम अटल जी को लेकर सभास्थल पहुंचे, तब वहां लोगों का हुजूम देकर अटल जी आश्चर्यचकित हो गये थे। और मुझे देखकर मंद-मंद मुस्कान के साथ बोले - सच मैं भयंकर भीड़ है। इसके बाद उन्होंने अपना भाषण दिया। वह कार्यक्रम बेहद सफल रहा। अटल जी को सुनकर, उनके व्यक्तित्व को देखकर हर कोई प्रभावित हुआ। इसके बाद अटल जी वहां से रवाना हो गये। यह पल हम सबके साथ ही कवर्धा के लिए भी एक बड़ी उपलब्धि थी।

सच में अटल जी के साथ मुझे जितने भी समय रहने का मौका मिला, मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। हर बड़े निर्णय से पहले उनसे चर्चा की। उनका मेरे प्रति असीम स्नेह था। वे हमेशा मुझे छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिए, लोगों का जीवन बदलने के लिए प्रेरित करते रहे। वो आज भी मुझे रास्ता दिखा रहे हैं। अटल जी असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उनका विराट व्यक्तित्व था। वो तो चलती फिरती पाठशाला थे। और मैं सौभाग्यशाली हूं कि उस पाठशाला का हिस्सा होने का मुझे अवसर मिला। अटल जी अमर हैं, अटल जी अनंत हैं, अटल जी विशाल है, अटल जी विराट हैं। आज भी जब भी मन उदास होता है, तब अटल जी की यह पक्तियां मेरे अंदर अदृश्य ऊर्जा संचारित कर देती हैं।

**जब हम अटल जी को लेकर सभास्थल पहुंचे, तब वहां लोगों का हुजूम देकर अटल जी आश्चर्यचकित हो गये थे। और मुझे देखकर मंद-मंद मुस्कान के साथ बोले - सच मैं भयंकर भीड़ है। इसके बाद उन्होंने अपना भाषण दिया। वह कार्यक्रम बेहद सफल रहा। अटल जी को सुनकर, उनके व्यक्तित्व को देखकर हर कोई प्रभावित हुआ।**

*बाधाएं आती हैं आएं*
*घिरें प्रलय की घोर घटाएं,*
*पावों के नीचे अंगारे,*
*सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं,*
*निज हाथों में हंसते-हंसते,*
*आग लगाकर जलना होगा।*
*कदम मिलाकर चलना होगा।* •

# सर्वदलीय मान्यता के एकदलीय नेता अटलजी

-प्रभात झा

नीति, सिद्धांत, विचार एवं व्यवहार की सर्वोच्च चोटी पर रहते हुए सदैव जमीन से जुड़े रहनेवाले अटलजी से जिनका भी संबंध आया, वह राजनीति में कभी छोटे मन से काम नहीं करेगा। विपक्ष में रहते हुए देश के हर दल के राजनेताओं और कार्यकर्ताओं के मन में अपना विशिष्ट स्थान बना लेना, साथ ही उन दलों के कार्यकर्ताओं में यह भाव पैदा कर देना कि काश अटलजी हमारे दल के नेता होते – यह सामर्थ्य अटलजी में ही था।

विरोध में रहते हुए भी वे सदैव सत्ता पक्ष के नेताओं से भी देश में अधिक लोकप्रिय रहे। अपने अखंड प्रवास, वक्तृत्व कला और राजनैतिक संघर्ष के साथ-साथ सड़क से लेकर संसद में सिंहगर्जना कर तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और उनके समकक्ष नेताओं के मन में भी अपना विशिष्ट स्थान बनानेवाले अटलजी सर्वदलीय मान्यता के एकदलीय नेता थे।

> **विरोध में रहते हुए भी वे सदैव सत्ता पक्ष के नेताओं से भी देश में अधिक लोकप्रिय रहे। अपने अखंड प्रवास, वक्तृत्व कला और राजनैतिक संघर्ष के साथ-साथ सड़क से लेकर संसद में सिंहगर्जना कर तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और उनके समकक्ष नेताओं के मन में भी अपना विशिष्ट स्थान बनानेवाले अटलजी सर्वदलीय मान्यता के एकदलीय नेता थे।**

हम सभी का सौभाग्य है कि अन्य लोगों से अधिक राजनैतिक, सामाजिक और पत्रकार के नाते और इससे भी अधिक ग्वालियर के नाते हमारा उन पर सर्वाधिकार था। ग्वालियर अटलजी की जन्मस्थली और प्रारंभ में कर्मस्थली रही। महाराज बाड़े स्थित गोरखी स्कूल और तत्कालीन विक्टोरिया कॉलेज, जो वर्तमान में महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय है, आज अटलजी की यादों से जुड़ा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय में पढ़ चुके और पढ़ रहे छात्र गर्व से कहते है कि हम उस कॉलेज से पासआउट हैं, जहां अटलजी पढ़ा करते थे।

एक समय पर अटलजी स्वदेश के संपादक भी रहे। उनका स्वदेश से वैचारिक लगाव रहा। हम सभी स्वदेश में रहे, अतः हम लोगों से उन्हें और भी स्नेह था। ग्वालियर की गलियों को अटलजी ने साईकिल से नापा हुआ था। ग्वालियर की हर गली, हर चौराहे और हर मोहल्ले के नाम उनकी जुबां पर होते थे। हम लोगों से लगाव होने का कारण एक और था कि अटलजी के भांजे अनूप मिश्रा और उनके भतीजे दीपक वाजपेयी भी साथ-साथ एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। अटलजी एक तो बहुत सहज सरल थे, साथ ही सुरक्षा के नाम पर आज जिस तरह का वातावरण है, वैसा उस समय नेताओं के साथ नहीं था। अटलजी ट्रेन से दिल्ली से ग्वालियर आते थे। सुरक्षा के नाम पर श्री शिवकुमार पारीक उनके साथ ही रहा करते थे। शिवकुमारजी अटलजी के अनुज भांति ही थे। अटलजी मूल में इतने बड़े नेता होते हुए भी पार्टी के भीतर एक कार्यकर्ता के रूप में ही थे।

सन् 1996 की बात है। मध्यप्रदेश में भाजपा सांसदों, विधायकों और पार्टी पदाधिकारियों का प्रशिक्षण वर्ग लगा था। बतौर प्रतिपक्ष के नेता के रूप में वे भोपाल स्थित भाजपा के प्रांतीय कार्यालय दीनदयाल परिसर के हॉल में आए। प्रशिक्षण वर्ग में उनका उद्बोधन हुआ। उस उद्बोधन के प्रमुखांश मैं यहां उद्धृत कर रहा हूं।

अटलजी ने उद्बोधन के प्रारम्भ में कहा-

'कार्यकर्ता मित्रो',

मेरे इस संबोधन पर आश्चर्य न करें। मैं जानता हूं कि इस प्रशिक्षण वर्ग में पार्टी के प्रमुख नेता उपस्थित हैं। सांसदगण भी विराजमान हैं। सभी विधायक भाई तथा बहनें भी वर्ग में भाग ले रही हैं। मैंने जानबूझकर कार्यकर्ता के नाते सबको संबोधित किया। हम यह दावा करते हैं कि हमारी पार्टी कार्यकर्ताओं की पार्टी है। जो नेता हैं वह भी कार्यकर्ता हैं। विशेष जिम्मेदारी दिए जाने के कारण

वह नेता के रूप में जाने जाते हैं, लेकिन उनका आधार है उनका कार्यकर्ता होना। जो आज विधायक हैं, वह कल शायद विधायक नहीं रहें। सांसद भी सदैव नहीं रहेंगे। कुछ लोगों को पार्टी बदल देती है, कुछ को लोग बदल देते हैं, लेकिन कार्यकर्ता का पद ऐसा है, जो बदला नहीं जा सकता। कार्यकर्ता होने का हमारा अधिकार छीना नहीं जा सकता। कारण यह है कि हमारा यह अधिकार अर्जित किया हुआ अधिकार है, निष्ठा और परिश्रम से हम उसे प्राप्त कर सकते हैं, वह ऊपर से दिया गया सम्मान नहीं है कि उसे वापिस लिया जा सके।'

इस ऐतिहासिक प्रशिक्षण वर्ग में भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सह सरकार्यवाह और भाजपा के पालक सुदर्शनजी, भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) कुशाभाऊ ठाकरे भी मौजूद थे। भाजपा के हो रहे विस्तार में मूल प्राण 'कार्यकर्ता' हैं। यही बात संगठनात्मक बैठकों में आज भी देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहा करते हैं। उनका भी कहना है कि हम चाहे जितने बड़े नेता हों, पर हमें मूल में कार्यकर्ता भाव से सदैव जुड़े रहना चाहिए। कार्यकर्ता भाव ही नए कार्यकर्ता को अपने दल से जोड़ता है।

अटलजी ने आगे कहा, ''जब जनसंघ का निर्माण हुआ तो विश्व साम्यवाद और पूंजीवाद में बंटा हुआ था। भारतीय चिन्तन ने दोनों को अस्वीकार किया था। हम राज्यशक्ति और आर्थिकशक्ति का एकत्रीकरण नहीं चाहते, न कुछ व्यक्तियों के हाथों में और न राज्य के ही हाथों में, हम विकेन्द्रित व्यवस्था के हामी हैं। साम्यवाद शोषण से मुक्ति और राज्य के तिरोहित होने की बात करता है किन्तु व्यवहार में वह केन्द्रीकरण का पुरस्कर्ता बनकर खड़ा हो जाता है। पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों की विफलता सुनिश्चित जानकर दीनदयाल उपाध्यायजी ने एकात्म मानववाद का प्रतिपादन किया, जिसमें पूंजीवाद की तरह न तो समस्याओं को टुकड़ों में देखा जाता है और न व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा उसके पुरुषार्थ पर पानी फेरकर एक अधिनायकवादी व्यवस्था का ही प्रतिपादन किया जाता है।'

**भाजपा के हो रहे विस्तार में मूल प्राण 'कार्यकर्ता' हैं। यही बात संगठनात्मक बैठकों में आज भी देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहा करते हैं। उनका भी कहना है कि हम चाहे जितने बड़े नेता हों, पर हमें मूल में कार्यकर्ता भाव से सदैव जुड़े रहना चाहिए। कार्यकर्ता भाव ही नए कार्यकर्ता को अपने दल से जोड़ता है।**

अटलजी कहा करते थे, ''पश्चिमी सभ्यता एक नये संकट में फंस रही है। नये आर्थिक सुधारों के बाद हम भी उसी गलत दिशा में जा रहे हैं। बाजारी अर्थव्यवस्था के मूल में कोई गहरा जीवन-दर्शन नहीं हो सकता। प्रगति के लिये प्रतियोगिता होनी चाहिए। प्रतियोगिता से प्रगति होती है। दौड़ होने पर सबसे आगे निकलने का आकर्षण होता है। तेज दौड़ने की प्रेरणा होती है, जिसमें प्रतियोगिता किस हद तक हो, इसका विचार जरूरी है। कला घटानेवाली प्रतिस्पर्धा सब का निर्माण नहीं कर सकती। साथ-साथ दौड़ने के बजाय यदि एक-दूसरे को टंगड़ी लगाकर गिराने का खेल शुरू हो जाये तो न दौड़ होगी और न प्रगति। केवल धन कमाना ही जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। जीवन के लिये अर्थ जरूरी है, किन्तु अर्थ के संबंध में और भी बातें आवश्यक हैं। उपाध्याय जी कहा करते थे कि पेट भरने मात्र से समस्याएं समाप्त नहीं होतीं। सचमुच में कुछ समस्याओं का जन्म पेट भरने के बाद ही होता है।' अटलजी का प्रशिक्षण वर्ग में दिया गया उद्बोधन और उनका एक-एक वाक्य हमारे लिये आज भी प्रेरणादायक है। देश के जन-जन के मन में अपनी ओज और तेजपूर्ण वाणी से एक अप्रतिम स्थान बनानेवाले भारतरत्न और तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्य स्मृति को शत-शत नमन। •

**-लेखक भाजपा के राष्ट्रीय मुखपत्र कमल सन्देश के संपादक एवं पूर्व सांसद हैं.**

# शून्य से शिखर तक के अनथक यात्री अटलजी

-धरमलाल कौशिक

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती अवसर पर उनके श्रीचरणों को सादर नमन करता हूं। आज अटल जी की जयंती के अवसर पर अपने अब तक के जीवन का श्रेष्ठ चिरस्मरणीय संस्मरण साझा करने की मेरी भावना है। दरअसल अटलजी का व्यक्तित्व इतना विराट और व्यापक है कि उनके जीवन के किसी भी एक पक्ष को पूर्णरूप से रख पाना असंभव है। इसलिए मेरे हृदय में यह भाव आया कि मैं अपने जीवन में अटल जी के साथ जो अपनत्व अनुभव किया वह वही अभिव्यक्त करूं। वैसे श्रद्धेय अटल जी की विशालता और मेरी लघुता के मध्य संवाद और सानिध्य का अत्यंत अल्प अवसर ही मुझे प्राप्त हो सका, बावजूद इसके उस अल्प अवसर को ही मैं अपने जीवन का अविस्मरणीय पल मानता हूं। प्रधानमंत्री के तौर पर जब अटल जी का छत्तीसगढ़ प्रवास हुआ उस समय मैं एक नवोदित विधायक था। वे बिलासपुर रेलवे जोन के शुभारंभ और एन.टी.पी.सी. सीपत के कार्यक्रम में पधारे। उनके आगमन की व्यवस्थाओं से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों से मुझे संलग्न रहने का अवसर प्राप्त हुआ।

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझे स्वर्गीय अटल जी का प्रत्यक्ष सानिध्य प्राप्त हुआ। मैं उनसे प्रधानमंत्री बनने के पूर्व और पश्चात् दोनों ही स्थितियों में मिला और मैंने यह अनुभव किया कि उनका व्यक्तित्व पद से ऊपर था। जब वे प्रधानमंत्री नहीं बने थे, तब उनमें जो सरलता थी, सहजता थी, वही सहजता, सरलता जब वे प्रधानमंत्री बने तब भी उनमें विद्यमान थी। मुझे अच्छी तरह से स्मरण है, जब माननीय वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे तो मैं अपने छत्तीसगढ़ के साथियों के साथ प्रधानमंत्री निवास में उनसे मिला तो मुझे और मेरे साथियों को बीही(अमरुद) का जूस पिलाया गया। अटल जी ने मुझसे कहा कि आप जूस क्यों नहीं पी रहे हैं? सच्चाई तो यह थी कि मैं पहली बार बीही(जाम) का जूस बनता है यह जाना था। और दूसरी महत्वपूर्ण बात कि मेरी आंखें अटल जी को अपने सामने पाकर स्थिर सी हो गयी थी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं क्या करूं और क्या न करूं! बस एक टक लगाये मैं अटल जी के चेहरे की ओर निहार रहा था। उस दिन उस पल को मैं अपने जीवन का श्रेष्ठ दिन मानता हूं। उस दिन उनका आतिथ्य सत्कार और अपनत्व देखकर मैं अभिभूत हो गया। आज भी उन क्षणों को स्मरण करने से मेरे हृदय में एक ऊर्जा का संचार हो जाता है।

> **मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझे स्वर्गीय अटल जी का प्रत्यक्ष सानिध्य प्राप्त हुआ। मैं उनसे प्रधानमंत्री बनने के पूर्व और पश्चात् दोनों ही स्थितियों में मिला और मैंने यह अनुभव किया कि उनका व्यक्तित्व पद से ऊपर था।**

हम सभी जानते हैं कि श्रद्धेय अटल जी जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य रहे। उन्होंने अपने अपार परिश्रम कुशल नेतृत्व द्वारा भारतीय जनता पार्टी को शून्य से शिखर तक पहुंचाया। अटलजी का व्यक्तित्व इतना विराट था कि पद और सम्मान उनसे जुड़कर गौरवान्वित होते थे। स्व. पूज्य श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का संपूर्ण जीवन और उनके जीवन का प्रत्येक पृष्ठ विशिष्टताओं से परिपूर्ण रहा उनके विषय में किसी एक पक्ष को भी पूर्ण रूप से रख पाना असंभव है। स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी की महानता, विद्वता, शिष्टता, सरलता और सौम्यता को शब्दों में समेट पाना संभव नहीं है।

यह सत्य है कि अटलजी का जाना मूलतः एक युग का अवसान है, परंतु उनके विचार तत्कालीन दौर में जितने प्रासंगिक थे उतने प्रासंगिक आज भी हैं। निश्चित ही वे भविष्य में भी प्रासंगिक बने रहेंगे। उन्होंने जो अखण्ड राष्ट्र, सशक्त राष्ट्र का बीज बोया था वह आज बरगद बन गया है और हम उसकी छाया में सुरक्षित है। श्रद्धेय स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता रहे उन्हीं के प्रयासों से छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ। हम छत्तीसगढ़वासियों के लिये अटल जी

# अटल स्मृतियां

97वीं जयंती पर विशेष

पितृपुरूष हैं। मान. अटल बिहारी वाजपेयी जी छत्तीसगढ़ निर्माण के पूर्व अनेक अवसरों पर छत्तीसगढ़ क्षेत्र का प्रवास किया करते थे। रायगढ़, सरगुजा, बस्तर, रायपुर और बिलासपुर क्षेत्रों के सुदूर ग्रामीण अंचलों तक अटल जी का प्रवास होता था।

छत्तीसगढ़ राज्य से उन्हें विशेष लगाव था छत्तीसगढ़ राज्य के प्रति अपने इसी भावनात्मक लगाव की वजह से वर्ष 1998-99 में उनका रायपुर आगमन हुआ था और सप्रे शाला मैदान में विशाल आमसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने आयोजित सभा में कहा था - आप मुझे 11 सांसद दो मैं आपको छत्तीसगढ़ राज्य दूंगा। स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी मन, वचन और कर्म से एक निष्ठ थे अपने कहे गये वचनों की पूर्णता के प्रति उनकी वचनबद्धता का यह भी अप्रतिम उदाहरण है कि जब **मान. अटल जी प्रधानमंत्री बने और उनके कार्यकाल में वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ का निर्माण हुआ उस समय तत्कालीन स्थिति में वे यह जानते थे कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण होने से नवोदित राज्य में कांग्रेस की सरकार ही बनेगी किन्तु अपने राजनैतिक हित को दरकिनार कर छत्तीसगढ़ राज्य के लोगों को दिये गये वचन की पूर्णता के लिये उन्होंने नये राज्य निर्माण के निर्णय पर मुहर लगाई।** भारतीय जनता पार्टी जब अपने शैशवकाल से गुजर रही थी तब भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की हैसियत से आदरणीय अटल जी का रायपुर आगमन हुआ था। स्व.कुशाभाऊ ठाकरे के साथ स्टेशन रोड स्थित सत्यनारायण धर्मशाला में कार्यकर्ताओं के साथ बैठक में सम्मिलित हुए थे।

छत्तीसगढ़ के स्वप्नदृष्टा स्व. मान. अटल जी ने वर्ष 1990 से पहले ही तय कर लिया था कि जिस समय केन्द्र में उनकी सरकार बनेगी उस समय वे छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण अवश्य करेंगे। विशेषकर उन्हें छत्तीसगढ़ के आदिवासियों, यहां की वन संपदा यहां की संस्कृति से उनकी आत्मीय निकटता थी। वर्ष 1986-87 में आदरणीय अटल जी ने बस्तर प्रवास किया था। जब वे प्रधानमंत्री बने तब छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के संबंध में सर्वदलीय बैठक हुई जिसमें तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री मान. रमेश बैस, डॉ.रमन सिंह, तत्कालीन सांसद मान. चन्द्रशेखर साहू, मान. श्री बलीराम कश्यप, मान. श्री लखीराम अग्रवाल आदि शामिल हुए।

छत्तीसगढ़ राज्य के प्रति मान.श्री अटल जी का सहज स्नेह का एक उदाहरण यह भी है कि उन्होंने अपने कार्यकाल में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना जैसी महत्वाकांक्षी योजना आरंभ की। इस योजना के तहत 500 आबादी वाले ग्रामों को मुख्य मार्ग से जोड़ने का प्रावधान किया गया था परंतु बस्तर क्षेत्र के लिये इस मापदंड को शिथिल करते हुए ढाई सौ आबादी वाले ग्रामों को मुख्य मार्ग से जोड़ने का निर्देश दिया जिससे कि बस्तर क्षेत्र के आवागमन सुविधा का विस्तार हुआ।

> श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री रहते हुए चार बड़े कार्यक्रमों में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से अनुग्रहित किया। वर्ष 1998-99 में माना एयरपोर्ट के नये भवन का उद्घाटन किया।

मान. **श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री रहते हुए चार बड़े कार्यक्रमों में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से अनुग्रहित किया। वर्ष 1998-99 में माना एयरपोर्ट के नये भवन का उद्घाटन किया। वर्ष 2001-02 में बिलासपुर में आयोजित किसान रैली को संबोधित करने हेतु प्रवास हुआ। वर्ष 2002 में रायपुर में राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक हुई जिसमें अटलजी दो दिन छत्तीसगढ़ में रूके। इस बैठक में देश के वर्तमान प्रधानमंत्री मान. श्री नरेन्द्र मोदी जी भी शामिल हुए थे। इसके बाद वर्ष 2004 में लोकसभा चुनाव के पहले रायपुर सप्रे मैदान में एक बड़ी आमसभा को मान. अटल जी ने संबोधित किया था।**

स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने वर्ष 2004 में छत्तीसगढ़ राज्य में तीन विश्वविद्यालयों की नींव रखी थी कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर, विवेकानंद तकनीक विश्वविद्यालय दुर्ग, और पं.सुंदर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय रायपुर शामिल है।

जन्म से मृत्यु तक का सफर ही जीवन की परिभाषा है। इसलिए जीव जगत में जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु भी सुनिश्चित है। अटल जी भी जीवन के इस शाश्वत सत्य को स्वीकार कर अपनी भौतिक देह त्यागकर ब्रम्हलीन हुए। जब स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी का निधन हुआ तो अंतिम दर्शन के लिए मैं छत्तीसगढ़ के अपने साथियों के साथ दिल्ली पहुंचा। उनकी अंतिम यात्रा में अपार भीड़ के साथ हम सभी पैदल चलते रहे। उनकी अंतिम इच्छा के अनुरूप देश की सभी नदियों में उनकी अस्थियां विसर्जित की गयी। उनके अस्थि कलश को हमारे छत्तीसगढ़ के प्रदेश कार्यालय में लाया गया। उस दिन भी मैंने यह सार्वजनिक रूप से कहा था कि 'अटल जी की अस्थि का यह कलश वास्तव में हमारे लिए आस्था का कलश है।' यहां राजिम त्रिवेणी में उनकी अस्थियां विसर्जित की गयी। वास्तव में अटल जी अमर हैं, हम करोड़ों भारतवासियों के हृदय में वो सदियों सदियों तक जीवित रहेंगे। स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके द्वारा स्थापित मूल्यों और सिद्धांतों को आत्मसात कर उसे व्यवहारिक स्वरूप देने का प्रयास करें। यही हमारी देश सेवा होगी यह कथन अटल जी की तरह सत्य और अटल है। •

**-लेखक छत्तीसगढ़ विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं।**

# सनातन चिंतन के ध्वजवाहक अटलजी

-नन्दकुमार साय

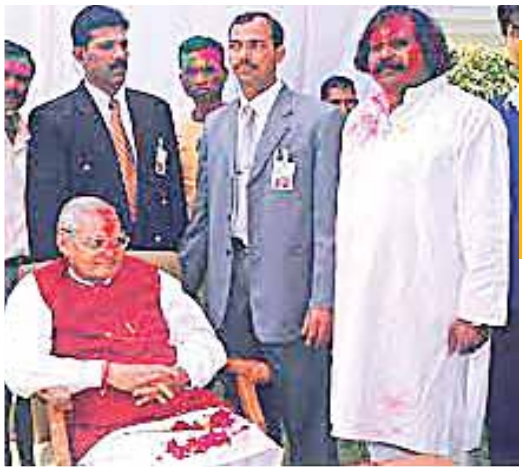

श्रद्धेय स्व. अटलबिहारी जी वाजपेयी देश के ऐसे राजनेता थे, जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व देश के अन्य सभी नेताओं से सबसे भिन्न था। वे एक ऐसे जननेता और राजनीतिज्ञ थे, जिनकी राजनीति जनकल्याण, ग़रीबों की चिंता और अंतिम पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के उत्थान के लिए थी। अटलजी चाहते थे कि जनसामान्य में आर्थिक विषमता जल्द ख़त्म होनी चाहिए और देश के करोड़ों-करोड़ लोगों का आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अभ्युदय होना चाहिए। अनेक बार देश के अनेक क्षेत्रों में उनके साथ प्रवास के दौरान मैंने अनुभव किया कि उनमें देश के पिछड़े, लोगों के उत्थान की चिंता रहती थी। श्रद्धेय स्व. पं. दीनदयाल जी उपाध्याय के एकात्म मानववाद के चिंतन व दर्शन को अटलजी ज़मीन पर उतारना चाहते थे। एकात्म मानववाद अर्थात् समाज और भूगोल में ज़मीन पर अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति की स्थिति समाज के अभ्युदय का मानदंड होनी चाहिए और उस व्यक्ति की स्थिति के आधार पर ही समाज की दशा का अनुमान होना चाहिए। अटवजी एकात्म मानववाद के इसी दर्शन को धरातल पर साकार करने के लिए प्रयासरत रहे।

एक समय ऐसा था जब भारतीय जनसंघ, और बाद में भारतीय जनता पार्टी विपक्ष में थे, तब किसी को यह लगता ही नहीं था कि हम कभी सरकार बना सकेंगे। सन् 1984 की पराजय के बाद जब लोकसभा में पार्टी के सिर्फ़ दो ही संसद सदस्य थे, तब 'हम दो, हमारे दो' कहकर पार्टी का मज़ाक उड़ाया जाता था, लेकिन अटलजी उस समय भी अडिग और आत्मविश्वास से भरपूर थे। मैं भी कई बार पार्टी की ओर से संसद सदस्य रहा हूँ। महाकवि अटलजी तब कहा करते थे, ठीक है जीतने में समय लगेगा, पर हम कभी हारेंगे नहीं और जीतने के लिए लड़ेंगे। हम जीतना चाहते हैं, सत्तारूढ़ होना चाहते हैं लेकिन देश, समाज और प्रत्येक व्यक्ति की दशा में सुधार लाने के लिए।

**जब भारतीय जनसंघ, और बाद में भारतीय जनता पार्टी विपक्ष में थे, तब किसी को यह लगता ही नहीं था कि हम कभी सरकार बना सकेंगे। सन् 1984 की पराजय के बाद जब लोकसभा में पार्टी के सिर्फ़ दो ही संसद सदस्य थे, तब 'हम दो, हमारे दो' कहकर पार्टी का मज़ाक उड़ाया जाता था, लेकिन अटलजी उस समय भी अडिग और आत्मविश्वास से भरपूर थे।**

अटलजी पूरे देश के सभी हिस्से एक संगठित समाज खड़ा करना चाहते थे। इसके लिए उन्हें समय कम मिला लेकिन इस कम अवधि में भी उन्होंने प्रधानमंत्री सड़क योजना से पूरे देश को, गांवों और शहरों को जोड़ने का काम किया, अकाल के समय उनकी पहल पर ही 'काम के बदले अनाज योजना' धरातल पर उतरी। अटलजी रामराज्य की परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध थे। वे प्रायः भवभूति के उत्तर चरितम् का एक श्लोक सुनाया करते थे-

*स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि*
*आराधनाय लोकस्य मुन्चतो नास्ति मे व्यथा।*

राजा केवल जनता के लिए ही होता है। प्रजानुरंजन ही राजा के जीवन का एकमात्र ध्येय होता है। प्रजा की आराधना के लिए मुझे अपने स्नेह, दया, सुख और यहां तक कि जानकी का भी त्याग करना पड़े मुझे व्यथा नहीं होगी। अटलजी लोकतंत्र की इस अवधारणा को आत्मसात् करके चलते थे। अटलजी बहुत कम समय सत्ता में रहे, पर राष्ट्र को ऊंचा उठाने के उनके प्रयास अतुलनीय रहे हैं। अटलजी राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रबल स्वप्नदृष्टा थे। पाकिस्तान आज भी कहता है कि कश्मीर के बिना पाकिस्तान अधूरा है, पर अटलजी मानते थे कि पाकिस्तान के बिना हिन्दुस्थान अधूरा है। वे अखंड भारत देखना चाहते थे उसे जागृत करना उनका लक्ष्य था और भारतीय ऐक्य के लिए वे सदैव प्रयत्नरत रहे। उनकी एक कालजयी रचना है-

*जगा दो भारत को भगवान!*
*बिहार जागे, उत्कल जागे, जागे बंग महान*
*कर्नाटक, गुजरात, मराठा, सिंध, बलूचिस्तान*
*जगा दो भारत को भगवान!*

*काश्मीर, पंजाब, अवध, बृज, प्रिय नेपाल, भूटान*
*महाकोशल, मालव उठ बैठे, गरजे राजस्थान*
*जगा दो भारत को भगवान!*

अखंड भारत के अद्वितीय स्वप्नदृष्टा अटलजी भारत के अखंड रूप को फिर से प्रतिष्ठित करना चाहते थे और उसके लिए जन-मन को जागृत करते थे। अटलजी एक बार रायगढ़ (छत्तीसगढ़) के प्रवास पर थे। वहां भाजपा की रैली और रामलीला मैदान में उनकी सभा थी। खरसिया विधानसभा के लिए वह ऐतिहासिक उपचुनाव होने जा रहा था जिसमें अविभाजित मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह (कांग्रेस) के विरुद्ध भाजपा से कुंवर दिलीपसिंह जूदेव मैदान में थे। अपना इलाज कराके लौटे अटलजी अपने वरिष्ठ कार्यकर्ता रामचरण जी सोनी के निवास पर चाय-अल्पाहार कर रहे थे। अचानक वे सर्वश्री सुंदरलालजी पटवा, कैलाशजी जोशी, लक्ष्मीनारायण पांडेजी, गोविंद सारंग जी आदि के साथ रैली देखने रायगढ़ के हण्डी चौक पर पहुंच गए। भाजपा के पितृ-पुरुष कुशाभाऊ ठाकरे जी रैली, सभा की समूची व्यवस्था में लगे थे। रैली देखने के बाद अटलजी सीधे सभास्थल पर ही पहुंच गए। सभा का संचालन वरिष्ठ नेता लखीरामजी अग्रवाल कर रहे थे। एकाएक अटलजी के मंच पर पहुंचने से कार्यकर्ताओं व श्रोताओं में उत्साह का अतिरेक दिखाई देने लगा। सभा को शांत करने करने के लिए अटलजी ने ही किसी का भाषण कराने को कहा।

मैं तब भाजपा का विधायक था और लखीरामजी ने स्वागत भाषण के लिए मेरा नाम पुकार दिया। मां भारती के लाड़ले, मां शारदा के वरदपुत्र और उत्कृष्ट वक्ता अटलजी मंच पर थे और उनकी उपस्थिति में स्वागत भाषण करना मेरे लिए परीक्षा की घड़ी थी। पर मैंने बिना घबराहट के स्वागत भाषण दिया। सभास्थल शांत और व्यवस्थित हो गया। अटलजी काफी प्रसन्न थे। बाद में भाजपा नेता श्री विजय अग्रवाल जी के यहां भोजन के समय अटलजी ने मुझे अपने पास बुलाकर स्वागत भाषण के लिए मेरी पीठ ठोकी और वहां उपस्थित सभी नेताओं से कहा, इस युवा को आगे बढ़ाओ। अपने राजनीतिक जीवन के लिए इससे बड़ा कोई और प्रमाणपत्र मेरे लिए नहीं है। अटलजी निरंतर नए लोगों को आगे बढ़ाने में रुचि लेते थे।

**अटलजी देश के सनातन चिंतन के ध्वजवाहक थे। वे मानते थे कि हिन्दु कोई धर्म नहीं, अपितु एक जीवन शैली है और भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिन्दू है।**

अपने संक्षिप्त सत्ताकाल में अटलजी ने देश में सड़कों का जाल बिछाया, किसान क्रेडिट कार्ड शुरू कराया, स्वर्ण चतुर्भुज योजना की परिकल्पना को ज़मीन पर उतारकर देश को चारों दिशाओं से जोड़ने का काम शुरू किया। वे बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के 'वंदेमातरम्' में वर्णित भारत माता के दुर्गा-स्वरूप के उपासक थे। राजनीति में रहकर वे भारत के जिस स्वरूप की परिकल्पना करते थे, उसमें किसानों, ग़रीबों की चिंता ही वे करते थे। वे मानते थे कि प्रशासन आज आम आदमी के लिए नहीं रह गया है। सरकार और प्रशासन में आम आदमी के लिए प्रतिबद्धता कहां है? वे आदर्श प्रशासन की कल्पना भी देते और कहते थे कि आज कलेक्टरों या अन्य अधिकारियों से आम आदमी और राजनीतिक कार्यकर्ताओं का सीधा संवाद नहीं रह गया है जबकि होना यह चाहिए कि अधिकारियों

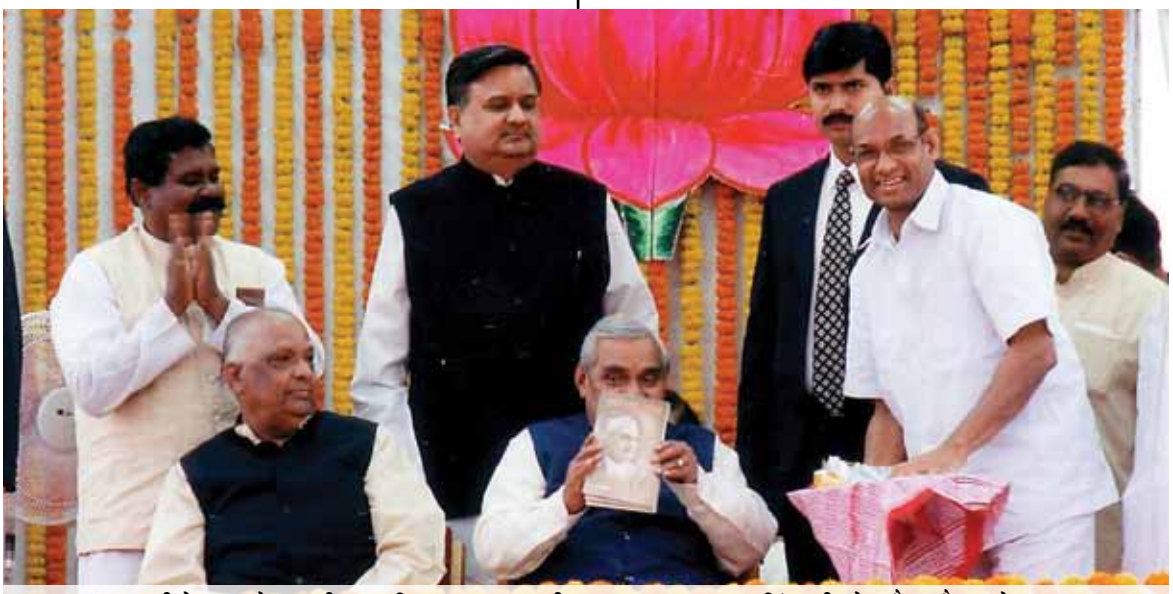

अटलजी के साथ लेखक श्री साय, पितृ पुरूष स्व. लखीराम अग्रवाल, डा. रमन सिंह, श्री रमेश बैस और अशोक बजाज।

**हमें हिन्दू कहलाने में गर्व महसूस करना चाहिए, हम भारतीय होने में भी आत्मगौरव महसूस करें।** -अटल बिहारी वाजपेयी

अटलजी के साथ डा. रमन सिंह एवं राजेश मूणत।

के कार्यालयों में पहुंचने वाले सभी लोगों के बैठने की समुचित व्यवस्था हो, छांह और शीतल जल उपलब्ध हो। अधिकारी स्वयं इन व्यवस्थाओं पर नज़र रखें और मिलने आए लोगों की बात सुनें, उनकी समस्याओं का समयबद्ध निराकरण करें, पारदर्शिता के साथ काम करें और किसी काम में आ रही क़ानूनी अड़चनों को दूर कर लोगों का सही मार्गदर्शन करें। जब ऐसा होगा, तब लोगों में अपनी सरकार होने का भाव विकसित होगा। अटलजी अद्वितीय राजनेता थे। जनता ही उनका आराध्य थी। उनकी सोच, प्रकृति, चिंतन अन्य सभी राजनेताओं से अप्रतिम था। संपूर्ण भारत के लिए, भारत माता की प्रतिष्ठा के लिए, जनसामान्य के लिए चिंतित रहने वाले अटलजी सबके उत्थान के सपने संजोते थे।

अटलजी देश के सनातन चिंतन के ध्वजवाहक थे। वे मानते थे कि हिन्दु कोई धर्म नहीं, अपितु एक जीवन शैली है और भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिन्दू है। भारतीयता और हिन्दुत्व उनके चिंतन के केंद्र में थे। वे इसे आत्मसात् करते थे और समय-समय पर अपने इस चिंतन को अभिव्यक्त करते थे। भारवर्ष का वर्णन करते हुए अटलजी कहते- 'हिमालय की अडिग तुंग श्रृंखला का नाम भारत है। चरणों को धोने वाले महासागर का नाम भारत है। प्रलय, घनगर्जन का नाम भारत है।' इस तरह भारत के गौरव और महिमा का वर्णन वे कवि होने के नाते विविध अवसरों पर विविध स्वरूप में करते थे। भारतमाता के वरदपुत्र अटलजी ने आजीवन भारत के वैभव को पूरे विश्व में फैलाया। वे कहते थे- भारत शांतिप्रिय देश है लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि हम अपने साथ होने वाले अन्याय का प्रतिकार नहीं करेंगे और हम पर होने वाले आक्रमण का जवाब नहीं देंगे। भारत की शांतिप्रियता उसकी कमज़ोरी नहीं है। हम किसी को छेड़ेंगे नहीं, पर कोई हमें छेड़ेगा तो हम उसे छोड़ेंगे भी नहीं। अटलजी के प्रधानमंत्रित्व काल में पोखरण के पांच परमाणु परीक्षण भारत के मनोबल की ऐसी ही सशक्त अभिव्यक्ति थे। अटलजी समृद्ध भारत, संस्कृतिसम्पन्न भारत, समस्त प्रकार की शक्तियों से युक्त भारत का सपना संजोए हुए थे। ऐसे राष्ट्रपुरुष अटलजी समग्रता में भारत के अभ्युदय का दृष्टिकोण दिया।

**अटलजी देश के सनातन चिंतन के ध्वजवाहक थे। वे मानते थे कि हिन्दु कोई धर्म नहीं, अपितु एक जीवन शैली है और भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिन्दू है। भारतीयता और हिन्दुत्व उनके चिंतन के केंद्र में थे। वे इसे आत्मसात् करते थे और समय-समय पर अपने इस चिंतन को अभिव्यक्त करते थे।**

वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अटलजी के संजोए हुए सपनों को पूरा करने के लिए अनेक क्रांतिकारी कार्य किए हैं। अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण का पथ श्री मोदी ने प्रशस्त किया, तीन तलाक़ पर क़ानून बनाकर, कश्मीर से धारा 370 और अनुच्छेद 35(ए) हटाकर उसे भारत के अविभाज्य अंग के रूप में प्रतिष्ठित कर, सीएए लागू कर देश को एक सूत्र में पिरोने के जो काम प्रधानमंत्री श्री मोदी ने आगे बढ़ाए हैं, वे अटलजी के चिंतन से ही प्रेरित हैं। अब देश में समान नागरिकता क़ानून बनते ही अटलजी का एक और सपना पूर्ण होगा। अटलजी के चिंतन से प्रेरणा लेकर हम आगे बढ़ेंगे तो शक्तिशाली, स्वाभिमानी, समृद्ध और अखंड भारत की एक नए रूप में प्रतिष्ठा हम कर सकेंगे, यह असंदिग्ध है। •

**श्री साय की अनिल पुरोहित से बातचीत पर आधारित.**

# राजनीति में सज्जनता एवं संवेदनशीलता के वाहक अटलजी

-डॉ. शिव शक्ति बक्सी

*हर चुनौती से दो हाथ मैंने किए,*
*आंधियों में जलाए हैं बुझते दिए।*

देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के उन शिखर पुरुषों में से एक हैं जिन्होंने इतिहास की धारा को मोड़ा। देश की राजनीति जब कांग्रेस के वर्चस्व के प्रभाव में थी तब वैकल्पिक राजनीति का 'दीपक' जलाने का प्रण लेने वाले प्रमुख राजनैतिक योद्धाओं में वे एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। जनसंघ काल से ही जम्मू-कश्मीर के पूर्ण एकीकरण से लेकर स्वदेशी, स्वावलंबन, शिक्षा का भारतीयकरण, चुनावों में सुधार आदि विषयों को प्रखरता से उठाते हुए देश पर जब आपातकाल थोपा गया, उस समय लोकतंत्र की रक्षा का संकल्प लेकर कारावास जाने वालों में वे अग्रणी थे। जनता पार्टी शासन के दौरान भारत के विदेश मंत्री के रूप में विदेश नीति के नए आयामों से उन्होंने देश का परिचय कराया तथा संयुक्त राष्ट्र में पहली बार हिंदी में दिया गया उनका भाषण हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ। राजनीति की 'रपटीली राहों' से गुजरते हुए वे सदैव 'अटल' रहे परिणामतः देश की जनता उन्हें देश की प्रधानमंत्री के रूप में देखने लगी। देश के पहले पूर्णतः गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री के रूप में तीन बार शपथ लेने वाले अटलजी ने देश को परमाणु शक्ति संपन्न तो किया ही, साथ ही कारगिल युद्ध में देश का नेतृत्व कर विजयश्री दिलाई। विकास एवं सुशासन के नए युग की शुरुआत करने का भी श्रेय अटलजी को जाता है।

जनता पार्टी शासन के दौरान भारत के विदेश मंत्री के रूप में विदेश नीति के नए आयामों से उन्होंने देश का परिचय कराया तथा संयुक्त राष्ट्र में पहली बार हिंदी में दिया गया उनका भाषण हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ। राजनीति की 'रपटीली राहों' से गुजरते हुए वे सदैव 'अटल' रहे परिणामतः देश की जनता उन्हें देश की प्रधानमंत्री के रूप में देखने लगी।

**वैचारिक कवि**

देश के राजनीतिक क्षितिज पर दीर्घकाल तक देदीप्यमान रहे अटल बिहारी वाजपेयी आजीवन भारतीय सभ्यता एवं सांस्कृतिक विरासत के वाहक बने रहे। इस तथ्य का प्रबलतम प्रमाण उनकी कविताएं हैं। वाजपेयीजी ने जीवन भर अपने कवि स्वरूप को नहीं छोड़ा। उनका कवि हृदय उन्हें नितांत राजनीतिक व्यक्तित्वों से पृथक करता है।

*''हिंदू तन मन,*
*हिंदू जीवन*
*रग-रग हिंदू मेरा परिचय।''*

यह कविता वाजपेयीजी ने तब लिखी थी, जब वे दसवीं कक्षा के छात्र थे। अर्थात् अपनी पहचान और विचारधारा के प्रति वे बाल्यकाल से स्पष्ट थे।

अटलजी की आत्मा कवि की थी और जीवन एक पत्रकार का। कहना न होगा- 1947 में मिली आजादी को वे अधूरी मानते रहे। 15 अगस्त 1947 के दिन वे कानपुर के डी.ए.वी. हॉस्टल में बेहद विचलित होकर बैठे थे। उन्होंने अखंड भारत की स्वाधीनता का स्वप्न देखा था, खंडित भारत की स्वाधीनता का नहीं। दो-दो सीमाओं पर चल रहे मर्मांतक भीषण नरसंहार ने उनके कवि हृदय को खरोंच डाला। मौन कवि ने कविता लिखी- 'स्वतंत्रता दिवस की पुकार'।

*''पंद्रह अगस्त का दिन कहता, आजादी अभी अधूरी है।*
*सपने सच होने बाकी हैं, रावी की शपथ न पूरी है।।*
*जिनकी लाशों पर पग धरकर, आजादी भारत में आई।*
*वे अब तक हैं खानाबदोश, गम की काली बदली छाई।।*
*कलकत्ते के फुटपाथों पर, जो आंधी-पानी सहते हैं।*
*उनसे पूछो, पंद्रह अगस्त के बारे में क्या कहते हैं।।''*

लेकिन अटलजी हार मान लेने वाले व्यक्तित्वों में से नहीं थे। उन्होंने आजन्म भारत विभाजन का विरोध किया और एक संपूर्ण संगठन को इस मनोदशा के लिए आंदोलित किया-

*''टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी*
*अंतस को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी*
*हार नहीं मानूंगा*
*रार नई ठानूंगा*
*काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूं*
*गीत नया गाता हूं।''*

साहित्येतिहास के दृष्टिकोण से देखा जाए तो अटलजी नवगीत के प्रणेता कवि हैं। इस तथ्य को जानने और समझने के बावजूद मार्क्सवादी आलोचकों ने उनके महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान की राजनीतिक दुर्भावना से प्रेरित होकर सदैव उपेक्षा की। इन

सबके बावजूद अटलजी ने साहित्यिक राजनीतिक दुरभिसंधियों को लगातार बेनकाब किया-

*''बेनकाब चेहरे हैं, दाग बड़े गहरे हैं*
*टूटता तिलस्म आज सच से भय खाता हूं*
*गीत नहीं गाता हूं।''*

**मूल्य एवं सिद्धांत की राजनीति के प्रवर्तक**

राजनीति के क्षेत्र में रहते हुए उन्होंने कभी सत्ता की आकांक्षा नहीं की, बल्कि वे निरंतर राष्ट्र सेवा की चुनौतियों को स्वीकार करते रहे। भारतीय जनता पार्टी के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित होने पर बंबई अधिवेशन 1980, में उन्होंने कहा था, 'भारतीय जनता पार्टी का अध्यक्ष पद अलंकार की वस्तु नहीं है। वस्तुतः यह पद नहीं दायित्व है; प्रतिष्ठा नहीं, परीक्षा है; अधिकार नहीं अवसर है; सत्कार नहीं, चुनौती है।' राजनैतिक क्षेत्र में समस्याओं के पीछे वे 'नैतिक संकट' को मानते थे। उनका मानना था, 'मूलतः हमारा संकट नैतिक संकट है। हमारे सार्वजनिक जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप यह है कि नैतिक मूल्यों का स्थान स्वार्थसिद्धि एवं स्वार्थसिद्धि के साधन के रूप में सत्ता प्राप्ति ने ले लिया है।' उनका मानना था कि नैतिकता का संकट समाज में दोहरे मानदंड स्थापित करता है, जिससे भाई-भतीजावाद को बढ़ावा मिलता है और राजनीति दूषित होती है। दोहरे मानदंड से उपजने वाली समस्या पर उनका कहना था-

''इस प्रकार की प्रक्रिया केवल शासक वर्ग तथा राजनीतिक दलों को प्रभावित करके नहीं जाती। वह समूचे समाज, नौकरशाही, उद्योगपतियों, व्यापारियों, यहां तक कि आम लोगों को भी अपने चंगुल में लपेट लेती है। स्वार्थसिद्धि तथा जैसे भी हो, अपना काम बना लेने की हवा चल पड़ती है। परिणामतः राष्ट्र की नैतिक शक्ति का ह्रास हो जाता है और राष्ट्र संकटों का सफलतापूर्वक सामना करने की क्षमता खो बैठता है।'

नैतिक मूल्यों के संकट के समाधान के रूप में उन्होंने सिद्धांत आधारित राजनीति की कल्पना की थी। उनका मानना था-

''हम जनता को तभी संगठित कर सकेंगे, हमारी बात वह तभी सुनेगी, जब हम उसके मन में अपनी विश्वसनीयता स्थापित कर सकें, उसे हम यह विश्वास दिला सकें कि हमारा उद्देश्य केवल स्वार्थसिद्धि और सत्ता हथियाना नहीं है, हमारी राजनीति कुल मूल्यों, कुछ सिद्धांतों पर आधारित है।''

**अटलजी ने भारतीय राजनीति में एक अनुपम विरासत छोड़ी है। वे दरअसल वास्तविक भारत और इसके लोकतांत्रिक परंपरा जिससे राष्ट्र की सांस्कृतिक-सामाजिक आधार की रचना हुई है, उसके सच्चे साधक थे।**

**भारतीय राजनीति में अनुपम विरासत**

अटलजी ने भारतीय राजनीति में एक अनुपम विरासत छोड़ी है। वे दरअसल वास्तविक भारत और इसके लोकतांत्रिक परंपरा जिससे राष्ट्र की सांस्कृतिक-सामाजिक आधार की रचना हुई है, उसके सच्चे साधक थे। जहां एक ओर वे राजनीतिक दल एवं उसके बाहर तथा शासन व सरकार की लोकतांत्रिक कार्यपद्धति पर विश्वास रखते थे, वहीं दूसरी ओर जब देश पर आपातकाल थोपा गया तब इसका मुखर विरोध करने वालों में वे अग्रणी रहे। लोकतंत्र उनकी राष्ट्रभक्ति की आत्मा रही, क्योंकि प्राचीन काल से भारतीय परंपराओं की विविधता का सामंजस्य लोकतांत्रिक भावना से ही बिठाया गया। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विषयों पर भी वे लोकतांत्रिक समाधान के ही

सदैव पक्षधर रहे। अपने लंबे संसदीय जीवन में विपक्ष में रहते हुए भी उन्होंने देश के संसदीय इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। यह उनका भारतीय समस्याओं पर गहरा दृष्टिकोण ही था जिस कारण वे भारतीय मूल्यों एवं विचारों के आधार पर उनका समाधान ढूंढने में हमेशा सफल रहे। जमीनी सच्चाइयों से जुड़े होने के कारण उनके दृष्टिकोण का सम्मान उनके राजनैतिक विरोधी भी करते थे। पूरे देश का उन पर इतना विश्वास था कि संकट के समय दूसरे राजनैतिक दलों के भी लोग उनसे परामर्श लेते थे। मां भारती के एक सच्चे सपूत की तरह अपने पूरे राजनैतिक जीवन में उन्होंने कई बार दलगत राजनीति से ऊपर उठकर निर्णय लिये एवं दल के हित से ऊपर राष्ट्रहित को रखा। जब देश पर आपातकाल थोपा गया, राष्ट्रहित में जनसंघ का विलय जनता पार्टी में कर दिया गया। सिद्धांतनिष्ठ एवं विचारधारा पर वे हमेशा अडिग रहे और इन पर किसी भी प्रकार के समझौता से इनकार करते हुए जनता पार्टी से निकल कर अपने सहयोगियों के साथ भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। सिद्धांतनिष्ठ एवं मूल्य आधारित राजनीति पर उनका अटूट विश्वास था।

भारतीय राजनीति के वे ऐसे शिखर पुरुष थे जिनके जादुई शब्द जन-जन को प्रेरणा से भर देते थे। लोग उन्हें देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते थे और यह स्वप्न उनके प्रति निरंतर बढ़ते जन समर्थन से संभव भी हुआ। अटलजी के नेतृत्व में देश ने हर क्षेत्र में अपना झण्डा बुलन्द किया। भारत एक शांतिप्रिय परमाणु शक्ति के रूप में उभरा तथा अंतरराष्ट्रीय दबावों में भी नहीं झुका। 'अटल' नाम के अनुरूप वे दबावों में नहीं झुके और वैश्विक स्तर पर चुनौतियों को भारत के आंतरिक शक्ति प्रगट करने का अवसर बना दिया। उन्होंने सुशासन एवं विकास की ऐसी गंगोत्री बहा दी, जिससे देश में आधारभूत संरचनाओं में अभूतपूर्व विकास हुआ और अनेक क्षेत्रों में भारत स्वावलंबी बना। उन्होंने अपने एक भाषण में ठीक ही कहा था कि काल के कपाल पर उन्होंने अमिट रेखाएं खींच दी हैं। उनके द्वारा दिखाया गया प्रकाश आज के उभरते 'न्यू इंडिया' का पथ-प्रदर्शक बन गया है।

जब देश पर आपातकाल थोपा गया, राष्ट्रहित में जनसंघ का विलय जनता पार्टी में कर दिया गया। सिद्धांतनिष्ठ एवं विचारधारा पर वे हमेशा अडिग रहे और इन पर किसी भी प्रकार के समझौता से इनकार करते हुए जनता पार्टी से निकल कर अपने सहयोगियों के साथ भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। सिद्धांतनिष्ठ एवं मूल्य आधारित राजनीति पर उनका अटूट विश्वास था।

अटलजी ने पीढ़ी दर पीढ़ी जन-जन को देशभक्ति एवं देशप्रेम से ओतप्रोत हो राष्ट्रजीवन में योगदान के लिये प्रेरित किया। एक राजनैतिक आंदोलन जो देश की राजनीति में एक विकल्प देने के लिये आया, अटलजी, पहले गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री, जिन्होंने अपना कार्यकाल भी पूरा किया, ने एक नया इतिहास रच दिया। यह एक ऐसा इतिहास था जिसमें उनकी अग्रणी भूमिका थी और जिसकी विरासत को आज करोड़ों लोग नमन कर रहे हैं। एक दूरद्रष्टा, लोकतंत्र में आस्था रखने वाले, आम सहमति की राजनीति में विश्वास करने वाले अटलजी राजनीति में सज्जनता एवं संवेदनशीलता के वाहक थे।

वे कवि थे, वे पत्रकार थे, वे राजनेता थे, वे विचारक थे, वे अद्भुत संभाषक थे; और इन सभी व्यक्तित्वों के संग-साथ वे अपने जीवन को देश-प्रेम के लिए होम कर देने को आतुर महान देशभक्त थे। उनकी पुनीत स्मृति को बारंबार प्रणाम। •

**– लेखक भाजपा प्रकाशन विभाग के राष्ट्रीय संयोजक हैं।**

साक्षात्कार

# चाणक्य की नीति और विवेकानंद की ओजस्विता से परिपूर्ण था अटलजी का जीवन

-संजीव कुमार सिन्हा

स्व.अटल बिहारी वाजपेयी के साथ 50 साल तक छाया की तरह रहने वाले **श्री शिव कुमार शर्मा** उनकी अंतिम सांस तक सेवा में जुटे रहे। सर्वोच्च न्यायालय में अधिवक्ता रहे श्री शर्मा 1969 से उनके सहयोगी थे। पिछले दिनों नई दिल्ली स्थित उनके आवास पर कमल संदेश के सहायक संपादक **संजीव कुमार सिन्हा** ने उनसे अटलजी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, संगठनात्मक दायित्वों, प्रशासनिक उपलब्धियों, रुचियों सहित अनेक अनछुए पहलुओं पर बातचीत की।

प्रस्तुत है मुख्यांश–

**Q अटलजी से कब और कैसे संपर्क हुआ ?**

**A** मैं संघ का स्वयंसेवक हूं, जनसंघ का भी कार्यकर्ता था, तो इस नाते कार्यक्रमों में अटलजी से मुलाकात होती रहती थी। दीनदयालजी की हत्या के बाद मुझे ऐसा लगा कि अटलजी अकेले रहते हैं, किसी को उनके साथ रहना चाहिए। मैंने इस संबंध में उनसे प्रार्थना की। उन्होंने बहुत मना किया, ''नहीं, भाई नहीं।'' उन्होंने एक मार्मिक बात कही, "देखो शिवकुमार जी, आप तो परिवार वाले हो, सर्वोच्च न्यायालय में वकालत करते हो और मेरी पार्टी ऐसी नहीं है कि जो आपको कुछ दे सके या मैं कुछ दे सकूं"। तो मैंने कहा, "साहब ऐसा है, मैं जब आपके पास आऊंगा तो अपने सारे पुल तोड़कर आऊंगा। कोई जिम्मेदारी नहीं है मेरे पास। अगर आप सकुशल रहे तो भारतीय जनसंघ फलेगी–फूलेगी और मेरे जैसे करोड़ों लोगों का परिवार अपने आप पल जाएगा।" उन्होंने कहा, "अगर आपकी ऐसी दृढ़ स्थिति है तो चलिए, लग जाइए हमारे साथ।" तो 1969 से उनके साथ हूं और आखिरी सफर तक भी उनके साथ रहा।

**Q अटलजी की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताइए ?**

**A** देखिए, इनके पूर्वज बटेसर के रहनेवाले थे। इनके बाबा भागवत कथा में प्रवीण थे। गांवों में जा–जाकर भागवत सुनाया करते थे। लोगों को जागृत करते थे। वो आशुकवि थे। हाथ के हाथ कविता बना देते थे। इनके पिताजी विद्यालय में शिक्षक थे और कवि थे। कवि सम्मेलनों में अटल जी भी उनके साथ जाते थे। ये भी कविताएं करने लग गए। तो कविता इनको विरासत में मिली है। दोनों पिता–पुत्र ने लॉ की पढ़ाई एक ही कक्षा में, एक ही हॉस्टल में और एक ही कमरे में रहकर की। इनके पिताजी तो एलएलबी पास कर गए। उस समय एक साथ दो परीक्षाएं पास कर सकते थे, एमए भी कर सकते थे। अटलजी एलएलबी तो पूरा नहीं कर पाए, राजनीतिक शास्त्र में प्रथम श्रेणी से एमए उत्तीर्ण किया। बीए में भी फर्स्ट डिवीजन आए थे सारे मध्य प्रदेश क्षेत्र में। वहां राज्य का नियम था कि जो फर्स्ट क्लास आता था, उसको वजीफा देते थे। परंतु एक शर्त रहती थी कि आपको राजा की नौकरी करनी पड़ेगी। अटलजी ने कहा कि आपका वजीफा नहीं चाहिए और नौकरी भी मुझे नहीं करनी। वो कानपुर गए। डीएवी कॉलेज से एमए किया। फिर वो लखनऊ आ गए।लखनऊ में पांचजन्य के संपादक रहे। राष्ट्रधर्म, स्वदेश, वीर अर्जुन, तरुण भारत का भी संपादन किया। उसके बाद फिर राजनीति में आ गए।

> अटलजी ने कहा कि आपका वजीफा नहीं चाहिए और नौकरी भी मुझे नहीं करनी। वो कानपुर गए। डीएवी कॉलेज से एमए किया। फिर वो लखनऊ आ गए।लखनऊ में पांचजन्य के संपादक रहे। राष्ट्रधर्म, स्वदेश, वीर अर्जुन, तरुण भारत का भी संपादन किया। उसके बाद फिर राजनीति में आ गए।

**Q आपका काम क्या रहता था अटल जी के साथ ?**

**A** मैं उनके सारे कागज–पत्र संभालता था। प्रवास में साथ जाता था। उनकी जो जरूरत होती थी उसको पूरी करने की कोशिश करता था।

**Q** **अटल जी की दिनचर्या क्या रहती थी ?**

**A** जब वे स्वस्थ थे तो दिन–रात भ्रमण किया करते थे। दिल्ली में बहुत कम रुकते थे, जब संसद के सत्र होते थे तभी रुकते थे अन्यथा सारे देश का हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक, अटक से लेकर कटक तक दौरा करते रहते थे। 2005 में उन्होंने सार्वजनिक घोषणा की थी कि मैं राजनीति में सक्रिय नहीं रहूंगा, तबसे वे राजनीति में सक्रिय नहीं रहे। हां राष्ट्रपति का जो चुनाव होने वाला था, जिसमें भैंरोसिंह शेखावत खड़े हुए थे, तो एनडीए के जितने घटक थे, उनको अटलजी ने बुलाया था और हमारे घर पर ही बैठक हुई। उसके बाद से कुछ नहीं। 2009 में तो उन्हें स्ट्रोक हो गया। करीब दो महीने अस्पताल में रहे वेंटिलेटर पर और दो महीने बाद फिर आ गए।

**Q** **अटल जी सबसे अधिक खुश और सबसे अधिक दुःखी कब होते थे ?**

**A** सबसे अधिक प्रसन्न तो तब हुए जब परमाणु विस्फोट किया और जब प्लेन हाइजैक हो गया तब वो दुःखी थे, हम भी दुःखी थे। हम लोगों को आश्वासन दिया था कि भई, सब सकुशल आ जाएंगे। अक्षरधाम पर हमला हुआ, संसद पर हमला हुआ, इन सबका उन्होंने हिम्मत से सामना किया।

**Q** **अटल जी ने संपादकीय लिखी, कविताएं लिखीं, लेख लिखे, लेखन के लिए कब समय निकालते थे ?**

**A** उनका अधिकांश लेखन प्रवास में होता था। जब कार में जा रहे होते थे, उस समय मनन करते रहते थे, लिखते रहते थे। जो टुकड़ा मिला कागज का, उस पर कुछ लिख लिया। अटलजी कविताओं में व्यंग्य भी लिखते थे। हास्य भी लिखते थे और क्रोध भी लिखते थे। और सामयिक चीज भी लिखते थे। अटलजी ने कविताएं कभी अपने लिए नहीं लिखी। उनकी कविताएं समाज के लिए और पूरी मानवता के लिए होती है। जैसे उनकी कविताएं – आओ फिर से दीया जलाएं, पहचान, गीत नहीं गाता हूं, न चुप हूं न गाता हूं, गीत नया गाता हूं, ऊंचाई, कौन कौरव कौन पांडव, दूध में दरार पड़ गई, जीवन बीत चला, मौत से ठन गई, राह कौन सी जाऊं मैं, मैं नींव का पत्थर पार हुआ, आओ मन की गांठें खोलें, नई गांठ लगती है, अमर आग है, आज सिंध में ज्वार उठा है, परिचय, कदम मिलाकर चलना होगा, हिंदू तन मन, वज्र से कठोर सहित अनेक कविताएं उल्लेखनीय हैं।

**Q** **अटल जी की भाषण कला के बारे में बताइए ?**

**A** सरस्वती इनकी जिह्वा पर विराजमान थी। ये शब्दों के जादूगर थे। अब क्या बोलेंगे, लोगों को इसकी उत्सुकता रहती थी। उनकी भाव–भंगिमा शब्द के अनुसार होती थी। अटलजी को अगर जानना है तो उनकी कविताओं को पढ़ना पड़ेगा। अटलजी सभाओं में लोगों का चेहरा देखकर समझ जाते थे कि वे क्या सुनना चाहते हैं? भाषण को रोचक बनाने के लिए कई चुटकुले सुना दिया करते थे। कई कहानियां बता दिया करते थे। उन्होंने कभी कमर से नीचे वार नहीं किया। अपनी बात कह देनी, जिसको चुभनी चाहिए थी, वह भी ताली बजा देता था। बाद में मालूम पड़ता था कि अरे ये तो मेरे पर कहा गया था। ये एक जादूगरी थी। अटलजी का भाषा पर जबरदस्त अधिकार था। वे शब्दों को स्वेच्छानुसार नचाने में एक बाजीगर थे। अटलजी के शब्द–सामर्थ्य की चर्चा प्रायः होती है। उनके पास पर्याय, विलोम, समानार्थी, अनेकार्थी शब्द, लोकोक्तियां, कहानियां, चुटकुलों का भंडार था। संसद में विदेश नीति पर अटल जी ने अपने पहले भाषण से ही सदन का ध्यान आकर्षित किया। सदन में तब अंग्रेजी छाई रहती थी। विदेश नीति में तो अधिकांश भाषण अंग्रेजी में ही होते थे। अटलजी ने हिंदी में प्रभावी भाषण दिया।

> **एक बार संसद में, तब हमारी ज्यादा सीटें नहीं होती थीं तो कभी–कभी नंबर आता था बोलने के लिए, बजट अनुदान पर चर्चा हो रही थी। अटलजी ने हिंदी में भाषण दिया। नेहरूजी ने भी जवाब हिंदी में दिया। नेहरू बोले, "मुझे इसका पता नहीं था कि कोई हिंदी में इतना अच्छा सारगर्भित भाषण कर सकता है!"**

**Q** **अटल जी किनसे प्रभावित रहे?**

**A** वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी और पं. जवाहरलाल नेहरू का बड़ा सम्मान करते थे, क्योंकि स्वतंत्रता आंदोलन में नेहरू जेल में रहे थे। संसद में भी मर्यादा बनाकर रखते थे। एक बार संसद में, तब हमारी ज्यादा सीटें नहीं होती थीं तो कभी–कभी नंबर आता था बोलने के लिए, बजट अनुदान पर चर्चा हो रही थी। अटलजी ने हिंदी में भाषण दिया। नेहरूजी ने भी जवाब हिंदी में दिया। नेहरू बोले, ''मुझे इसका पता नहीं था कि कोई हिंदी में इतना अच्छा सारगर्भित भाषण कर सकता है!'' उसके बाद रात में राष्ट्रपति भवन में 'एटहोम' था। कम्युनिस्ट देशों से गणमान्य लोगों का दल आया हुआ था। नेहरूजी भी आए थे। अटलजी को भी बुलाया था। वे दूर–दूर रहे कि नेहरूजी नाराज हो गए होंगे। पर नेहरूजी ने बुलाया, ''अटलजी इधर आओ।'' और मेहमान से कहा, ''दिस

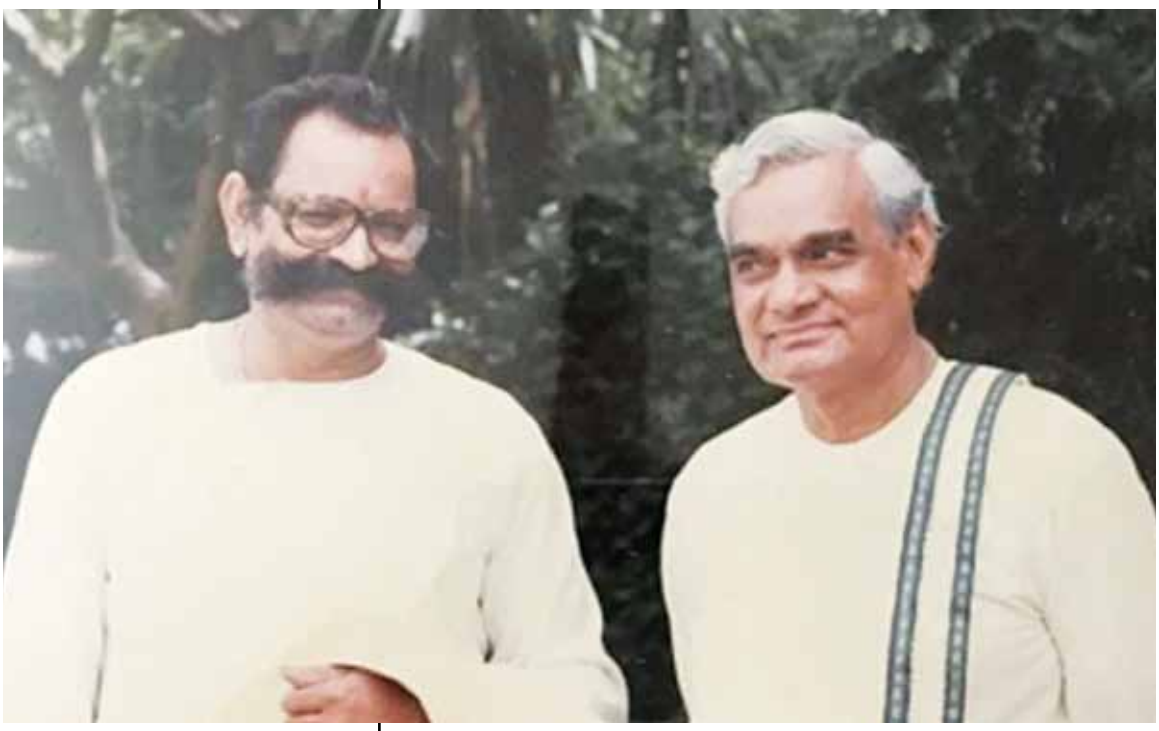

इज आवर यंग अपोजिशन लीडर। यह देश का भावी कर्णधार है।'' नेहरूजी के ये शब्द थे अटलजी के बारे में।

अटलजी ने भी नेहरूजी को जब श्रद्धांजलि देते हुए कहा, "सूर्य अस्त हो गया। तारों की छाया में हमें अपना मार्ग ढूंढना है।" तो लोग मुंह में उंगली दबाकर रह गए। 1977 में जब जनता पार्टी की सरकार बनी, तो विभिन्न दलों के लोग उसमें शामिल थे। कहा गया कि जवाहरलाल नेहरू की फोटो हटाओ। अटलजी ने कहा, ''क्यों हटाओ? ऐसा काम करो कि लोग आपकी भी फोटो लगाए।''

**"अंतिम यात्रा के अवसर पर विदा की बेला में जब सबका साथ छूटने लगता है, शरीर भी साथ नहीं देता तब आत्मग्लानि से मुक्त यदि हाथ उठाकर कोई यह कह सकता है कि उसने जीवन में जो कुछ किया सही समझकर किया है। किसी को जान–बूझकर चोट पहुंचाने को नहीं, सहज कर्म समझकर किया, तो उसका अस्तित्व सार्थक है, उसका जीवन सफल है, उसी के लिए कहावत बनी है मन चंगा तो कठौती में गंगा।''**

**Q अटल जी के व्यक्तित्व के बारे में आप क्या कहेंगे?**

**A** समग्रता से देखें तो राम का आदर्श, कृष्ण का सम्मोहन, विवेकानंद की ओजस्विता, बुद्ध का गांभीर्य और चाणक्य की नीति से परिपूर्ण था अटलजी का जीवन। अजातशत्रु ने कभी कमर से नीचे तक वार नहीं किया। कुतर्क से नहीं तर्क से जवाब देते थे।

अटलजी का आभामंडल प्रखर था। वे अपने निश्छल स्वभाव के कारण सर्वस्वीकार्य थे। वे रागों में राग–भैरव थे। सप्त–सुरों में सहज उनके कंठ का माधुर्य अद्भुत मृदुल था, इसलिए कि उन्हें रबड़ी मिश्रित मावा तथा पेड़े नामक मिठाई बहुत प्रिय थे। वे मीठा बोलते थे। विरोधियों को परास्त करने में ग्वालियर के चूड़े और आगरे के मंगोरे का भी कमाल है।

राजनीति की रपटीली राहों पर अटलजी सरपट दौड़े। वे आधे कवि – आधे राजनेता थे। अटलजी को भारत रत्न से नवाजा गया। कोई भी पद या पुरस्कार अटल जी से बड़ा नहीं है। वे जिस पद पर बैठे उस पद की गरिमा बढ़ गई। उनमें एक अच्छा गुण था कि वे धैर्य से सुनते थे।

वे अपने बारे में कहते थे- ''अंतिम यात्रा के अवसर पर विदा की बेला में जब सबका साथ छूटने लगता है, शरीर भी साथ नहीं देता तब आत्मग्लानि से मुक्त यदि हाथ उठाकर कोई यह कह सकता है कि उसने जीवन में जो कुछ किया सही समझकर किया है। किसी को जान–बूझकर चोट पहुंचाने को नहीं, सहज कर्म समझकर किया, तो उसका अस्तित्व सार्थक है, उसका जीवन सफल है, उसी के लिए कहावत बनी है मन चंगा तो कठौती में गंगा।'' •

# भारतीय भाषाएं, छत्तीसगढ़ और राज्य निर्माता अटलजी

- नन्दकिशोर शुक्ल

गत बीसवीं शताब्दी के पांचवे दशक में अपनी जन्मभूमि बिलासपुर में जब मैं स्कूली-शिक्षा ग्रहण कर रहा था तब देश में जब-जब आम चुनाव या स्थानीय-चुनावों की धूम मचती थी तब-तब बाल-सुलभ जोश के कारण किसी भी पार्टी का झंडा उठाकर गली-गली नारा लगाते हुए अपने साथियों के साथ खूब घूमा करता था। तब राजनीति का कखग तक जानने का कोई सवाल ही नहीं था। जब कोई नेता हमारे गली-मोहल्ले में चुनाव प्रचार करने आते तब मात्र मनोरंजनार्थ उत्सुकतावश सुनने जा धमकता था। ऐसे ही एक प्रसंग पर एक रिक्शे पर बैठे नेता का भाषण सुनते जमा भीड़ को देख कर मैं भी उसके पास पहुंच गया। जो नेता भाषण दे रहा था उसके वाणी में बड़ा जोश था, भाषा बड़ी सरल-सुमधुर थी। शैली बड़ी आकर्षक थी। पर मेरी उम्र उस समय उस भाषण का अर्थ समझने लायक नहीं थी। लोग ताली पीटते तो मैं भी पीट देता था।

मेरा ध्यान तो ज्यादातर उस रिक्शे में लगे दीप छाप झंडे और उस नेता के सीने में लगे दीपक निशान वाले बिल्ले पर ही था। मन ही मन सोच रहा था कि यदि ये झंडा और बिल्ला मुझे मिल जाय तो मैं भी इसी का प्रचार करूं। और, मुझे मेरे मोहल्ले के ही एक व्यक्ति से मिल भी गया, उसी ने बताया कि भाषण देने वाला व्यक्ति जनसंघी नेता अटल बिहारी वाजपेयी जी हैं। भले ही मुझे इन सब बातों से तब कोई मतलब ही नहीं था मगर आज जब उस प्रसंग का स्मरण करता हूं, तब यह सोच कर गौरवान्वित हो जाता हूं कि इतने महान नेता का, मैंने उस अपने बाल उम्र से, इतने छोटे स्तर पर से उठ कर उन्हें प्रखर जनसंघी-सांसद, दमदार सफल मंत्री, फिर भाजपा के अध्यक्ष, सांसद, यशस्वी प्रधानमंत्री और अत्यंत लोकप्रिय 'भारत-रत्न' बनते तक के उनके विराट-व्यक्तित्व का दर्शन-लाभ लिया है।

समय बीतने के साथ-साथ मैं 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का स्वयंसेवक बना। मात्र सत्रह वर्ष की आयु में 'प्रचारक' रूप में संघ की योजनानुसार विभिन्न क्षेत्रों में संघ-कार्य करते-करते जबलपुर पहुंचा। तब कुछ वर्षों तक कार्य करने का दायित्व निभाने के दरम्यान कई बार अटल जी के जबलपुर प्रवास में उन्हें समीप से जानने का मौका मिला। तब मुझे उनके इतने ऊंचे कद का एहसास हुआ। वे भी स्वयंसेवक थे, प्रचारक थे। इसलिए भी उनके भाषा-सम्बन्धी विचारों को समझने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई क्योंकि उनके ये विचार संघ-स्वयंसेवकों के आचरण में है। कारण है, संघ की रीति-नीति। संघ के स्थापना-वर्ष 1925 से ही संघ में सभी भारतीय-भाषाओं का समान-सम्मान कर राष्ट्रीय-एकात्मता निर्माण करने का शिक्षा-संस्कार दिया जाता है। जिसके फलस्वरूप मेरे समान एक सामान्य स्वयंसेवक से लेकर अटलजी जैसे ऊंचे स्तर तक पहुंचे स्वयंसेवक के भाषा-सम्बन्धी आचार-विचार में समानता है।

> मेरा ध्यान तो ज्यादातर उस रिक्शे में लगे दीप छाप झंडे और उस नेता के सीने में लगे दीपक निशान वाले बिल्ले पर ही था। मन ही मन सोच रहा था कि यदि ये झंडा और बिल्ला मुझे मिल जाय तो मैं भी इसी का प्रचार करूं। और, मुझे मेरे मोहल्ले के ही एक व्यक्ति से मिल भी गया, उसी ने बताया कि भाषण देने वाला व्यक्ति जनसंघी नेता अटल बिहारी वाजपेयी जी हैं।

शुरू के सूक्ष्म-रूप से लेकर आज विराट-रूप तक आते-आते भी भाषा-सम्बन्धी 'संघ' के आचार-विचार ज्यों के त्यों वही हैं जिसे अटलजी ने अपने अटल-विचारों में प्रगट किए हैं। आरंभिक वर्षों से ही स्वयंसेवक, नागपुर में अंकुरित 'संघ' की शाखाओं में मराठी और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में नित्य द्विभाषी प्रार्थना करते और गीत गाते परस्पर भारतीय भाषाई-सम्मान करने का संस्कार पाते आ रहे हैं। जब सन् 1940 के दशक से संघ की प्रार्थना संस्कृत में शुरू हुई तब संघ की 'राष्ट्रीय एकात्मता' की रीति-नीति के अनुसार संघ की प्रार्थना और विविध

कार्यक्रमों के सञ्चालन हेतु दी जाने वाली आज्ञाएं संस्कृत में तथा शेष सभी दैनंदिन क्रियाकलाप स्थानीय-भाषाओं में होते आ रहे हैं। इसी के परिणामस्वरूप संघ के स्वयंसेवक भारतीय-भाषाओं के सम्मान से उत्पन्न 'राष्ट्रीय एकात्मता' का संस्कार पाते आ रहे हैं। इन्हीं संस्कारों से ओतप्रोत सामान्य स्वयंसेवक से लेकर 'अटलजी' जैसे स्तर तक के स्वयंसेवक भी हैं। इस तथ्य के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं हमारे आज के हिन्दी-भाषी महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, तेलुगु-भाषी माननीय उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू और गुजराती-भाषी विश्व-स्तरीय नेता माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी। इन सब की स्कूली-शिक्षा इनकी अपनी 'मातृभाषा' माध्यम से ही संपन्न हुई है।

भारत-रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के अटल-विचारानुसार- 'राष्ट्र की सच्ची एकता तब पैदा होगी जब भारतीय भाषाएं अपना स्थान ग्रहण करेंगी!' ऐसा क्यों कहा होगा उन्होंने? क्योंकि विदेशी-दासता से आजाद हो जाने के बावजूद अंग्रेजी-भाषा की मानसिक-गुलामी के कारण हम आज तक अपनी भाषा का महत्त्व सही-सही नहीं समझ पाए हैं, जिसके कारण मिथ्या-भाषाभिमानी होकर भाषा के नाम पर ही विभिन्न भारतीय भाषा-भाषी एक-दूसरे के विरुद्ध ताल ठोंकते नजर आते हैं। 'भाषा' सभ्यता को संस्कारित करने वाली वीणा एवं संस्कृति को शब्द देने वाली वाणी है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति नष्ट करनी हो तो उसकी भाषा नष्ट कर दीजिए। इस सूत्र को भारत पर शासन करने वाले विदेशियों ने भलीभांति समझा। आरंभिक आक्रमणकारियों ने संस्कृत जैसी समृद्ध और संस्कृतिवाणी को हाशिए पर कर अपने-अपने इलाके की भाषाएं लादने की कोशिश की। बाद में सभ्यता की खाल ओढ़कर अंग्रेज आये। उसने दूरगामी नीति के तहत भारतीय भाषाओं की धज्जियां उड़ाकर अपनी भाषा और अपना हित लाद दिया।'

**आजाद हो जाने के बाद भी अंग्रेजी-भाषा में शिक्षित होने कारण हम अंग्रेजी को तो सर-माथे पर लादकर आज तक चल रहे हैं, किन्तु सभी भारतीय-भाषाओं का सम्मान करना तो दूर हम अपनी भी भाषा का जैसा सम्मान करना चाहिए वैसा नहीं कर रहे। इसीलिए हम अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा, सारे पापड़ बेल कर भी लेने हेतु लालायित रहते हैं, मगर अपनी मातृभाषा में शिक्षा लेना अपने 'कैरियर' के लिए नुकसानदायक समझते हैं।**

आजाद हो जाने के बाद भी अंग्रेजी-भाषा में शिक्षित होने कारण हम अंग्रेजी को तो सर-माथे पर लादकर आज तक चल रहे हैं, किन्तु सभी भारतीय-भाषाओं का सम्मान करना तो दूर हम अपनी भी भाषा का जैसा सम्मान करना चाहिए वैसा नहीं कर रहे। इसीलिए हम अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा, सारे पापड़ बेल कर भी लेने हेतु लालायित रहते हैं, मगर अपनी मातृभाषा में शिक्षा लेना अपने 'कैरियर' के लिए नुकसानदायक समझते हैं।

लगता है 'अटलजी' ने हमारी इसी मानसिकता को खूब अच्छी तरह से समझ कर ही कहा होगा कि सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान होना चाहिए। उन्होंने कहा था- 'हमने कभी उड़िया भाषा का विरोध नहीं किया, हमने कभी तमिल भाषा का विरोध नहीं किया। हमारे डीएमके के मित्रों ने ऑल इण्डिया रेडियो को बानुली कर दिया, सत्यमेव जयते का तमिल रूपांतर कर दिया गया। हमने उसकी आलोचना नहीं

की। अगर अंग्रेजी की जगह तमिल आती है तो हम उसका स्वागत करेंगे। लेकिन अंग्रेजी की जगह हिन्दी आती है तो उन्हें भी अन्य भाषाओं के लिए वही प्रेम होगा। अगर हम अंग्रेजी के प्रति अपनी मानसिक गुलामी छोड़कर सभी भारतीय भाषाओं का परस्पर सम्मान करने लगेंगे तो अवश्यमेव राष्ट्रीय-एकात्मता केवल आएगी ही नहीं, बल्कि चट्टानवत मजबूत भी होगी। उनके इस विचार का साक्षात्कार मुझे ही नहीं करोड़ों भारतीयों को भी निश्चित ही हुआ है।

इसीलिए अटलजी ने स्पष्टतः कहा था – 'शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। ऊंची-से-ऊंची शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए।' सकल विश्व में भारत की पहिचान बनी 'राजभाषा-हिन्दी' में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा को संबोधित कर गुलामी की अवशेष निशानी बनी रही अंग्रेजी-भाषा के मायाजाल को काटते हुए उसे प्रस्थापित करने वाले प्रथम महामानव, भारत-रत्न, हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटलजी ही थे। अपनी भाषा का महिमा-मंडन करने वाले अटलजी द्वारा 'मातृभाषा में शिक्षा' लेने-देने का 'अटल-विचार' प्रगट करना एकदम स्वाभाविक है। जरूरत है उनके इन अनमोल विचारों के नक्श-ए-कदम पर 'कदम से कदम मिलाकर' चलने की, जिसका आह्वान स्वयं 'अटलजी' ने किया था।'

अंततः उनके कदम से कदम मिलाकर चलते-चलते **आज भारतीय शिक्षा-प्रणाली 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' तक पहुंच ही गई जिसके तहत अब अटलजी के विचारानुसार 'बहुभाषावाद और भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है।** कम से कम ग्रेड 5 तक शिक्षा का माध्यम, लेकिन अधिमानतः ग्रेड 8 और उससे आगे तक घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी।' महात्मा गांधीजी की इच्छानुसार भी अब जाकर विदेशी-भाषा अंग्रेजी-माध्यम का भूत-भय भारत से भागने ही वाला है। इसमें दो-मत या दुविधा किसी को भी होना ही नहीं चाहिए। गांधीजी ने इस मुद्दे पर दो टूक विचार प्रगट करते हुए कहा था- 'मैं बच्चों के मानसिक विकास के लिए उन पर मां की भाषा को छोड़कर दूसरी कोई भाषा लादना मातृभूमि के प्रति पाप समझता हूं। मेरा यह विश्वास है कि राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा के बजाए दूसरी भाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे आत्महत्या ही करते हैं। इसलिए, मैं इस चीज को पहले दर्जे का राष्ट्रीय संकट मानता हूं। अटलजी ने गांधीजी की इन इच्छाओं और विचारों को पूरी तरह से आत्मसात् कर लिया था।

> 'राजभाषा-हिन्दी' में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा को संबोधित कर गुलामी की अवशेष निशानी बनी रही अंग्रेजी-भाषा के मायाजाल को काटते हुए उसे प्रस्थापित करने वाले प्रथम महामानव, भारत-रत्न, हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटलजी ही थे।

पृथक-छत्तीसगढ़' निर्माण में अटलजी का योगदान अमूल्य और अविस्मरणीय है। छत्तीसगढ़ के तब के सम्माननीय दिग्गजों व जोशीले दमदार युवकों द्वारा संचालित 'पृथक-छत्तीसगढ़ जनान्दोलन' अपने पूरे दमखम के साथ चल ही रहा था, मगर अटलजी के भाषाई आचरणीय आदर्श, अटल-विचारों का ही सुफल है अति सराहनीय ऐतिहासिक निर्णय पृथक छत्तीसगढ़ निर्माण का। अन्यथा सन् 2000 के पहले मध्यप्रदेश के आगोश में पूर्ववत् खोया-खोया सा लुप्तप्राय पड़ा रहता छत्तीसगढ़। भारत-रत्न वाजपेयी जी के इन्हीं भाषाई अटल-विचारानुसार निर्मित 'छत्तीसगढ़' के पढ़े-लिखे शिक्षित छत्तीसगढ़ी-भाषी लोगों में भी अपनी 'चिन्हारी' छत्तीसगढ़ी-भाषा के प्रति सम्मान व स्वाभिमान का भाव जागना शुरू हुआ। अटलजी के इस ऐतिहासिक निर्णय को शेष सभी राजनैतिक दलों के सहयोग के कारण बने 'छत्तीसगढ़ी-भाषी' पृथक-छत्तीसगढ़ की पहिचान 'जनभाषा' से 'राजभाषा' बनकर राज-सिंहासन पर बैठी 'छत्तीसगढ़ी' सैकड़ों वर्षों बाद 'पहली बार' सम्मानित हुई है। •

**-लेखक स्वतंत्र पत्रकार, साहित्यकार और लोकतंत्र सेनानी हैं।**

# राष्ट्र की अखंडता के लिए अटल जी का योगदान

—रमेश नय्यर

अटलजी के संबोधन से लोकप्रिय श्री अटल बिहारी वाजपेयी को पहली बार देखने और सुनने का मौका मथुरा में मिला। पश्चिम पंजाब जब 1947 में पाकिस्तान में चला गया तो भारी तबाही और कत्लों गारत के बीच हमारा परिवार भी शरणार्थी बन कर किसी तरह हिंदुस्तान में आ पाया। कुछ महीने फिरोजपुर और फिर अमृतसर में बिताने के बाद हम लोग मथुरा आ गये, वहीं एक छोटा सा पुराना मकान हमें रहने को मिल गया। तब हमें रिफ्यूजी अर्थात शरणार्थी के रूप में माना जाता था। वे बहुत त्रासद और कष्ट भरे दिन थे, अमृतसर में मेरे मौसा हंसराज गेहन ने हमें अपने घर में रखा। उनके अनुज हीरालाल गेहन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तरूण स्वयंसेवक थे। पापा, मेरी एवं छोटे भाई श्याम और छोटी बहन पवन को लेकर फिरोजपुर आ गये थे। उनको पूरा अंदेशा था कि विभाजन के साथ ही पाकिस्तान में जाने वाले इलाके में भारी मारकाट और लूटपाट होगी। वैसा हुआ भी।

> **मनु के पुत्रों के शोणित से रंजित है वसुधा की छाती टुकड़े-टुकड़े हुई विभाजित बलिदानी पुरखों की छाती कण-कण पर शोणित बिखरा है, पग-पग पर माथे की रोली, इधर मनी सुख की दीवाली और उधर जनधन की होली।**

मेरे लालन पालन के लए रखी गई जैनब और परिवार के मुनीम काल खां ने हमें फसादियों से बचाने और किसी तरह फिरोजपुर तक पहुंचाने में बड़ी मदद की। जो आभूषण मेरी दादी ने पहने हुए थे, वे हमारे पास एकमात्र संपत्ति रह गई थी। अमृतसर में मेरी मासी और उनका परिवार विभाजन से पहले ही आकर बस गये थे। उनका एक मकान दरबार साहिब के तीर्थ नगर अमृतसर में विभाजन के पहले से बसा हुआ था। मौसा के लिए पंजाब में संबोधन था 'मासड़ जी'। विस्थापन, विपन्नता और वजूद बचाने के लिए संघर्षों की गाथा काफी लंबी है, बहुत संक्षेप में यह क हमारा परिवार मथुरा पहुंच कर एकजुट होकर वहीं बस गया। वहीं सन 54-55 में जनसंघ के कार्यकर्ताओं ने हमारी काफी मदद की। सरकार की तरफ से पश्चिमी पंजाब से उखड़ और उजड़ कर हिंदुस्तान के पंजाब में पहुंचे शरणर्थियों के पुनर्वास की व्यवस्था की जा रही थी। हमारे परिवार के मुखिया लाल पालामल काफी संपन्न थे। उन्हें शाहजी के नाम से जाना जाता था। विभाजन की त्रासदी और वैभव से विपन्नता में पहुंच जाने के सदमे ने उन्हें झकझोर दिया था। अमृतसर पहुंचने के एक सप्ताह के अंदर ही उनका निधन हो गया। मैंने पहली बार परिवार के किसी सदस्य को तड़प-तड़प कर मरते हुए देखा था।

आज उस त्रासद दुर्घटना के बारे में सोचता हूं तो लगता है 'शाह जी' की मृत्यु ब्रेन हेमरेज अथवा हृदयघात से हुई थी। उनकी अंतिम इच्छा थी कि अपने प्राण वे मथुरा अथवा हरिद्वार में त्यागे। नियति को यह मंजूर नहीं था। वे अमृतसर में ही दम तोड़ बैठे हमारे लए यह बड़ी विपदा थी। इसका मूल कारण भी विभाजन का आघात था। विभाजन पर हिंदी, उर्दू, अंग्रजी और पंजाबी में बहुत लिखा गया है। अटल जी का किव मन कैसे न द्रवित होता। उन्होंने लिखाः

*मनु के पुत्रों के शोणित से*
*रंजित है वसुधा की छाती*
*टुकड़े-टुकड़े हुई विभाजित*
*बलिदानी पुरखों की छाती*
*कण-कण पर शोणित बिखरा है,*
*पग-पग पर माथे की रोली,*
*इधर मनी सुख की दीवाली*
*और उधर जनधन की होली।*

इस भयावह रक्तपात से द्रवित होकर अटल जी को लगा कि जो आजादी मिली वह अधूरी है, उनके कवि मन ने लिखाः

*जिनकी लाशों पर पग धर कर आजादी भारत में आई,*
*वे हैं खानाबदोश गम की बदली छाई*
*बस, इसीलिए तो कहता हूं आजादी अभी अधूरी है,*
*कैसे उल्लास मना लूं मैं? थोड़े दिन की मजबूरी है।*

अटल जी के भाषण सुनना संवेदना की धारा में बहना और बहते हुए आकंठ स्नान करना होता था, खंडित रक्तस्नान आजादी पर द्रवित होकर उन्होंने लिखा :

*राजपथ पर भीड़ जनपथ पड़ा सूना,*
*पलटनों का मार्च, होता शोर दूना*
*शोर में डूबा हुआ स्वाधीनता का स्वर*

# अटल स्मृतियां

97वीं जयंती पर विशेष

*रूद्र वाणी, लेखनी जड़ कसमसाता उर।*

अटल जी साहित्य सृजन में आनंद का अनुभव करते थे। बुनियादी तौर पर वे एक संवेदनशील कवि थे। राजनित में वे जाना नहीं चाहते थे। परंतु वक्त के तकाजों ने उन्हें राजनीति में धकेल दिया। उनके भाषण सुनने के लिए बड़ा जन समूह जुट जाया करता था। भारतीय जनसंघ और कालांतर में भारतीय जनता पार्टी को राष्ट्रीय राजनीति में स्थापित करने में उनके भाषणों की बड़ी भूमिका रही है।

अटल जी को देखने, सुनने और कालांतर में उनसे संवाद के अवसर पत्रकारिता में आने के बाद मिले। अंग्रेजी में एमए करने के बाद जल्द ही मैं रायपुर से प्रकाशित दैनिक 'युगधर्म' में लग गया। उन दिनों हिंदी के समाचार पत्रों में देशी-विदेशी खबरों के लिए प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के टेलिप्रिंटर पर अंग्रेजी में आने वाले समाचारों पर निर्भर रहना पड़ता था। अंग्रेजी में एमए होने के कारण मुझे नरकेसरी प्रकाशन नागपुर के रायपुर में प्रकाशित युगधर्म में सहायक संपादक का काम मिल गया। वहीं 1964 में श्रमजीवी पत्रकार के रूप में मुझे एक पहचान मिल गई, फिर रायपुर से जब अंग्रेजी दैनिक एमपी क्रानिकल का प्रकाशन शुरू हुआ तो पत्रकारिता को नया आयाम मिल गया। लगभग एक दशक तक मैंने युगधर्म में काम किया।

जब नवभारत पत्र समूह के रायपुर से अंग्रेजी दैनिक एम.पी. क्रानिकल का प्रकाशन शुरू हुआ तो अंग्रजी में एमए होने के कारण मुझे श्री गोविंदलाल वोरा ने वहां बुलवा लिया। वहां वेतन बेहतर था और स्वतंत्र रूप से काम करने के अवसर भी अधिक थे। मेरा कार्यक्षेत्र पूरा छत्तीसगढ़ हो गया। तब यह अंचल मध्यप्रदेश का हिस्सा था, क्रानिकल में रिपोटिंग के साथ ही संपादन का नया अनुभव हासिल हुआ, उन्हीं दिनों दिल्ली से टाइम्स ऑफ इंडिया समूह के प्रतिष्ठित साप्ताहिक दिनमान का प्रकाशन शुरू हुआ। उसके संपादक हिंदी के ख्यातिलब्ध पत्रकार और लेखक हीरानंद सच्चिदानंद अज्ञेय थे। छत्तीसगढ़ अंचल में कोई संवाददाता नहीं था। बड़े संकोच के साथ मैंने दिनमान के छत्तीसगढ़ संवाददाता के पद के लिए आवेदन दिया। अज्ञेय जी संपादक और रघुवीर सहाय संयुक्त संपादक थे। सहाय जी ने टेलीफोन पर सूचना दी कि बस्तर पर यदि कुछ लिख सको तो भेज दो। बाद में पता चला कि रायपुर के त्रिलोक दीप ने मेरी अनुशंसा की थी। दिनमान ने चार पांच आवरण कथाओं सहित मेरी दर्जन भर से ज्यादा विशेष रपट प्रकाशित की। दिनमान का मानदेय बहुत अच्छा था। क्रानिकल के महीने भर के वेतन के बराबर एक विशेष रपट का मानदेय, उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह था कि खूब यश मिलने लगा। बाद में मैं 'ट्रिब्यून' में चला गया।

**अटल जी को देखने, सुनने और कालांतर में उनसे संवाद के अवसर पत्रकारिता में आने के बाद मिले। अंग्रेजी में एमए करने के बाद जल्द ही मैं रायपुर से प्रकाशित दैनिक 'युगधर्म' में लग गया। उन दिनों हिंदी के समाचार पत्रों में देशी-विदेशी खबरों के लिए प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के टेलिप्रिंटर पर अंग्रेजी में आने वाले समाचारों पर निर्भर रहना पड़ता था।**

उन दिनों पंजाब में खालिस्तानी आतंकवाद भी उफान पर था। चूंकि मैंने विभाजन और विस्थापन के दंश फैले थे, इसलिए मैं निर्भय अपना काम करता रहा। पंजाब में आतंकवाद का वह दौर बहुत खतरनाक था, पंजाब केसरी के प्रधान संपादक लाला जगत नारायण और उनके उत्तराधिकारी सुपुत्र रमेश चंद्र जी भी आतंकवादी गोलियों के शिकार हो गये। 35-40 अन्य पत्रकारों की भी हत्याएं हुई। मैं स्वयं भी एक बार बाल-बाल बचा। पंजाब में खालिस्तानी आतंक भारत की अखंडता के लिए बहुत बड़ी चुनौती थी। बुनियादी षड़यंत्र था सिक्खों और हिंदुओं में फूट डाल कर उन्हें आपस में लड़ा देना। अनेक सिख युवकों को पाकिस्तान ले जाकर उनका ब्रेनवाश किया जाता। उन्हें बताया जाता कि बंटवारे के वक्त अंग्रेज चाहते थे कि मुसलमानों की तरह सिखों को भी अलग देश मिले। पाकिस्तानी एजेंटों के माध्यम से प्रचार किया जाता मुस्लिम-सिख भाई-भाई, से हिंदू कौम कहां से आई, लेकिन सदियों के भाईचारे के जीवंत साझे इतिहास के कारण सिख गुमराह नहीं हो पाए। उन्हें मुगलों और अन्य मुस्लिम शासकों के कार्यकाल में सिख गुरुओं के कत्लों का इतिहास मालूम था।

गुरु अर्जुन देव, गुरु तेगबहादुर और गुरुगोविंद सिंह के चारों शहजादों की शहादतों का पूरा इतिहास मालूम था। सरहिंद के उसे दीवार को श्रद्धापर्व के पवित्र तीर्थ स्थल के रूप में देखा जाता था, जसमें गुरु गोविंद सिंह के दो शहजादों को जिंदा चिनवा दिया गया था, मैंने स्वयं सरहिंद की उस दीवार के भक्तिभाव से दर्शन किये थे जिनमें दोनों शहजादों के अवशेष विद्यमान थे। कांग्रेस से भाजपा के मतभेद थे, परंतु व्यापक राष्ट्रीय महत्व को देखते हुए कांग्रेस और भाजपा दोनों ने हिंदू-सिख भाईचारे को बढ़ावा दिया। सबकी मिली जुली संगोष्ठियां कराई गई। उस बेहद नाजुक दौर में पाकिस्तान के षड़यंत्र को अंततः विफल कर दिया गया। हिंदुओं और सिखों में मेलजोल के साथ ही साझी कुरबानियों के इतिहास के स्मरण ने हिंदू-सिख भाईचारे को बनाए रखने में बड़ी मदद की। उन कट्टरपंथी हिंदू नेताओं की पोल भी खोल दी गई। पाकिस्तान से मादक पदार्थों की तस्करी में लिप्त थे। इस अभियान में संत हरचंदसिंह लौंगोवाला सहित अनेक राष्ट्रवादी सिंख नेताओं को कुरबानियां देनी पड़ी। उन दिनों एकाधिक बार अटल जी ने पंजाब में उच्चस्तरीय साझे विमर्श में भागीदारी की। अटल जी के रायपुर से संबंधित भी अनेकानेक संस्मरण है जिसे फिर कभी अवसर आया तो विस्तार देने की कोशिश होगी..... •

# भारतीय राजनीति का करिश्माई व्यक्तित्व अटलजी

-कनक तिवारी

अटल बिहारी वाजपेयी का भारतीय राजनीति में करिश्मा तो रहा है। 1960 के पहले कभी छात्र जीवन में रायपुर के छत्तीसगढ़ कॉलेज में युवा वाजपेयी का बेहद चुहलबाजी करता भाषण सुना था। उसमें बीच-बीच में यौवन के उद्दाम की छौंक भी वे लगा देते। श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट के बिना वाजपेयी ने भाषण देना सीखा ही कहां था! हमने कई बार सुना। बहुत बाद में एक बार कभी लोकसभा के गलियारे में सांसद मित्र अरविन्द नेताम के साथ मैं चल रहा था। अटल जी सामने से आते हुए दिखाई दिए। नेताम जी ने अभिवादन किया और वे मुस्कराते हुए हम दोनों को अपने कक्ष में ले गए। कहा 'आओ चाय पिलाते हैं।' चाय का आर्डर दिया और वे नेताम से कुछ बातें करते रहे। नेताम जी ने मेरा परिचय कराया। तो मेरी ओर देखकर मुस्करा दिए। लगभग घूरते रहे, लेकिन मुझसे बात नहीं की।

> **1996 के आसपास की बात है। मैं मध्यप्रदेश हाउसिंग बोर्ड का अध्यक्ष था। राजनीति में गफलत, षडयंत्र, शरारत और शातिराना हरकतें अनिवार्य और अंतर्भूत अवयवों की तरह होती हैं। दिग्विजय सिंह से मेरी तत्कालीन राजनीति की वैचारिकता को लेकर भी संवाद की आवाजाही थी। मैंने मुख्यमंत्री को छेड़ा, भोपाल में भारतीय जनता पार्टी का सम्मेलन हो रहा है। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी सहित सभी बड़े नेता आए हैं। भोजन या नाश्ते पर वाजपेयी जी और आडवाणी जी को बुला लेने की सलाह मैंने दिग्विजय सिंह जी को दी।**

1996 के आसपास की बात है। मैं मध्यप्रदेश हाउसिंग बोर्ड का अध्यक्ष था। राजनीति में गफलत, षडयंत्र, शरारत और शातिराना हरकतें अनिवार्य और अंतर्भूत अवयवों की तरह होती हैं। दिग्विजय सिंह से मेरी तत्कालीन राजनीति की वैचारिकता को लेकर भी संवाद की आवाजाही थी। मैंने मुख्यमंत्री को छेड़ा, भोपाल में भारतीय जनता पार्टी का सम्मेलन हो रहा है। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी सहित सभी बड़े नेता आए हैं। भोजन या नाश्ते पर वाजपेयी जी और आडवाणी जी को बुला लेने की सलाह मैंने दिग्विजय सिंह जी को दी।

पहले तो दिग्विजय हिचकिचाए। फिर बाद में उन्होंने हामी भर दी। कहा आप आइए। आपके साथ चलेंगे। भोपाल के सिंचाई विभाग के कोलार रेस्ट हाउस में दोनों बड़े भाजपाई नेता अन्य कई नेताओं के साथ ठहरे थे। मुख्य दरवाजे पर पहुंचते ही देखा अटल जी बाहर निकल रहे हैं। दिग्विजय ने गुरुदेव कहते साष्टांग प्रणाम करने की त्रेता युग की मुद्रा अपनाई और अटल जी ने द्वापर के कृष्ण-सुदामा की शैली में उन्हें अपनी छाती से लगा लिया। जब प्रयोजन समझा तो कहा, चलो आडवाणी जी के कमरे में। वे भी निकलने वाले हैं। वाजपेयी जी और दिग्विजय सिंह आडवाणी के कमरे में चले गए। मैं बाहर खड़ा रहा और के.आर. मलकानी को पहचनाकर उनसे बातें करने लगा क्योंकि मैं वर्षों पहले अपने गृह नगर दुर्ग में संघ के अंगरेजी अखबार 'मदरलैंड' का संवाददाता रह चुका था। सुषमा स्वराज जी और कुछ अन्य नेता भी वहां थे।

अटल बिहारी वाजपेयी जी, आडवानी जी और दिग्विजय जी तीनों नेता बाहर निकलकर बरामदे में चलने लगे। मैं भी साथ था। तब दिग्विजय सिंह जी को लगा कि उनसे मेरा परिचय करा दें। उन्होंने कहा 'ये कनक तिवारी हैं, हाउसिंग बोर्ड के चेयरमैन।' आडवाणी जी ने मेरी ओर मुखातिब होकर पूछा 'दुर्ग वाले? पद के अपने गुरूर में मैंने कहा 'नहीं

आडवाणी जी मैं दुर्ग हाउसिंग बोर्ड नहीं, मध्यप्रदेश हाउसिंग बोर्ड का अध्यक्ष हूं।' आडवाणी जी ने कहा 'हां हां लेकिन रहते तो दुर्ग में हैं ना?'

तब अटल जी को छक्का मारने का मौका मिला। उन्होंने कहा 'आडवाणी जी ये दुर्ग के रहने वाले नहीं हैं। दरअसल ये राजनांदगांव के रहने वाले हैं। ये दुर्ग चले गए हैं। इनके पिता तो 1957 में राजनांदगांव से विधानसभा का चुनाव लड़ चुके हैं। मैंने इनके यहां भोजन किया है। उन्होंने शरारत से मेरी ओर देखा। तब मुझे नेताम के साथ मिलने वाली पुरानी घटना याद आई। अटल जी तो तब से मुझे जानते रहे होंगे। उस दिन किसी कारण चुप रहे। वे परिचय की क्रीज़ पर एक या दो रन नहीं बनाना चाहते रहे होंगे। उन्होंने छक्का मारा तो दिग्विजय सिंह के चेहरे पर प्रश्नवाचक चिन्ह कराहने लगा। उन्होंने पूछा 'आप हमारे कार्यकर्ताओं को इतने विस्तार से कैसे जानते हैं।' आडवाणी जी ने तपाक से जवाब दिया 'जो हमको गरियाते हैं उनका हम पूरा हिसाब रखते हैं। मेरे पिता 1957 में भारतीय जनसंघ के टिकट पर विधानसभा का चुनाव जब राजनांदगांव से लड़ रहे थे। तब तक मैं डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के प्रभाव में आकर समाजवादी युवजन सभा से संबद्ध हो गया था और मैंने अपने पिता का विरोध किया था। यह बात अटल जी को उस समय मालूम थी। जब वह मेरे घर भोजन करने आए थे। क्योंकि भोजन मैंने ही परोसा था। •

**आडवाणी, अटल बिहारी वाजपेयी और दिग्विजय तीनों नेता बाहर निकलकर बरामदे में चलने लगे। मैं भी साथ था। तब दिग्विजय सिंह को होश आया कि उनसे मेरा परिचय करा दें। उन्होंने कहा 'ये कनक तिवारी हैं, हाउसिंग बोर्ड के चेयरमैन।' आडवाणी ने मेरी ओर मुखातिब होकर पूछा 'दुर्ग वाले?'**

# अमिट रहेगी संसद के उस ऐतिहासिक अटल संबोधन की याद...

-चन्द्रशेखर साहू

सन् 1985-86 का कालखण्ड हम सबके लिए कठिन और राजनीतिक दृष्टि से निराशा से भरा था। इसी दौरान श्रद्धेय श्री अटल जी रायपुर-बस्तर प्रवास हुआ था। इंदिरा जी अवसान उपरांत हुए आम चुनाव के परिणाम से सब अवगत ही हैं। तब श्री अटल जी की गैर- राजनीतिक यात्रा हम लोगों के लिए एक अलग ही अनुभूति देने वाला था। निजी प्रवास में श्री अटल जी उस दौर में सभी से आत्मीयता के साथ मिले। मुझे स्मरण आ रहा है कि रायपुर में श्री अटल जी स्व. श्री बालूभाई पटेल के निवास में दोपहर भोजन करने पहुंचे थे। वहां मैंने भी उनके साथ नीचे चटाई में बैठकर भोजन किया था। वह अद्भुत क्षण मेरे लिये बहुत ही प्रेरणादायी एवं अविस्मरणीय था। हम कुल आठ लोग उस पंडाल में थे जिसमें श्रद्धेय श्री अटल जी के साथ उनकी छाया की तरह चलने वाले श्री शिवकुमार जी भी थे। उसी कद-काठी के हमारे तत्कालीन जिला भाजपा अध्यक्ष स्व. श्री सालिग राम देवांगन भी थे, जिन्हें देखकर हम लोग श्री अटल जी की उपस्थिति में हास-परिहास के साथ श्री शिवकुमार जी के साथ जोड़ रहे थे। भोजन उपरांत श्रद्धेय श्री अटल जी ने वहीं से वापसी के लिए प्रस्थान किया।

> देश के इतने बड़े नेता सहज ही चंद सहयोगियों के साथ बड़े आत्मीयता से बातचीत कर रहे थे। दरअसल उनके प्रवास पर कहीं भी दो से अधिक गाड़ी नहीं थी, तामझाम का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

दूसरा प्रसंग श्रद्धेय श्री अटल जी के बस्तर प्रवास से वापसी से जुड़ा है। सन् 1987 में वे सड़क मार्ग से रायपुर से लौट रहे थे। हम लोगों को जानकारी मिलने पर अभनपुर में एक स्थान पर स्वागत बैनर लगाकर प्रतीक्षारत थे, कुछ काल बीतने पर हम सभी सहयोगी रेलवे क्रॉसिंग अभनपुर के निकट एक दुकान में बैठ गये थे। इसी बीच श्रद्धेय श्री अटल जी की कार वहां से गुजर गयी। हम लोग हतप्रभ रह गये क्योंकि एक छोटी सी चूक से उनके स्वागत व प्रत्यक्ष भेंट से वंचित रह गये। इसी भाव लेकर मैं श्री अशोक बजाज को लेकर माना विमानतल पर प्रस्थान के पूर्व पहुंचे। उन दिनों बहुत छोटा सा लाउंज था एयरपोर्ट का। श्रद्धेय श्री अटल जी प्रतीक्षा रहे थे, तब वहां स्व. डॉ. रमेश, पूर्व विधायक खल्लारी ने मेरा परिचय पुनः कराया। तब बड़े विनोदपूर्वक श्रद्धेय श्री अटल जी ने कहा- अच्छा वहां से है, जहां स्वागत बैनर लगा था, लेकिन कोई व्यक्ति नजर नहीं आया। इतना कहते हुए हम लोग भी झेंप भूलकर उस परिहास में शामिल हो गये।

देश के इतने बड़े नेता सहज ही चंद सहयोगियों के साथ बड़े आत्मीयता से बातचीत कर रहे थे। दरअसल उनके प्रवास पर कहीं भी दो से अधिक गाड़ी नहीं थी, तामझाम का तो प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसे महान व्यक्तित्व के साथ ठीक दस साल बाद मुझे संसद भवन में बैठने का और उनसे सीखने का अवसर मिला था। 12वीं लोकसभा मात्र 13 महीने चली और एक वोट से बहुमत खोने के बाद श्री अटल जी संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण के बाद इस्तीफे देने चले गये, इस क्षण का मुझे साक्षी बनने का भी अवसर मिला था। ऐसी अनेक यादें हमेशा अपने मन पर अंकित रहेगी। •

# जो पाया उसमें खो न जायें, जो खोया उसका ध्यान करें

-हितेश शंकर

देश के 72वें स्वतंत्रता दिवस पर विविध आयोजनों की उत्सवी चमक को दुख में बदल देने वाली पहली खबर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से आई!

अटलजी की तबियत बिगड़ी..। शाम होते-होते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अटलजी के स्वास्थ्य का हाल लेने एम्स पहुंच गए। देश के पूर्व प्रधानमंत्री, पाञ्चजन्य के प्रथम संपादक और सर्वप्रिय जननेता अटल बिहारी वाजपेयी 11 जून, 2018 से सांस लेने में दिक्कत और गुर्दे के संक्रमण के उपचार के लिए एम्स में भर्ती थे। अगले दिन दोपहर तक आशंकाओं के बादलों ने पूरे देश, खासकर दिल्ली को ढक लिया। भारतीय जनता पार्टी की कार्यकारिणी बैठक स्थगित कर दी गई। दिल्ली में अटलजी के घर के बाहर तैनात सुरक्षाकर्मियों की संख्या बढ़ा दी गई। किसी औपचारिक घोषणा से पहले एक टीवी चैनल ने अटलजी के निधन की घोषणा कर दी। सोशल मीडिया पर अपुष्ट खबरों की पहले से जारी बाढ़ के बीच व्हाट्सएप पर चैनल का स्क्रीनशॉट तेजी से घूमने लगा। एकाएक जिस तरह हड़बड़ी में खबर चली, उससे दोगुनी तेजी से उसे रोका गया। 'अटलजी हैं, खबरदार! कोई गैरजरूरी फुर्ती नहीं'! न्यूजरूम में संपादकों की तगड़ी झाड़ उन रिपोर्टरों के लिए सबक थी जो औपचारिक घोषणा से पूर्व सीमा लांघने की हद तक चले गए थे। इस क्षणभर की 'ब्रेकिंग' में करोड़ों दिलों के टूटने की तीखी समवेत गड़गड़ाहट सुनी जा सकती थी।

क्या है अटल बिहारी वाजपेयी होने का अर्थ! और उनके न होने से क्या अंतर पड़ता है! अरसे से निश्चेष्ट अटलजी कुछ भी तो नहीं कर रहे थे! फिर उन्हें लेकर ऐसी संवेदनशीलता... पिछले लोकसभा चुनाव में मतदान कर चुकी और 2019 के आम चुनाव में मतदान के लिए कमर कसती युवा भारत की नई खेप ने शायद पहली बार यह महसूस किया। इस संवेदनशीलता में ही किसी के 'अटलजी' होने का अर्थ छिपा है। यदि क्षेत्र, भाषा, कुनबे पर पलता और सामाजिक दरारों को गहरा करने वाला राजनैतिक फलक क्रूरता, कपट और हल्केपन की ऊंची लहरों में मदमत्त होता दिखे तो अटलजी के सदन-संदर्भ दिए जाते हैं। सियासत के समुद्र में राह दिखाने वाला अविचल प्रकाश स्तंभ।

भारत की मिट्टी में जन्म लेने वाले सौभाग्यशाली राजनेताओं में ऐसे विरले ही हैं जो अपनी कला, संस्कृति और साहित्य से निरंतर जुड़े रहकर राजनीति के चक्रव्यूहों के बीच भी अपनी लेखनी को विराम नहीं देते। उदारमना एवं कर्मठ राजनेता के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी की छवि एक कुशल राजनेता, दूरद्रष्टा तथा कालजयी कवि की रही। उनकी अद्भुत वक्तृत्व शैली की धूम पूरे देश में है तो इसमें रंच मात्र अतिशयोक्ति नहीं है। साथ ही वैश्विक मुद्दों पर भारत की कूटनीतिक दृढ़ता को रेखांकित करने वाले पहले भारतीय राजनेता भी अटलजी ही थे। स्वतंत्रता के बाद भारत के इतिहास में शायद ही कोई राजनेता होगा जो इतने लंबे समय तक राजनीति के केन्द्र में सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ कायम है। लेखन कर्म से अपनी जीवन यात्रा शुरू करने वाले अटलजी के जीवन के हर पड़ाव पर संघर्षशीलता एवं उतार-चढ़ाव दिखता है। अटलजी को कुशल वक्ता का गुण एवं काव्य कला अपने पिता पं. कृष्णबिहारी वाजपेयी से विरासत में मिली। उनके पिता ग्वालियर राज्य के विख्यात कवि तथा कुशल वक्ता थे। अटलजी के बाबा भी संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान थे, परन्तु अटलजी की वाणी पर जिस प्रकार साक्षात् सरस्वती विराजती रहीं, वह अध्यवसाय से अर्जित उपलब्धि से इतर ईश्वरप्रदत्त कृपा अनुभव होती है।

> एक बार किसी पत्रकार ने कौतुकवश पूछ लिया था-अटलजी, ये शब्द आपकी जिह्वा पर आते कैसे हैं? क्या कोई दिव्य प्रेरणा? उत्तर में अटलजी किसी बच्चे की तरह शरमा गए, सकुचा गए और विषय बदलने का इंतजार करने लगे।

क्या थे अटलजी? एक बार किसी पत्रकार ने कौतुकवश पूछ लिया था-अटलजी, ये शब्द आपकी जिह्वा पर आते कैसे हैं? क्या कोई दिव्य प्रेरणा? उत्तर में अटलजी किसी बच्चे की तरह शरमा गए, सकुचा गए और विषय बदलने का इंतजार करने लगे।

क्या थे अटलजी? उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और झारखंड के निर्माता अटलजी। ऑपरेशन शक्ति (पोकरण-2) परमाणु परीक्षण करवाकर दुनिया में भारत को नए सिरे से प्रतिष्ठा

दिलाने वाले अटलजी। चंद्रयान-1 परियोजना की मंजूरी देने वाले अटलजी। देश को जमीन पर, हवा में, तरंगों में, नदियों में, सड़कों में, जुड़ाव और एकजुटता देने वाले अटलजी। राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना शुरू करने वाले अटलजी। 'सागरमाला परियोजना' की शुरुआत करने वाले अटलजी। देश को स्वर्ण चतुर्भुज देने वाले अटलजी। उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम गलियारे को साकार करने वाले अटलजी। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना वाले अटलजी। दिल्ली मेट्रो परियोजना लाने वाले अटलजी। डॉ. भूपेन हजारिका सेतु निर्माण कराने वाले अटलजी। जम्मू और बारामूला रेल लिंक और 'चेनाब ब्रिज' देने वाले अटलजी। रक्षा खुफिया इकाई, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैसी संस्थाओं का सृजन करने वाले अटलजी। सूचना प्रौद्योगिकी में भारत को उत्कर्ष पर ले जाने वाले अटलजी। सर्वशिक्षा अभियान देने वाले अटलजी। प्रवासी भारतीय सम्मान शुरू करने वाले अटलजी। कारगिल युद्ध के समय देश को विजयी नेतृत्व देने वाले अटलजी...कहां तक याद करें।

और उससे भी पहले कितनों को याद है अटलजी का विदेश मंत्रित्व काल? कार्टर की भारत यात्रा कई लोगों को याद होगी। लेकिन मोशे दायन का भारत आना शायद पहली बार इस्रायल के किसी शीर्ष नेता का भारत दौरा था। भारत ईरान का भी मित्र था और इस्रायल का भी। चीनी हेकड़ी तब भी थी, और यह अटलजी ही थे, जो वियतनाम पर चीनी हमले के विरोध में यात्रा अधूरी छोड़ कर लौट आए थे। अटलजी का व्यक्तित्व अत्यंत व्यापक है, परन्तु उनमें विद्यमान कालजयी कवि की चर्चा न करना, उनके व्यक्तित्व के साथ अन्याय होगा। उनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम, जीवन संघर्ष, विश्वशांति एवं राजनेता के रूप में उनके मन के अंदर की उथल-पुथल का बखूबी वर्णन है। जब उन्होंने लिखा

'खड़े देहली पर हो किसने पौरुष को ललकारा
किसने पापी हाथ बढ़ाकर मां का मुकुट उतारा?'

उनकी एक दूसरी कविता में लंबे संघर्ष से मिली आजादी की सुरक्षा की नसीहत थी—

'उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसें बलिदान करें।
जो पाया उसमें खो न जायें, जो खोया उसका ध्यान करें।'

संस्कारित व्यक्ति ऊंचे पद पर पहुंच कर भी अपने सद्गुण कभी नहीं छोड़ता।

अंत्योदय को लागू करने में उन्होंने किसानों को उच्च प्राथमिकता दी। किसानों के कल्याण का मुद्दा उनके दिल का करीब था और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि क्रेडिट कार्ड एक अमीर आदमी का स्टेटस सिंबल नहीं, बल्कि एक गरीब किसान की मूल आवश्यकता थी। किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड भी मिला। अटल जी के युग उनकी नीतियों के चलते भारत शिखर पर चढ़ता गया। भारत का सकल घरेलू उत्पाद 8 प्रतिशत तक बढ़ गया। देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ। उनका दृष्टिकोण सर्वव्यापी था, राय में अंतर हो सकता था लेकिन दृष्टिकोण में सर्वसम्मति थी। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में अटलजी ने अधिकांश समय विपक्ष में बिताया। उस समय एक ही पार्टी और एक ही परिवार का दबदबा रहता था। इसके बावजूद वह दृढ़ता से राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे उठाते थे। वह ऐसे मुद्दे सदन में उठाते थे, जो आमतौर पर उपेक्षित, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण होते थे।

अटलजी लोगों से बहुत ही सहज भाव से जुड़ते थे। वर्ष 1977 से 1979 तक वह विदेश मंत्री भी रहे। इस दौरान उन्होंने भारत की विदेश नीति में नया अध्याय लिखा। भारत को ज्यादा से ज्यादा रणनीतिक लाभ मिले, इसलिए उन्होंने कुछ देशों के बजाय पूरे विश्व से तालमेल किया। इसी भावना के साथ वह 1999 में बस से लाहौर भी गए। लोगों को जोड़ने की विशेषता के चलते वह गठबंधन की सफल राजनीति के शिल्पकार बने। अटलजी स्वभाव से बहुत विनम्र, लेकिन चट्टान की तरह दृढ़ भी थे। 11 मई 1998 को भारत आधिकारिक रूप से न्यूक्लियर देश बना था। अटलजी ने इस बात की जैसे ही घोषणा की, देश को कड़े आर्थिक प्रतिबंध और अंतरराष्ट्रीय दबाव झेलना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने 13 मई को दूसरे दौर के परीक्षण का आदेश दे दिया।

**भारत के विभाजन से वह व्यथित थे। संपूर्ण भारत के बिना वह भारत की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अटलजी अपने भाषणों में केवल पाकिस्तान की ही बात नहीं करते थे, बल्कि गिलगित से गारो की बात करते थे।**

भारत के विभाजन से वह व्यथित थे। संपूर्ण भारत के बिना वह भारत की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अटलजी अपने भाषणों में केवल पाकिस्तान की ही बात नहीं करते थे, बल्कि गिलगित से गारो की बात करते थे। उन्होंने संपूर्ण दुनिया को कुशल राजनीतिज्ञ होने का परिचय दिया। हिंदू समाज की, भारतीयता की छोटी से छोटी चीजों के प्रति उनके मन में प्रेम था। इन सबके प्रति उनके मन में श्रेष्ठ भाव था। उन्होंने लिखा था-

हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय।

अपने शब्दों की ही तरह अटलजी भी शाश्वत हैं, वे साक्षात् शब्द थे। कवित्व का शब्द, हुंकार का शब्द, राष्ट्र का शब्द, आशा का शब्द, भारतीयता का शब्द, विश्वास का शब्द, प्रेम का शब्द...। कहते हैं शब्द ब्रह्म है। वह शब्द ही ब्रह्मलीन हो गया उस दिन। लेकिन उस महामानव की अमिट-अटल स्मृति तो यहीं, हम सबके मानस में अंकित है। •

**-लेखक 'पाञ्चजन्य' के संपादक हैं।**

# मेरे मार्गदर्शक व राजनैतिक गुरु थे अटल जी

-सच्चिदानंद उपासने

मुझे स्मरण है बाल्यकाल में हम बालोद, जिला दुर्ग में रहा करते थे। पिताजी जनसंघ संघ व विभिन्न अनुषांगिक संगठनों के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में भूमिका निर्वहन करते थे। उस समय कोई टेलीविजन या मोबाइल नहीं था। पिताजी नियमित रूप से आकाशवाणी पर आने वाले राष्ट्रीय समाचारों को सुना करते और जब समाचारों में अटल जी का नाम आता तो उनकी खुशी अलग ही दिख जाती। उनकी खुशी को देख मेरे बाल मन पर प्रारंभ से ही अटल जी के प्रति श्रद्धा का भाव स्थापित हो गया था। बालोद छोटा स्थान था। जब भी रायपुर में जनसंघ के बड़े कार्यक्रम विशेषकर अटल जी की रैली व सभा होती तो मैं पिताजी व स्थानीय कार्यकर्ताओं संग अटल जी को देखने और सुनने जिद्द कर रायपुर आ जाता था। वहां के रैली में सभी के सिर पर भगवा टोपी, भगवा झंडों से सजा रायपुर देख मुझे अपार आनंद देता। और जब गांधी चौक के मैदान में अटल जी की सभा होती तो मैं उनके भाषण का भरपूर आनंद लेता। उनके द्वारा की गई इंदिरा गांधी व कांग्रेस पर हास्य युक्त टिप्पणियों को बालोद जा अपने मित्रों को गर्व से सुनाता था। उसका आनंद ही कुछ अलग था। शाला में जब भी सार्वजनिक कार्यक्रम होते मैं अटल जी की कविताएं पढ़ता। मुझे हमेशा पुरस्कृत किया जाता। तब से मैंने अटल जी को अपना आदर्श मान रखा व मन में उत्कट इच्छा थी एक बार तो अटल जी से प्रत्यक्ष भेंट हो।

> पिताजी का स्थानांतरण रायपुर हुआ। फिर मैं धीरे-धीरे छात्र राजनीति के साथ ही जनसंघ से जनता पार्टी की यात्रा में शामिल हो गया। और अवसर पहली बार मिला जब ढाई साल की जनता पार्टी की सरकार आपसी लड़ाई में भंग हो गई। उस ढाई वर्ष में माताजी श्रीमती रजनी ताई उपासने जी रायपुर की विधायक थी।

मुझे लगता है मेरी उसी इच्छाशक्ति की पूर्ति हेतु पिताजी का स्थानांतरण रायपुर हुआ। फिर मैं धीरे-धीरे छात्र राजनीति के साथ ही जनसंघ से जनता पार्टी की यात्रा में शामिल हो गया। और अवसर पहली बार मिला जब ढाई साल की जनता पार्टी की सरकार आपसी लड़ाई में भंग हो गई। उस ढाई वर्ष में माताजी श्रीमती रजनी ताई उपासने जी रायपुर की विधायक थी। केंद्रीय नेतृत्व ने यह तय किया था कि पूरे देश में

जनता पार्टी में जनसंघ कोटे से निर्वाचित विधायकों को पुनः चुनाव में टिकट दी जाय। परंतु स्थानीय स्तर की राजनीति के चलते माताजी के टिकट काटे जाने के संकेत मिल रहे थे तो मैं सीधे दिल्ली चला गया और अटल जी से मिलने उनके बंगले पहुंच गया। अटल जी नहीं थे। मुझे सहायकों ने इंतजार करने कहा। थोड़ी ही देर में अटल जी आए और बैठक कक्ष में मेरे सामने आकर बैठ गए। मेरे बरसों का सपना पूरा हुआ। मुझे अपार खुशी थी। अटल जी ने पूछा- कैसे आना हुआ? मैंने अपना परिचय दे, माताजी का परिचय दिया तो वह तत्काल बोल पड़े "रजनी ताई" मैंने हां की, व टिकट कटने की आशंका जताई। तो तत्काल उन्होंने जवाब दिया,"नहीं कटेगा जाइए काम में लग जाइए। केंद्रीय निर्णय है।" चाय आ गई अटल जी ने चाय लेने कहा और स्वयं भी चाय पीने लग गए। मैंने उन्हें प्रणाम किया वह खुशी-खुशी बाहर आ गया। टिकट तो कट गई, पर वह दिन आज भी मुझे स्मरण है, ऐतिहासिक दिन था मेरे लिए।

दूसरा अवसर अटल जी से प्रत्यक्ष भेंट का तब आया जब रायपुर ग्रामीण की सीट स्वर्गीय तरुण दादा जो कांग्रेसी थे, दी जा रही थी। परंतु पंडित विद्याचरण शुक्ल को समझौते में कुछ सीटें दी जानी थी। अपनी पार्टी के कार्यकर्ता ग्रामीण के प्रबल दावेदार थे। कार्यकर्ताओं ने अटल जी को बड़ी मात्रा में पोस्टकार्ड लिख तरुण दादा को टिकट न देने व उक्त कार्यकर्ता को टिकट देने की मांग की थी। हम दिल्ली गए सीधे अटल जी से मिले। सारी बातें उनके समक्ष रख अपने कार्यकर्ता को टिकट देने का आग्रह किया तो उन्होंने कहा "बहुत सारे पोस्ट कार्ड आपने ही भेजे हैं" और बोले समझौते में देनी पड़ रही है। मुझे भी पार्टी टिकट नहीं दे रही। आप लोग काम करेंगे या नहीं हमने कहा जो पार्टी का आदेश हो पालन करेंगे? उन्होंने कहा जाइए उन्हें जिताएं, यही हमारे लिए उचित होगा। हम वापस आ गए और पूरी लगन से अटल जी के आदेश का पालन किया।

**जोगी जी की सरकार का समय था। हमारे 12 विधायक कांग्रेस में चले गए थे। ठीक उसी अवधि में अटल जी की सभा रायपुर में थी। हम सब कार्यालय में बैठे थे। अटल जी का फोन हम सबके सामने माननीय लखीराम जी के पास आया। अटल जी ने कहा- लखीराम जी, कल मेरी सभा के पूर्व आपके कुछ और विधायक जाने वाले हैं, ऐसी जानकारी मुझे है। लखीराम जी ने उन्हें आश्वस्त किया के ऐसा नहीं होगा आप अवश्य आएं।**

तीसरी बार तो अटल जी के सामने मेरी परीक्षा थी। जिला अध्यक्ष था रायपुर का। प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी की पहली सभा थी बीटीआई मैदान रायपुर में। पार्टी ने आदेश दिया मुझे संचालन करना है अटल जी की सभा का। मैं बहुत भयभीत था। अंदर से कंपन काफी हो रही थी कि कैसे करूंगा। पर हिम्मत से सभा का संचालन किया। अटल जी मंच पर बैठे मेरे संचालन को एकटक देख गंभीरता से सुन रहे थे। आभार प्रदर्शन पश्चात अटल जी मुझ तक आए और पीठ पर हाथ रखते हुए कहा की बहुत स्पष्ट हिंदी है, संचालन बढ़िया रहा। मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा। मैंने चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले लिया। परीक्षा में सफल रहा। जब मुझ जैसे एक छोटे से कार्यकर्ता को अटल जी की तारीफ के शब्द सुनने मिले। विमानतल पर उनके स्वागत पश्चात जब उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का अवसर मिला तो ऐसा लगा कि सब कुछ मिल गया।

जोगी जी की सरकार का समय था। हमारे 12 विधायक कांग्रेस में चले गए थे। ठीक उसी अवधि में अटल जी की सभा रायपुर में थी। हम सब कार्यालय में बैठे थे। अटल जी का फोन हम सबके सामने माननीय लखीराम जी के पास आया। अटल जी ने कहा- लखीराम जी, कल मेरी सभा के पूर्व आपके कुछ और विधायक जाने वाले हैं, ऐसी जानकारी मुझे है। लखीराम जी ने उन्हें आश्वस्त किया के ऐसा नहीं होगा आप अवश्य आएं। रातो रात लखीराम जी ने शेष सभी विधायकों को कार्यालय में आमंत्रित कर लिया। इतनी छोटी सी जानकारी भी रखते थे अटल जी और नीचे तक सब को जागरुक कर देते थे। अटल जी आज हमारे बीच में नहीं हैं। राजनीति में अटलजी एक महापुरुष थे। उन्हें मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। •

# जनता के हृदय की धड़कन को बखूबी समझने वाले अटल जी

- अशोक बजाज

राष्ट्रनायक, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न अटलबिहारी वाजपेयी की संकल्प शक्ति का ही परिणाम है कि 21 वर्ष पूर्व 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य का उदय हुआ। उन्होंने 1998 में सप्रेशाला रायपुर के मैदान में जनता के नब्ज को टटोल कर वादा किया था कि यदि आप लोकसभा की 11 में से 11 सीटो में भाजपा को जितायेंगे तो मैं आपको छत्तीसगढ़ राज्य दूंगा। हालांकि चुनाव में भाजपा को 11 में से 8 सीटें ही मिली लेकिन केंद्र में भाजपा की सरकार पुनः बनी तथा अटल जी पुनः प्रधानमंत्री बन गए। प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिए पहले ही दिन से प्रक्रिया प्रारंभ कर दी। मध्यप्रदेश राज्य पुर्निर्माण विधेयक 2000 को 25 जुलाई 2000 को लोकसभा में पेश किया गया। इसी दिन दो अन्य राज्यों उत्तराखंड एवं झारखंड राज्य के विधेयक भी पेश हुए। 31 जुलाई 2000 को लोकसभा में और 9 अगस्त को राज्य सभा में छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के प्रस्ताव पर मुहर लगी। 25 अगस्त को राष्ट्रपति के हस्ताक्षर हो गए। तत्पश्चात 4 सिंतबर 2000 को भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन के बाद 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ देश के 26 वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इस प्रकार अटलजी की एक अटल-प्रतिज्ञा पूरी हुई।

> वास्तव में राज्य का गठन करना कोई हंसी खेल तो था नहीं। कई वर्षों से लोग आवाज उठा रहे थे। इसके लिए लोग अनेक तरह से आंदोलन भी करते रहे लेकिन राज्य का निर्माण नहीं हो पाया था। यह तो अटलजी की दृढ इच्छा शक्ति का ही परिणाम है कि बिना खूनखराबे के राज्य का निर्माण हो गया।

वास्तव में राज्य का गठन करना कोई हंसी खेल तो था नहीं। कई वर्षों से लोग आवाज उठा रहे थे। इसके लिए लोग अनेक तरह से आंदोलन भी करते रहे लेकिन राज्य का निर्माण नहीं हो पाया था। यह तो अटलजी की दृढ इच्छा शक्ति का ही परिणाम है कि बिना खूनखराबे के राज्य का निर्माण हो गया। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के पहले हम मध्यप्रदेश में थे। मध्यप्रदेश का निर्माण सन 1956 में 1 नवम्बर को ही हुआ था। हम 1 नवम्बर 1956 से 31 अक्टूबर 2000 तक यानी 44 वर्षो तक मध्यप्रदेश के निवासी थे तब हमारी राजधानी भोपाल थी। इसके पूर्व वर्तमान छत्तीसगढ़ का हिस्सा सेन्ट्रल प्रोविंस एंड बरार (सी.पी.एंड बरार) में था तब हमारी राजधानी नागपुर हुआ करती थी। इस प्रकार हमें पहले सी.पी.एंड बरार, तत्पश्चात मध्यप्रदेश और अब छत्तीसगढ़ के निवासी होने का गौरव प्राप्त हो रहा है। वर्तमान छत्तीसगढ़ में जिन लोगों का जन्म 1 नवम्बर 1956 को या इससे पूर्व हुआ है वे तीन राज्यों में रहने का सुख प्राप्त कर चुके हैं।

परंतु छत्तीसगढ़ राज्य में रहने का अपना अलग ही सुख है। छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद माननीय अटलबिहारी वाजपेयी जी का सन 2001 में जब पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन हुआ तब उनका छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता के रूप में जोशीला स्वागत हुआ था। वे छत्तीसगढ़ के लोगों को किए गये वादे को पूरा करके तथा अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करके आये थे। अतः राज्य की जनता पलक पावड़े बिछाकर उनका इंतजार कर रही थी। उस दिन छत्तीसगढ़- वासियों को उसी प्रकार के आनंद की अनुभूति हो रही थी जिस प्रकार नये राज्य की स्थापना के समय 1 नवम्बर 2000 को हो रही थी।

तमाम स्वागत, अभिनंदन, उमंग और उत्साह के बावजूद एक टीस तो उन्हें थी, अपने अंदाज में उन्होंने जनसभा में व्यक्त भी कर दिया। उन्होंने उस समय कहा था कि छत्तीसगढ़ की धरती को प्रकृति की अपार कृपा है, यह धरती जल सम्पदा, वन सम्पदा एवं खनिज सम्पदा से परिपूर्ण है, यहां की जनता मेहनतकश है। परन्तु इस राज्य को विकास के शिखर तक ले जाने के लिए एक प्रामाणिक सरकार की कमी है। अटल जी के इस कथन का प्रभाव यह हुआ कि 2003 में जब नव गठित

छत्तीसगढ़ विधानसभा का पहला चुनाव हुआ तो भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिला।

डॉ. रमन सिंह प्रथम निर्वाचित सरकार के मुख्यमंत्री बने तथा लगातार 15 वर्षों तक भाजपा सरकार का नेतृत्व किया। इस दौरान छत्तीसगढ़ का तीव्र गति से विकास हुआ। अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लोगों के जीवनस्तर को ऊपर उठाने का प्रयास हुआ। छत्तीसगढ़ अकाल व पलायन से मुक्त हुआ। किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण मिलने लगा। सरप्लस बिजली उत्पादन होने से किसानों को चौबीसों घंटे बिजली मिलने लगी, विद्युत पंपों के जाल बिछ गये। फलस्वरूप खेती लहलहाने लगी, उत्पादन दुगुना हो गया। शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार हुआ। कुपोषण व अशिक्षा के खिलाफ संघर्ष तेज हुआ। सभी गांव बारामासी सड़कों से जुड़ गये। कुल मिलाकर छत्तीसगढ़ में विकास की बयार बहने लगी। गांवों, कस्बों एवं शहरों की तकदीर व तस्वीर बदल गई। इन 15 वर्षों में भाजपा सरकार के प्रयासों का नतीजा है कि छत्तीसगढ़ देश के विकसित राज्यों की श्रेणी में स्थापित हो गया। यह संभव हो पाया तो केवल इसीलिए कि माननीय अटलबिहारी वाजपेयी ने एक झटके में छत्तीसगढ़ का निर्माण किया है, छत्तीसगढ़ की जनता उनका सदैव ऋणी रहेगी। •

**डॉ. रमन सिंह जी प्रथम निर्वाचित सरकार के मुख्यमंत्री बने तथा लगातार 15 वर्षों तक भाजपा सरकार का नेतृत्व किया। इस दौरान छत्तीसगढ़ का तीव्र गति से विकास हुआ। अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लोगों के जीवनस्तर को ऊपर उठाने का प्रयास हुआ।**

**-लेखक वरिष्ठ भाजपा नेता एवं रायपुर ग्रामीण भाजपा के जिलाध्यक्ष रहे हैं.**

# कांग्रेस के हाथों में देश सुरक्षित नहीं : अटलजी

## अंतिम साक्षात्कार

लोकसभा चुनाव में अप्रत्याशित पराजय के बाद खिन्न मुद्रा में दिखाई देते रहे पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी अब फिर पुराने तेवरों में लौट आए हैं। अब उनके लहजे में हताशा की जगह जोश है और संजीदगी के साथ विनोद है। लोकसभा चुनाव के परिणाम घोषित हुए भले ही सात माह का समय बीत गया है, लेकिन उसके परिणाम की छाया अब भी जब-तब पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के चेहरे पर पसर ही जाती है। श्री वाजपेयी आज भी इन नतीजों के कारण के सवाल पर उलझन में फँसे दिखाई देते हैं। सच तो यह है कि वह अब अतीत पर विचारने के स्थान पर वर्तमान से जूझने और भविष्य को बुनने के लिए तत्पर हैं। राजधानी में कृष्ण मेनन मार्ग स्थित अपने आवास पर **हिमांशु द्विवेदी** के साथ एक खास बातचीत में श्री वाजपेयी केंद्र की यूपीए सरकार के हाथों में देश को असुरक्षित बताते हैं। **जानिए भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज व्यक्तित्व से विभिन्न मुद्दों पर हुई बेबाक बातचीत के खास खास अंश –**

**Q** आज भी यह बहस का मुद्दा है कि आम चुनाव में पक्की मानी जा रही आपकी सरकार की जीत पराजय में कैसे तब्दील हो गई? स्वयं अटल बिहारी वाजपेयी इस हार का क्या कारण मानते हैं?

**A** कुछ समझ ही नहीं आया, भाई! अब ज्यादा ही जोर दो तो यही कह सकता हूँ कि वोटर ने हमको वोट नहीं दिए, इसलिए हार गए।

**Q** इस उत्तर से ही नया प्रश्न पैदा हो जाता है कि आखिर लोगों ने आपको वोट क्यों नहीं दिए? खासकर तब जब आपकी पार्टी आज भी आपकी सरकार के कामकाज का गुणगान कर रही है।

**A** अब इसका क्या निष्कर्ष निकालूं? जहाँ तक काम का सवाल है, मुझे आज तक एक भी आदमी नहीं मिला, जिसने यह कहा हो कि मेरी सरकार ने अच्छा काम नहीं किया है। शायद राजनीतिज्ञों पर से जनता का विश्वास उठ चुका है। उसे लगता है कि सभी तो एक जैसे हैं। कोई आ जाए, क्या फर्क पड़नेवाला है। शहरों में तो बड़ी संख्या में लोग वोट ही नहीं डालते। (कुछ देर चुप्पी) अगर जनता कामकाज देखकर चुनती होती तो क्या महाराष्ट्र में कांग्रेस-राकांपा दुबारा जीतते?

**Q** फिर बिहार के संदर्भ में आपका क्या मानना है?

**A** (अट्टहास) लालू! भई लालू का तो कमाल है! सच कहूँ तो उनका यह कमाल तो मैं आज तक समझ नहीं पाया हूँ।

**Q** छह साल के आपके कामकाज के बाद यूपीए सरकार को कामकाज संभाले छह माह हो गए हैं। पूर्व

**सभ्यता कलेवर है, संस्कृति उसका अन्तरंग। सभ्यता स्थूल होती है, संस्कृति सूक्ष्म। सभ्यता समय के साथ बदलती है, किंतु संस्कृति अधिक स्थायी होती है।** -अटल बिहारी वाजपेयी

> यदि यह कहूं कि कांग्रेस स्वयं एक बीमारी है, तो यह गलत नहीं होगा और बीमारी खुद कभी इलाज नहीं हो सकती।
>
> इसलिए अगर बीमारी का इलाज लोगों को कराना है तो भाजपा का आना लाजमी है।

**प्रधानमंत्री होने के नाते सरकार पर आपकी टिप्पणी?**

**A** कहा है सरकार! इसकी दशा सभी के सामने है। ऐसा लगता ही नहीं कि सत्ता का एक केंद्र है। इसी के कारण सरकार जो भी निर्णय लेती है, उसमें स्पष्टता अभाव रहता है। आज कोई निर्णय लेते हैं, दूसरे दिन बदल देते हैं। मुझे तो इस सरकार का कार्यकाल पूरा होने पर भी संदेह है।

**Q** **आप केंद्र सरकार के दिशाहीन होने की बात कह रहे हैं, किंतु यह धारणा तो आपकी पार्टी के संबंध में भी बन रही है। यहाँ तक कि कुछ राजनीतिक समीक्षक पार्टी को समाप्ति की ओर जाती तक बता रहे हैं। इस पर आपका क्या कहना है?**

**A** क्या? कौन कहता है? मेरा तो मानना है कि भविष्य केवल भारतीय जनता पार्टी का ही है। आडवाणीजी के हाथों में पार्टी सही दिशा में ही आगे बढ़ेगी। इस संबंध में बाकी बातें फालतू की हैं।

**Q** **जब पार्टी का भविष्य उज्ज्वल हैं तो अभी होने जा रहे तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों में पार्टी की क्या संभावनाएं हैं?**

**A** बिसात बिछ चुकी है। गोटियाँ चली जा रही हैं। एक बात समझ लेने की है कि इस देश की ज्यादातर समस्याओं की वजह कांग्रेस है। यदि यह कहूँ कि कांग्रेस स्वयं एक बीमारी है तो यह गलत नहीं होगा और बीमारी खुद कभी इलाज नहीं हो सकती। आप हरियाणा का ही उदाहरण लीजिए। वहाँ भी चुनाव होने जा रहे हैं। इस राज्य की सारी समस्याएँ कांग्रेस के कारण ही हैं। एस.वाई.एल. का पानी अगर आज तक हरियाणा को नहीं मिला तो उसकी वजह कांग्रेस ही तो है। इसलिए अगर बीमारी का इलाज लोगों को कराना है तो भाजपा का आना लाजमी है। •

**अटलजी का शायद यह अंतिम साक्षात्कार था, जिसे उन्होंने हरिभूमि के समूह संपादक हिमांशु द्विवेदी को दिया था।**

# किया नहीं विध्वंस विश्व का, जीवन भर निर्माण किया है

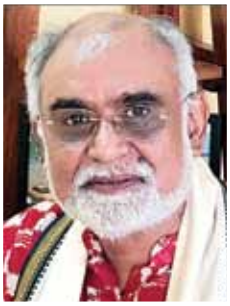

-डॉ. सच्चिदानंद जोशी

अट्टहासी रुद्र के विषपान की सौगंध ओ मां.... बचपन से ये पंक्तियां मन पर अंकित हैं। आठ वर्ष की उम्र थी और मैं सरस्वती शिशु मंदिर भोपाल में पढ़ता था। स्कूल का वार्षिक उत्सव था जिसमें काव्य पाठ का कार्यक्रम था। उन दिनों जोरदार आवाज में प्रार्थना करने में अग्रणी था इसलिये काव्य पाठ के लिये भी मेरा चयन हो गया। आचार्य जी ने कहा "काव्य पाठ करना है, ये पंक्तियां याद कर लो।" आचार्य जी का आदेश शिरोधार्य कर मैंने वो पंक्तियां कंठस्थ कर ली थीं। उस समय उन पंक्तियों का अर्थ भी समझ में नहीं आया था लेकिन उन पंक्तियों का ओज ऐसा प्रभावी था कि मेरा बालमन उसी ओज में बह गया।

*'अट्टहासी रुद्र के विषपान की सौगंध ओ मां*
*चारणों के सिद्ध गौरव गान की सौगंध ओ मां*
*हम बढ़ेंगे जाति के सम्मान की सौगंध ओ मां'*

इस कविता को पढ़ने के लिए स्कूल की काव्य गान प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला था। उसके बाद स्कूल के प्रमुख कार्यक्रमों में यह कविता पढ़ने के लिये विशेष रूप से बुलाया जाने लगा। एक बार नहीं कई बार इतना कि स्कूल में मित्रों ने और अध्यापकों ने मेरा नाम ही रख दिया "अट्टहासी"। तब तक इसके रचयिता का नाम मुझे नहीं मालूम था किसी ने इसके रचयिता का नाम पूछा तो बगले झांकने लगा बहुत शर्म आई फिर आचार्य जी से पूछा तो आचार्य जी ने बताया - श्री अटल बिहारी वाजपेयी!

**अटल जी से मिलने का अवसर आया चौंतीस साल बाद जब वो वर्ष 2005 में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के शुभारंभ के लिए आये। मैं उस समय विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त हुआ था। विश्वविद्यालय नया था और मैं उसका संस्थापक कुलपति कार्यभार ग्रहण करते ही मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने सूचना दी कि इसका उद्घाटन अटल जी के हाथों ही होगा।**

अटल जी का नाम तब से जुड़ गया था जीवन के साथ में। पिताजी ने बताया कि वे और अटल जी लश्कर ग्वालियर में संघ की एक ही शाखा में जाते थे। पिताजी ने उस समय अटल जी के साथ जुड़े काफी रोचक किस्से सुनाये थे अटल जी के बारे में आस्था और भक्ति पिताजी के संस्मरणों से और भी बढ़ गई। इच्छा थी कि एक बार अटल जी से मिल कर उनसे बात कर पाऊं। कई बार कोशिश की लेकिन अवसर नहीं मिला। अटल जी से मिलने की अभिलाषा मन में लिये ही मैं बाल से युवा हुआ और से प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ा।

अटल जी से मिलने का अवसर आया चौंतीस साल बाद जब वो वर्ष 2005 में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के शुभारंभ के लिए आये। मैं उस समय विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त हुआ था। विश्वविद्यालय नया था और मैं उसका संस्थापक कुलपति कार्यभार ग्रहण करते ही मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने सूचना दी कि इसका उद्घाटन अटल जी के हाथों ही होगा। अटल जी रविशंकर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में आने वाले थे। उसी समय कुशाभाऊ पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के उद्घाटन का कार्यक्रम भी तय हो गया। मन में आनंद भी था और भय भी एक महीने से भी कम का समय बचा था। कैसे होगा यह सब इसकी चिंता भी थी।

लेकिन खुशी भी थी कि इस समय तो अटल जी के दर्शन हो ही जायेंगे। अटल जी के साथ पहली मुलाकात के लिये मैंने बहुत मानसिक तैयारी कर ली थी। उनसे मिलने की बरसों की साध जो पूरी होने वाली थी। कितना कुछ सोच रखा था कि जब उनसे मिलूंगा, बात करूंगा तो उनसे ये कहूंगा, वो कहूंगा। लेकिन जब वे सामने आये तो मैं निःशब्द होकर बस उन्हें देखता ही रह गया। समझ में ही नहीं आया कि उनसे कैसे बात करूं, क्या बात करूं! अपने आप पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं अटल जी के सामने खड़ा हूं। वे जब विमान से नीचे उतरे तो हवाई पट्टी पर अन्य लोगों के साथ मेरा भी परिचय उनसे करवाया गया। मन हुआ कि झुक कर उनके चरण छू लूं। लेकिन प्रोटोकॉल के संकोच में रह गया। ऐसे अवसरों पर जाने का पहला ही मौका था इसलिये बहुत समझ भी नहीं थी। बाद में बहुत देर तक अपने आप पर गुस्सा भी आया।

राजभवन में रात्रि भोज पर मिला तो बस उन्हें ये बता पाया कि मैं सोमनाथ जी का पुत्र हूं। उनके चेहरे पर मुस्कान तैर गयी। उन्होंने पिताजी का स्मरण किया वे उनके अवसान के समाचार से अवगत थे। फिर अपनी चिरपरिचित शैली में मुस्कुराते हुये उन्होंने आशीर्वाद दिया- 'अच्छा काम करो। पिताजी का नाम रोशन करो।' उनका उतना आशीर्वाद काफी था जी-जान से विश्वविद्यालय के लिए जुट जाने को विश्वविद्यालय की स्थापना का काम रिकार्ड समय से पूरा हुआ और सारी गतिविधियां भी यथासमय प्रारंभ हो गईं कैसे न होतीं विश्वविद्यालय को प्रत्यक्ष अटल जी का आशीर्वाद जो मिला था। काम तो पूरा होना ही था कुछ वर्ष बाद जब विश्वविद्यालय का कुल गीत बनाने की बात आई तो और कोई विकल्प ही मन में नहीं आया। जिस विश्वविद्यालय की स्थापना अटल जी जैसे व्यक्ति के हाथों हुई हो उसका कुल गीत किसी और कवि का कैसे हो सकता है। बाद में तय करके विश्वविद्यालय का कुल गीत उनके गीत को ही बनाया गया - कदम मिला कर चलना होगा। इस गीत का एक-एक शब्द मन में उत्साह भरता है, प्रेरणा देता है। बाधाओं से मुकाबला कर उन पर विजय पाने का हौसला देता है।

बाधायें आती हैं आयें/घिरें प्रलय की घोर घटायें/पांव के नीचे अंगारे/सिर पर बरसे यदि ज्वालायें/निज हाथों से हंसते हंसते/ आग लगाकर जलना होगा/कदम मिलाकर चलना होगा/कदम मिलाकर चलना होगा

**अटल बिहारी वाजपेयी जैसे व्यक्ति सदियों में पैदा होते हैं। ऐसे दूरद्रष्टा, संवेदनशील व्यक्ति को देश के प्रधानमंत्री मे रूप में देखना हम सबके लिये सौभाग्य का क्षण था स्वतंत्रता के बाद यदि देश के सबसे लाडले व्यक्तित्व के बारे में सोचा जायेगा तो अटल जी का नाम उसमें सर्वोपरि होगा। मेरे जैसे न जाने कितने ही लोग होंगे जिन्होंने अटल जी को अपना आदर्श माना और उनका अनुसरण किया।**

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के शुभारंभ पर भी वे उपस्थित थे और कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर के शुभारंभ पर भी ये दोनों ही विश्वविद्यालय मेरे जीवन के अभिन्न अंग हैं। आज अटल जी द्वारा लगाए ये दोनों पौधे विशाल वृक्ष का आकार ले चुके है। इन दोनों विश्वविद्यालयों से जुड़ी अनेक मधुर स्मृतियां मेरे मन में अंकित हैं अटल जी की स्मृति उनमें प्रमुख है। दोनों विश्वविद्यालयों के उद्घाटक के रूप में अटल जी का नाम होना पत्रकारिता जगत के लिये गौरव की बात है।

अटल बिहारी वाजपेयी जैसे व्यक्ति सदियों में पैदा होते हैं। ऐसे दूरद्रष्टा, संवेदनशील व्यक्ति को देश के प्रधानमंत्री मे रूप में देखना हम सबके लिये सौभाग्य का क्षण था स्वतंत्रता के बाद यदि देश के सबसे लाडले व्यक्तित्व के बारे में सोचा जायेगा तो अटल जी का नाम उसमें सर्वोपरि होगा। मेरे जैसे न जाने कितने ही लोग होंगे जिन्होंने अटल जी को अपना आदर्श माना और उनका अनुसरण किया। इसलिये लगता है कि अटल जी हैं और सदा रहेंगे। उन्हें हमसे कोई जुदा नहीं कर सकता, काल भी नहीं। उनकी ये पंक्तियां उनके अपने जीवन पर कितनी सटीक बैठती हैं, मैं मधु से अनभिज्ञ आज भी/ जीवन भर विषपान किया है/ किया नहीं विध्वंस विश्व का/जीवन भर निर्माण किया है। •

**-लेखक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव हैं।**

# सचमुच 'बड़ा दिन' हो गया 25 दिसम्बर!

–प्रो. बल्देव भाई शर्मा

ऐसा अटल संतोष लेकर कितनों का जीवन पूर्ण हो पाता है? अटल जी विरल थे। उन्होंने जो किया और जैसा जिया उसका संतोष मौत से भी ठन जाने पर उन्हें विचलित नहीं होने देता था बल्कि अटल बनाए रखता था। वे मृत्युंजय होकर जिए, इसलिए ये पंक्तियां लखने लिखने की हिम्मत दिखा सके- मैं जी भर जिया \ मैं मन से मरूं \ लौटकर आउंगा \ कूच से क्यों डरूं। इसी अटल राग ने उनके जीवन को अर्थवान बनाया जो अमर आग बनकर अंतिम श्वास तक उनके अतःकरण में धधकता रहा।

उनकी जीवन दृष्टि बड़ी व्यापक थी, वस्तुतः उसी ने पूर्वजों की धरा आगरा के प्रसिद्ध तीर्थ बटेश्वर की पुण्यायी लेकर ग्वालियर में जन्में अटल बिहारी वाजपेयी बनाकर दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ कर दिया। कुछ लोग होते हैं जो पद पाकर प्रतिष्ठित होते हैं, अटल जी ने तो उस सिंहासन को न केवल सुशोभित किया, बल्कि नई पहचान और प्रतिष्ठा दी। प्रधानमंत्री होकर भी वह कितने सहज, निरहंकारी, नीतिज्ञ और दृढ़ थे, यह पूरी दुनिया ने देखा और आज उनके जाने के बाद विश्व भर में एक खालीपन सबको साल रहा है। आदमी इतना बड़ा केवल ज्ञान या योग्यता-क्षमता से नहीं होता, अटल जी की कविता की ये पंक्तियां यह रहस्य खोलती हैं- छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता। टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता। उन्होंने जो लिखा जो बोला उसे जिया। बड़ा बनकर ऐसा कितने लोग कर पाते हैं? उन्होंने वैसा किया और जिया, इसलिए वह अटल जी बन सके।

> कुछ लोग होते हैं जो पद पाकर प्रतिष्ठित होते हैं, अटल जी ने तो उस सिंहासन को न केवल सुशोभित किया, बल्कि नई पहचान और प्रतिष्ठा दी। प्रधानमंत्री होकर भी वह कितने सहज, निरहंकारी, नीतिज्ञ और दृढ़ थे, यह पूरी दुनिया ने देखा और आज उनके जाने के बाद विश्व भर में एक खालीपन सबको साल रहा है।

मुझे याद है उनके बड़प्पन का वह प्रसंग जब वह प्रधानमंत्री थे और पंडित माणिकचंद वाजपेयी उपाख्य मामाजी के जीवन के 75वर्ष पूर्ण होने पर उनका अमृत महोत्सव मनाने की योजना बनी। अटल जी की इच्छा पर प्रधानमंत्री निवास में यह आयोजन होना तय हुआ। मामाजी भी बटेश्वर के ही थे और ग्वालियर में बड़ी बहन के यहां रहकर पढ़े, बड़े हुए। अटल जी व मामाजी बाल सखा जैसे थे। मामाजी भी अच्छे पढ़-लिखकर अटल जी की तरह संघ के प्रचारक बन गए और एक मौन तपस्वी की तरह पूरा जीवन समाज सेवा में लगा दिया।

दोनों के जीवन का साम्य देखिए कि अटल ने एक संपादक के रूप में जिस दैनिक स्वदेश की लखनऊ में नींव डाली तो बाद में मध्य प्रदेश के इंदौर से प्रथम संपादक के रूप में स्वदेश का शंखनाद गुंजाया मामाजी ने। राष्ट्रीय भाव से ओतप्रोत पत्रकारिता के दोनों ही पुरोधा रहे। उन्हीं मामाजी का अमृत महोत्सव मना प्रधानमंत्री निवास मानो सबके लिए खोल दिया गया। मामा जी थे सबके दुलारे सो सब इस ऐतिहारिक अवसर के साक्षी बनना चाहते थे।

प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने मामाजी का सम्मान किया और अपने उद्बोधन में कहा कि हम दोनों में उम्र का कोई खास फर्क नहीं है, पर मामाजी त्याग और तप में मुझसे बड़े हैं। इसलिए प्रधानमंत्री पद का प्रोटोकॉल तोड़कर मामाजी के चरण छूकर मैं उनका आशीर्वाद लेना चाहता हूं। मामाजी थे संत भाव के व्यक्ति वह कुछ समझ पाते तब तक तो अटल जी माइक से हटकर मामाजी के पैर छूने को झुके और मामाजी ने खड़े होकर उनकी भेंट भर ली। यह दृश्य भुलाया नहीं जा सकता, सबकी आंखों से झर-झर आंसू बह चले। इतने वर्षों बाद यह प्रसंग याद कर लिखते समय भी मेरा मन भीग गया है। यह था अटल जी का बड़प्पन, यह दिखावा नहीं कि लोग उन्हें बड़ा मानें। वह सचमुच मन से बड़े थे, इसीलिए वह अटल जी थे।

मेरे बचपन से लेकर जिंदगी का शऊर सीखने तक की कितनी ही यादों में अटल जी बसे हैं, क्या-क्या याद करूं? उनके निधन पर मथुरा-अलीगढ़ के जागरण, डीएलए आदि अखबारों में छपी खबरों की कई कतरने उधर से लोगों ने मुझे व्हाट्सएप पर भेजी, जिनमें मथुरा जिले

के गांव पटलौनी में मेरे घर अटल जी के कई बार आने, मेरे पिताजी से मिलते रहने का जिक्र है। कुछ 'बड़े' बन गए मित्रों ने फोन पर पूछा भी कि आपके घर-गांव में अटल जी आपके पिताजी से मिलने आते थे, आपका उनसे ऐसा खास रिश्ता था, कभी बताया नहीं आपने। मैं हंसकर टाल गया, उन्हें क्या बताऊं कि अटल जी से मेरा रिश्ता जताकर खुद को कुछ खास बना लेने का नहीं, बल्कि गौरवानुभूति का था। **मेरी मां बताती हैं कि 60 के दशक में जब अटल जी घर आते थे तो मैं छोटा था, मुझे गोद में उठाकर उछाल देते थे और फिर लपककर पकड़ लेते थे। मैं डर जाता था कि गिर न जाऊं। यह हमारे ब्रज में बच्चों को लाड़ लड़ाने का अनोखा तरीका है। उसके बाद कम उम्र में (45वर्ष) ही मेरे पिता श्री मंगीलाल शर्मा का अचानक निधन हो गया। मथुरा से पूर्व विधायक हुकुमचंद तिवारी ने एक खबर में समाचार में बताया है कि अटल जी उनकी साइकिल पर बैठकर सादाबाद से पटलौनी मेरे बीमार पिता जी को देखने भी गए थे। और नहर की पटरी से साइकिल फिसलकर नहर में गिर गई। अटल जी की धोती फट गई। एसे गीले कपड़ों में ही वे मेरे घर गए।**

पिताजी बैरागी प्रवृत्ति के थे। किसान के घर में जन्म लेकर खेती-क्यारी से ज्यादा पढ़ने-लिखने में उनकी रूचि थी। अटल जी जब मथुरा में प्रचारक बनकर आए तो पिताजी से उनकी मित्रता घनिष्ठता में बदल गई। यह संबंध 1968 में पिता जी की मृत्यु तक बना रहा। पिताजी भी कवि और गायक मन के व्यक्ति थे, इसीलिए भी शायद दोनों का मन गहराई से जुड़ गया।

अटल जी जब दूसरी बार प्रधानमंत्री बने तब पाञ्चजन्य का स्वर्णजयंती वर्ष था। अटल जी पाञ्चजन्य के प्रथम संपादक रहे, मैं तब रायपुर से स्वदेश छोड़कर दिल्ली आ गया था और पूज्य सुदर्शन जी के आदेश पर पाञ्चजन्य में एसोसिएट एडीटर के रूप में कार्य करने लगा। फिक्की सभागार में बड़ा भव्य आयोजन था। यह हम सबके लिए बड़े गौरव की बात थी कि पाञ्चजन्य के प्रथम संपादक रहे अटल जी प्रधानमंत्री थे। वही स्वर्णजयंती समारोह के मुख्य अतिथि थे। आयोजन में दीप प्रज्ज्वलन व मंच व्यवस्था की जिम्मेदारी मुझे दी गई थी। मैं दीपस्तम्भ के पास माचिश व मोमबत्ती लेकर खड़ा था। वे आए और देखकर मुस्कराकर बोले अरे, तुम यहां भी हो। मैंने कहा सब आपका आशीर्वाद है, तो झट से बोले मेरा नहीं मंगीलाल जी का। तुम्हारे पिता सचमुच तपस्वी थे जो गृहस्थ होकर भी देश और समाज के लिए जिए। यह उनका बड़प्पन था कि अटल जी हमेशा दूसरों को अपने से बड़ा दिखाने का प्रयास करते थे चाहे मामाजी हो या मंगीलाल जी। अटल जी की यह सौम्यता व सहजता बड़ी प्रेरणादायक थी।

उसी रात को प्रधानमंत्री निवास पर उन्होंने रात्रिभाज दिया जिसमें पाञ्चजन्य के सब लोग व देशभर से समारोह में आए प्रमुख लोग आमंत्रित थे। अटल जी अधकांश लोगों के पास जा जाकर ये खाओ-वो खाओ का आग्रह कर रहे थे। मैं भी एक ग्रुप में साथ खड़ा हाथ में प्लेट लेकर खाना खा रहा था। वे हमारी तरफ

**अटल जी जब दूसरी बार प्रधानमंत्री बने तब पाञ्चजन्य का स्वर्णजयंती वर्ष था। अटल जी पाञ्चजन्य के प्रथम संपादक रहे, मैं तब रायपुर से स्वदेश छोड़कर दिल्ली आ गया था और पूज्य सुदर्शन जी के आदेश पर पाञ्चजन्य में एसोसिएट एडीटर के रूप में कार्य करने लगा। फिक्की सभागार में बड़ा भव्य आयोजन था। यह हम सबके लिए बड़े गौरव की बात थी कि पाञ्चजन्य के प्रथम संपादक रहे अटल जी प्रधानमंत्री थे।**

आए, संयोग से एक बैरा मुझे मिठाई देने के प्रयास में था। मैं मना कर रहा था, अटल जी ने देख लिया और एक गुलाब जामुन उठाकर मेरी प्लेट में रख दी, बोले मथुरा का पंडा होकर मिठाई को मना करता है। मैंने पूछा अटल जी आपको हमारे गांव की याद है। बोले कैसे भूल सकता हूं, तुम्हारे गांव पटलौनी का कर्ज है मेरे ऊपर, हैजे से तुम्हारे गांव ने मेरी जान बचाई। फिर उन्होंने मेरे गांव पटलौनी के दर्जनभर लोगों के नाम लेकर पूछा केसा, सेठ रामबाबू सेठ कैसे हैं, चौ. लक्ष्मीनारायण और बाबा रामप्रसाद कैसे हैं, मुझे आश्चर्य हुआ कि इतनी ऊंचाई पर पहुंचकर भी 40 साल बाद तक इन बातों को, लोगों को इतनी सहजता से अटल जी याद रखे हुए हैं। यह भावबोध ही अटल जी होना है।

आदरणीय शिवकुमार जी अंतिम श्वास तक उनकी छाया बनकर रहे हैं, उन्होंने पूरा जीवन अटल जी की देखभाल में लगा दिया। कुछ वर्ष पहले जब मैं पाञ्चजन्य में संपादक था, एक कार्यक्रम में मले तो बोले अरे कभी उधर आआ। एक दिन राकेश आर्य को साथ लेकर कृष्णा मेनन मार्ग गया, शिवकुमार जी से भेंट हुई। बड़े प्रसन्न हुए, उनका सब पर बड़ा सहज स्नेह रहता है। बोले अटल जी से मिल लो। राकेश आर्य ने कहा चलो मिल लेते हैं, पर मेरी हिम्मत नहीं पड़ी। सोचा जिन अटल जी को हुंकार भरते देखा है उन्हें मौन देखना मन सह नहीं पाएगा और मन पर बोझ सा लेकर चले आए। आज भी इसका पश्चाताप जरूर है कि काश उस दिन मिल लेते। अटल जी की जिजीविषा, ऊर्जस्विता ही उन्हे इतने दिन हम सबके बीच रखे रही। उन्हें जब भारत रत्न मिला तो मैंने लेख लिखा था आज 25 दिसम्बर सचमुच बड़ा दिन हो गया। 25 दिसम्बर को बड़ा दिन कहा जाता है पर वह है कहां बड़ा दिन, यह विज्ञान जानता है। अटल जी को जब 25 दिसम्बर को भारत रत्न मिला तब अटल जी। जब वह बोलते थे भारत जीता जागता राष्ट्र पुरुष है, हिमालय उसका मुकुट है....। तो भारत की अनुभूति करोड़ों हृदयों में साकार हो उठती थी। भारत ही उनका आराध्य था। वह उसी के लिए जिए। उन्होंने लिखा- दिन दूर नहीं खंडित भारत को पुनः अखंड बनाएंगे/ गिलगित से गारो पर्वत तक आजादी पर्व मनाएंगे। अटल यह संकल्प हमें पूरा करना है। और अटल जी के इस स्फुलिंग को कोटानिकोटि हृदयों में धधकाते रहना है। •

**अटल जी की जिजीविषा, ऊर्जस्विता ही उन्हे इतने दिन हम सबके बीच रखे रही। उन्हें जब भारत रत्न मिला तो मैंने लेख लिखा था आज 25 दिसम्बर सचमुच बड़ा दिन हो गया। 25 दिसम्बर को बड़ा दिन कहा जाता है पर वह है कहां बड़ा दिन, यह विज्ञान जानता है। अटल जी को जब 25 दिसम्बर को भारत रत्न मिला तब अटल जी। जब वह बोलते थे भारत जीता जागता राष्ट्र पुरुष है, हिमालय उसका मुकुट है....। तो भारत की अनुभूति करोड़ों हृदयों में साकार हो उठती थी।**

**-लेखक कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति हैं।**

# एक कवि राजनेता - अटल बिहारी वाजपेयी

-तेजेन्द्र शर्मा

*विपदाएं आती हैं आएं, हम न रुकेंगे, हम न रुकेंगे।*
*आघातों की क्या चिंता है? हम न झुकेंगे, हम न झुकेंगे।*

25 दिसंबर को विश्व ईसा मसीह का जन्मदिवस क्रिसमस के तौर पर मनाता है मगर इस दिन मेरे दो प्रिय हस्तियों का जन्मदिन भी होता है – एक तो डॉ. धर्मवीर भारती और दूसरे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी। यदि ख़ान मार्केट पत्रकारों को छोड़ दिया जाए तो जवाहर लाल नेहरू के बाद केवल अटल बिहारी वाजपेयी ही एक ऐसे भारतीय नेता हैं जिन्हें पूरे विश्व में सम्मान के साथ याद किया जाता है।

वाजपेयी जी कवि हृद्य व्यक्ति थे। यह तय कर पाना आसान नहीं कि वे पहले कवि थे या फिर राजनेता। मगर हाल ही में पत्रकार विनोद दुआ का एक वीडियो वायरल हुआ जो उन्होंने वाजपेयी जी के निधन पर जारी किया था। विनोद दुआ का कहना था कि, "भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का देहांत हो गया है। उनकी उम्र 93 साल थी। हमारे यहां एक बहुत बड़ा पाखंड होता है, दिखावा होता है कि जो दिवंगत हो जाए, जिसका देहांत हो जाए, उसको अचानक से महापुरुष बना दिया जाता है और फिर जिस तरह की श्रद्धांजलियां दी जाती हैं कि ये समझा जाता है कि दिस इज़ पॉलीटिकली करेक्ट, टू प्रेज़ अ पर्सन आफ्टर ही इज़ गॉन...

**वाजपेयी जी कवि हृदय व्यक्ति थे। यह तय कर पाना आसान नहीं कि वे पहले कवि थे या फिर राजनेता। मगर हाल ही में पत्रकार विनोद दुआ का एक वीडियो वायरल हुआ जो उन्होंने वाजपेयी जी के निधन पर जारी किया था।**

मैं इस टिप्पणी को दुखद ही कह सकता हं क्योंकि मेरा यह दावा है कि कोई भी व्यक्ति जो चाहे अटल बिहारी वाजपेयी को एक बार ही मिला होगा वह उनके प्रति आदर और स्नेह के भाव के अतिरिक्त और कोई भाव नहीं रख सकता। मुझे वाजपेयी जी को एअर इंडिया में यात्रा के दौरान मिलने का भी मौक़ा मिला था और उनके हाथों सम्मानित होने का भी। मगर सच तो यह है कि मैं स्कूल कॉलेज दिनों से ही उनका प्रशंसक था।

मुझे याद पड़ता है कि जब भाजपा का जन्म नहीं हुआ था, उन दिनों संगठन का नाम 'भारतीय जनसंघ' होता था। बलराज मधोक जनसंघ के बड़े नेता हुआ करते थे। उन्हीं दिनों जब चुनाव हो रहे थे तो देश में नारा लग रहा था, "इंदिरा गांधी के हाथ मज़बूत करो।"

इंडिया गेट के नज़दीक एक चुनावी रैली में पहली बार वाजपेयी जी को सुनने का सुअवसर मिला था। तब के युवा नेता वाजपेयी जी ने हाथ मज़बूत करने वाली गुहार का ख़ासा मज़ाक उड़ाया। मैंने पहली बार ऐसा नेता देखा था जो अपनी आवाज़ के साथ श्रोताओं को बहा ले जाने की सामर्थ्य रखता है।

राजनीति में ऐसा व्यक्ति विरला ही होता है जिस पर किसी तरह का विवाद न खड़ा हुआ हो। अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं को चाहे भाजपा की सोच से परेशानी होती हो, मगर वाजपेयी जी से निजी रूप से उन्हें कोई समस्या नहीं होती थी। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव तो वाजपेयी जी को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे।

यह शायद पहली बार हुआ होगा कि संयुक्त राष्ट्र में भारत का पक्ष रखने के लिये प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी को वहां भेजा। किसी भी विपक्षी नेता पर इतना भरोसा शायद किसी अन्य देश में भी नहीं दिखाई देगा।

# अटल स्मृतियां

97वीं जयंती पर विशेष

अपने व्यक्तित्व के बारे में वाजपेयी जी ने अपनी एक कविता में लिखा भी था...

*मेरे प्रभु !*
*मुझे कभी इतनी ऊंचाई न देना*
*ग़ैरों को गले न लगा सकूं*
*इतनी रुखाई*
*कभी मत देना।*

वाजपेयी जी की लोकप्रियता इस एक बात से आंकी जा सकती है कि उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में चार राज्यों के छः लोकसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व किया। इनमें शामिल थे – उत्तर प्रदेश के लखनऊ और बलरामपुर, मध्य प्रदेश के ग्वालियर और विदिशा, गुजरात के गांधीनगर और दिल्ली की नई दिल्ली संसदीय सीट।

युवा अटल बिहारी वाजपेयी को देख कर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि यह युवा नेता आगे चल कर देश का प्रधानमंत्री अवश्य बनेगा। 1977 में जब जनता पार्टी की सरकार बनी तो प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई ने अटल जी को अपना विदेश मंत्री बनाया। अटल जी का हिंदी प्रेम सर्व-विदित था। वे ऐसे पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र में अपना पहला भाषण हिंदी में दिया।

अटल जी ने जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव देखे थे। इन्हीं अनुभवों ने कवि अटल जी को लिखने को मजबूर किया:

*टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी*
*अन्तर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी*
*हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा,*
*काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूं*
*गीत नया गाता हूं...*

अटल जी को जब-जब मुझे एअर इंडिया की उड़ान में मिलने का मौका मिला तो उन्होंने मेरे लेखन में रुचि दिखाई। मेरी कहानी 'देह की कीमत' तो उन्होंने दिल्ली से मुंबई जाते हुए उड़ान में ही पढ़ ली थी। उन्हें हैरानी भी होती थी कि मैं एअरलाइन के अंग्रेज़ी माहौल में हिंदी में कैसे लिख पाता हूं। मैंने भी बहुत शालीनता से कहा, "सर आप तो राजनीति में हैं... वहां तो षड्यंत्र हो सकते हैं... आलोचनाएं हो सकती हैं... ऐसे में आप अपने भीतर के कवि को कैसे सक्रिय रख पाते हैं?"

अटल जी के कार्यकाल में ही शांतिदूत अटल जी ने पोखरण में भारत का पहला एटमी परीक्षण भी किया और भारत के अणु वैज्ञानिक डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को भारत का राष्ट्रपति भी नियुक्त किया। ख़ुशी की बात यह है कि दोनों ही नेताओं को भारत-रत्न से सम्मानित किया गया।

अटल जी संसद की गरिमा का सम्मान करने वाले एक ऐसे सच्चे इन्सान थे जो अपनी गद्दी ग़लत तरीकों से बचाने के स्थान पर इस्तीफ़ा देना अधिक पसंद करते थे। उन्हें विपक्ष का किरदार निभाना भी आता था और सत्तापक्ष का भी। जब विपक्ष में थे तो बांग्लादेश के युद्ध के समय इंदिरा गांधी को पूरा समर्थन दिया, जब प्रधान मंत्री थे तो कारगिल युद्ध के दौरान विपक्ष की घटिया राजनीति के विरुद्ध पाकिस्तान को सबक सिखाने में कामयाब रहे।

संसद में उनके भाषण किसी भी नये सांसद के लिये प्रेरणा का स्त्रोत हो सकते हैं। वे जब संसद में भी बोलते थे तो लगता था कि कविता झर रही है। उन्होंने अपने पूरे संसदीय जीवन में कभी कोई अशोभनीय बात नहीं कही।

वर्ष 2002 में गोधरा कांड के बाद गुजरात के दंगों को लेकर दुनिया भर में इस मुद्दे पर जोरदार बहस हुई थी। राजनीतिक गलियारों से लेकर मीडिया में इसको लेकर लंबे समय तक बहस होती रही। इसको लेकर अटल जी ने अपनी राय देते हुए प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री नरेंद्र मोदी को राज-धर्म की नसीहत दी थी... मगर जल्दी ही उन्हें हालात का सही अन्दाज़ा हो गया और उन्होंने कहा, "जो कुछ हुआ, बहुत बुरा हुआ। इसके बावजूद मैं मानता हूं कि अगर हिंदू जलाए नहीं जाते, तो बाद में जो हत्याकांड हुआ, वह नहीं होता।"

अटल बिहारी वाजपेयी ने सभी सांसदों के लिये कुछ ऐसे मानदण्ड स्थापित किये जिनका पालन करना आसान नहीं है। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच बस-यात्रा स्थापित करके पूरे विश्व में एक नया संदेश दिया कि देशों के बीच की समस्या कैसे सुलझाई जा सकती है। मगर उन्हें जब परवेज़ मुशर्रफ़ ने धोखा दिया तो उन्होंने देश को एकजुट किया और स्थिति को परिपक्वता से निपटा।

अटल बिहारी वाजपेयी रोज़-रोज़ पैदा नहीं होते। वे युगपुरुष होते हैं। हम भाग्यशाली हैं कि हम अटल बिहारी वाजपेयी को सुन पाए, देख पाए और उनसे बातचीत कर पाए। मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पलों में से एक था जब मेरे कहानी संग्रह 'ढिबरी टाइट' के लिये उन्होंने मुंबई में मुझे महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी सम्मान से अलंकृत किया।

यदि भारत का हर सांसद अपने व्यवहार में थोड़ा-थोड़ा अटल जी को शामिल कर ले तो भारत की संसद का स्तर पूरी तरह से बदल सकता है। अटल जी हम आपको याद करते हैं... नमन करते हैं। •

**-लंदन निवासी लेखक प्रसिद्ध साहित्यकार एवं पटकथा लेखक हैं।**

**अटल बिहारी वाजपेयी रोज़-रोज़ पैदा नहीं होते। वे युगपुरुष होते हैं। हम भाग्यशाली हैं कि हम अटल बिहारी वाजपेयी को सुन पाए, देख पाए और उनसे बातचीत कर पाए। मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पलों में से एक था जब मेरे कहानी संग्रह 'ढिबरी टाइट' के लिये उन्होंने मुंबई में मुझे महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी सम्मान से अलंकृत किया।**

# राष्ट्रीयता के सबसे प्रखर और मुखर स्वर अटल जी

–संजय द्विवेदी

अटलजी की समूची सार्वजनिक जीवन की यात्रा में भारत और देश-देशांतर को नापती हुयी उनकी अनेक छवियां हैं। पूरे भारत को उन्होंने मथ डाला था। सार्वजनिक जीवन में उपस्थित वे एक ऐसे यायावर थे जिनमें निरंतर संवाद करने की शक्ति थी। वे ही थे जो भाषणों से, लेखों से, कविताओं से और देहभाषा से देश को संबोधित करते और चमत्कृत करते आ रहे थे। हर व्यक्ति का एक समय होता है, जब वह शिखर पर होता है। लेकिन अटल जी का कोई समय ऐसा नहीं था जब वे घोर नेपथ्य में रहें हों। वे भारतीय प्रतिपक्ष के सबसे चमकदार नेता थे, जिसने कभी अपनी प्रासंगिकता नहीं खोयी। पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू से लेकर डा. मनमोहन सिंह को सत्ता सौंपने तक वे जीवंत, प्राणवान, स्फूर्त और प्रासंगिक बने रहे।

**भारतीय राजनीति में होते हुए भी अटल जी राजनीति की तंग सीमाओं से नहीं घिरे। वे व्यापक हैं, विस्तृत हैं और अपने विचारों में भारतीय जीवन मूल्यों का अवगाहन करते हैं। उनकी सोच पूरी सृष्टि के लिए है, वे भारत की आत्मा में रचे-बसे हैं।**

अटलजी भारतीय राष्ट्रवाद की सबसे प्रखर और मुखर प्रवक्ता थे। उन्होंने अपनी युवावस्था में जिस विचार को स्वीकार किया, उसका जीवन भर साथ निभाया। सही मायनों में वे विचारधारा के प्रति अविचल प्रतिबद्धता के भी उदाहरण हैं। एक विचार के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देने की भावना से वे ताजिंदगी लैस रहे। उन्होंने जो कहा उसे जिया और अपने जैसै हजारों लोग खड़े किए। एक पत्रकार, संपादक, लेखक, कवि, राष्ट्रनेता, संगठनकर्ता, संसदविद्, हिंदीसेवी, प्रखर वक्ता, प्रशासक जैसी उनकी अनेक छवियां हैं और वे हर छवि में पूर्ण हैं। इस सबके बीच उनकी सबसे बड़ी पहचान यही है कि वे भारतीय राष्ट्रवाद के हमारे समय के सबसे लोकप्रिय नायक हैं। वे अपने हिंदुत्व पर गौरव करते हुए भारतीयता की समावेशी भावना के ही प्रवक्ता हैं।

भारतीय राजनीति में होते हुए भी अटल जी राजनीति की तंग सीमाओं से नहीं घिरे। वे व्यापक हैं, विस्तृत हैं और अपने विचारों में भारतीय जीवन मूल्यों का अवगाहन करते हैं। उनकी सोच पूरी सृष्टि के लिए है, वे भारत की आत्मा में रचे-बसे हैं। इसीलिए वे हमें अपने जीवन से भी सिखाते हैं और वाणी से भी। उनकी वाणी, जीवन और कृति हमें भारतीयता का ही पाठ देते हैं। वे अपनी भाव-भंगिमा, सरलता और व्यवहार से भी सिखाते हैं। भारत उनकी वाणी में, उनकी सांसों में पलता है। भारतीयता को वे अपने तरीके से पारिभाषित करते रहे हैं। वे हिंदुत्व को उसके सही संदर्भों में समझते और व्याख्यायित करते हैं। अपनी कविता में वे लिखते हैं-

*मैं अखिल विश्व का गुरु महान, देता विद्या का अमरदान।*

*मैंने दिखलाया मुक्तिमार्ग, मैंने सिखलाया ब्रह्मज्ञान।*

*मेरे वेदों का ज्ञान अमर, मेरे वेदों की ज्योति प्रखर।*

*मानव के मन का अंधकार, क्या कभी सामने सका ठहर?*

अटलजी भारतप्रेमी हैं। वे भारतीयता और हिंदुत्व को अलग-अलग नहीं मानते। उनके लिए भारत एक जीता जागता राष्ट्रपुरूष है। वे अपनी कविताओं में प्रखर राष्ट्रवादी स्वर व्यक्त करते हैं। उनकी राजनीति भी इसी भाव से प्रेरित है। इसलिए उनका दल यह कह पाया- दल से बड़ा देश। राष्ट्र के लिए सर्वस्व अर्पित कर देने की भावना वे बार-बार व्यक्त करते हैं। भारत का सांस्कृतिक एकता और उसके यशस्वी भूगोल को वे एक कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं। वे लिखते हैं -

*भारत जमीन का टुकड़ा नहीं,/ जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।.....*

*इसका कंकर-कंकर शंकर है,/ इसका बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है।*

*हम जियेंगे तो इसके लिये,/ मरेंगे तो इसके लिये।*

अटलजी मूलतः कवि और पत्रकार हैं। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में थे और उन्हें पं. दीनदयाल उपाध्याय राजनीति में ले आए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वे प्रतिबद्ध स्वयंसेवक रहे। ताजिंदगी राष्ट्र प्रथम उनका जीवन मंत्र रहा। राजनीति की काली कोठरी में भी वे निष्पाप और निष्कलंक रहे। अपने

समावेशी भारतीय चरित्र की छाप उन्होंने राजनीति पर भी छोड़ी। गठबंधन सरकारों को चलाने का अनुपम प्रयोग किया। 1967 में संविद सरकारें बनीं, 1977 में जनता प्रयोग, नवें दशक में वीपी सिंह की जनता दल सरकार और बाद में वे खुद इस प्रयोग के सर्वोच्च नायक बने। वे पांच साल सरकार चलाने वाले पहले गैरकांग्रेसी प्रधानमंत्री बने। उनके व्यक्तित्व ने ही यह संभव किया था कि विविध विरोधी विचारों को साथ लेकर वे चल सके। लंबे समय तक प्रतिपक्ष के नेता के नाते उनकी भाषणकला, कविता का कौशल उनकी पूरी राजनीति पर इस तरह भारी है कि उनके राजनायिक कौशल, कूटनीतिक विशेषताओं और सुशासन की पहल करने वाले प्रशासक की उनकी अन्य महती भूमिकाओं पर नजर ही नहीं जाती। जबकि एक विदेशमंत्री और प्रधानमंत्री के नाते की गयी उनकी सेवाओं का तटस्थ मूल्यांकन और विश्लेषण जरूर किया जाना चाहिए। उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए हमें उनकी कई विशेषताओं का पता लगता है। अब समय आ गया है कि उनकी इन विशिष्टताओं का मूल्यांकन जरूर करना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को गुंजायमान करने के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। विदेश मंत्री के रूप में दुनिया के तमाम देशों के साथ उन्होंने जिस तरह से रिश्ते बनाए वे उन्हें एक वैश्विक राजनेता के तौर पर स्थापित करते हैं। प्रधानमंत्री के रूप में सड़कों का संजाल बिछाने और संचार क्रांति खासकर मोबाइल क्रांति के जनक के रूप में उन्हें याद किया जाना चाहिए। विकास और सुशासन उनके शासन के दो मंत्र रहे। यहां यह बात भी खास है कि उन्होंने भारतीय राजनीति को जाति और क्षेत्रवाद की गलियों से निकाल कर विकास और सुशासन के दो मंत्रों के आधार खड़ा करने की कोशिश की। एक राष्ट्रवादी व्यक्तित्व किस तरह राष्ट्र के बड़े सवालों को केंद्र में लाकर सामान्य मुद्दों को किनारे करता है वे इसके उदाहरण हैं।

**अटलजी भारतप्रेमी हैं। वे भारतीयता और हिंदुत्व को अलग-अलग नहीं मानते। उनके लिए भारत एक जीता जागता राष्ट्रपुरूष है। वे अपनी कविताओं में प्रखर राष्ट्रवादी स्वर व्यक्त करते हैं। उनकी राजनीति भी इसी भाव से प्रेरित है। इसलिए उनका दल यह कह पाया- दल से बड़ा देश। राष्ट्र के लिए सर्वस्व अर्पित कर देने की भावना वे बार-बार व्यक्त करते हैं।**

समन्वयवादी राजनीति और क्षेत्रीय आकांक्षाओं की पुष्टि करते हुए जिस तरह वे बिना विवाद के तीन राज्यों (उत्तराखंड, झारखंड और छत्तीसगढ़) का गठन करते हैं, वह भी उनके नेतृत्व कौशल का ही कमाल था। पोखरण में परमाणु विस्फोट उनकी राजनीतिक दृढ़ता का उदाहरण ही था। इसी के साथ प्रख्यात वैज्ञानिक डा.एपीजे अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति बनाकर उन्होंने यह साबित किया कि भारतीयता के नायकों को सम्मान देना जानते हैं और कहीं से संकुचित और कट्टर नहीं हैं। भारतीय राजनीति को उन्होंने यह भी संदेश दिया कि हमारे मुस्लिम समाज से हमें कैसे नायकों का चयन करना चाहिए? आप कल्पना करें कि अटल जी जैसा प्रधानमंत्री और डा. कलाम जैसा राष्ट्रपति हो तो विश्वमंच पर देश कैसा दिखता

रहा होगा। इसे अटल जी ने संभव किया। यह एक गहरी राजनीति थी और इसके राष्ट्रीय अर्थ भी थे। किंतु यह थी राष्ट्रीय और राष्ट्रवादी राजनीति।

काश्मीर के सवाल पर बहुत दृढ़ता से उन्होंने "जम्हूरियत, काश्मीरियत और इंसानियत" का नारा दिया। पाकिस्तान से बार-बार छल के बाद भी वे बस से इस्लामाबाद गए और बाद में कारगिल में उसे मुंहतोड़ जवाब भी दिया। लेकिन संवाद नहीं छोड़ा क्योंकि वे 'संवाद नायक' थे। किसी भी स्थिति में संवाद की कड़ी न टूटे, वे इस पर विश्वास करते थे। संवाद के माध्यम से हर समस्या हल हो सकती है, वे इस मंत्र पर भरोसा करते थे। उनकी बातें आज भी इसलिए कानों में गूंजती हैं। वे संकटों से मुंह फेरने वालों में नायकों में न थे। वे संवाद से संकटों का हल खोजने में भरोसा रखते थे। इसीलिए पिछले दस सालों का उनका मौन भी एक संवाद था। उनकी छः दशकों की तपस्या मुखर थी। भारत के लगभग हर शहर और तमाम गांवों तक फैली उनकी यादें, संवाद और भाषण लोगों की स्मृतियों में हैं।

वे नहीं हैं, पर हैं। दिल्ली ही नहीं, देश का हर नागरिक अगर उनकी अंतिम यात्रा में खुद को शामिल करना चाहता था तो यह भी अकारण नहीं था। पांच लाख लोग दिल्ली की सड़कों पर थे। देश के ताकतवर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अटलजी के तमाम अनुयायी राजपुरुष अगर पांच किलोमीटर पैदल चलकर उन्हें विदा देते हैं तो यह सामान्य बात नहीं है। उनके प्रति भावनाओं का ज्वार सिर्फ दिल्ली नहीं समूचे देश में था, जहां लोग टीवी चैनलों, मोबाइल की स्क्रीनों पर चिपके अपने प्रिय नेता की अंतिम यात्रा को देख रहे थे। यह भी साधारण नहीं था कि पिछले चौदह सालों से नेपथ्य में जा चुके एक नेता के लिए यह दीवानगी युवाओं में भी देखी गयी। ऐसे युवा जो अभी 18-20 के हैं, जिन्होंने अटलजी को न देखा है, न सुना है। उनके प्रधानमंत्री पद पर रहते ये युवा चार या पांच साल के रहे होगें। किंतु यह संभव हुआ और लोग खुद को उनसे जोड़ पाए। भारत रत्न अटल जी इस योग्य थे, इसलिए लोग उनसे खुद को संबद्ध(कनेक्ट) हो पाए। संवाद के अधिपति को खामोश देखकर, देश मुखर हो गया। देश की आंखें गीली थीं। प्रकृति ने उनकी अंतिम यात्रा के समय नम आंखों से विदाई दी। बारिश की बूंदें दिल्ली के दर्द में यूं ही शामिल नहीं हुयीं। राष्ट्रवादी नायक की विदाई पर समूचे राष्ट्र की आंखें पनीली थीं। अटल जी ने खुद का परिवार नहीं बसाया, किंतु उनकी अंतिम यात्रा ने साबित किया कि वे एक महापरिवार के महानायक थे। यह परिवार है- एक सौ पचीस करोड़ भारतीयों का परिवार। •

**-लेखक भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक हैं।**

काश्मीर के सवाल पर बहुत दृढ़ता से उन्होंने "जम्हूरियत, काश्मीरियत और इंसानियत" का नारा दिया। पाकिस्तान से बार-बार छल के बाद भी वे बस से इस्लामाबाद गए और बाद में कारगिल में उसे मुंहतोड़ जवाब भी दिया। लेकिन संवाद नहीं छोड़ा क्योंकि वे 'संवाद नायक' थे। किसी भी स्थिति में संवाद की कड़ी न टूटे, वे इस पर विश्वास करते थे।

# छत्तीसगढ़ का स्वप्न और मा. अटलजी

-राजीव रंजन प्रसाद

राज्य की अवधारणाओं को बहुधा नकारात्मकताओं के साथ देखा गया है अथवा उनके विनिर्माण की प्रक्रिया विवादास्पद रही है। तेलंगाना राज्य का निर्माण उदाहरण है। व्यापक असंतोष और संघर्ष को हमनें ज़मीनी स्तर पर और संसद में भी देखा है। इसके उलट वनवासी बहुल छत्तीसगढ़ राज्य, जिस सहिष्णुता के साथ गठित हुआ, इसके उदाहरण कम ही देखने को मिलते हैं। राष्ट्रीय नेतृत्व तब "हार नहीं मानूंगा, रार नयी ठानूंगा; काल के कपाल पर, लिखता मिटाता हूं; गीत नया गाता हूं' जैसी अनमोल पंक्तियों की सर्जना करने वाले हाथों में था। ऐसे हाथों में जिनकी भावुकता, रचनाशीलता, कर्मठता, दूरदर्शिता और निर्णय क्षमता ने बदलते हुए भारत की पटकथा लिखनी आरम्भ कर दी थी। माननीय अटल बिहारी बाजपेयी ने उस ओर ध्यान दिया जो देश के सर्वाधिक सघन वन क्षेत्रों को धारण करने वाला वनवासी बहुल परिक्षेत्र है, और जो, मध्य छत्तीसगढ़ की मैदानी भू-आकृति को उत्तर में सरगुजा और दक्षिण में बस्तर जैसे पर्वत पठारों में बसी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत से सम्बद्ध करता है। मध्यप्रदेश के साथ सह-सम्बद्ध रह कर छत्तीसगढ़ परिक्षेत्र को उपेक्षा प्राप्त होना स्वाभाविक था।

> अटल जी के दृष्टिकोण को समझने के लिए हमें स्वतंत्रता पश्चात की उन परिस्थितियों का रुख़ करना होगा, जब छत्तीसगढ़ अपनी विशिष्ट पहचान के बाद भी, कभी 'सी पी और बरार' के साथ तो कभी मध्यप्रदेश के साथ किसी प्रपत्र के अनुलग्नक की तरह संलग्न किया गया।

अटल जी के दृष्टिकोण को समझने के लिए हमें स्वतंत्रता पश्चात की उन परिस्थितियों का रुख़ करना होगा, जब छत्तीसगढ़ अपनी विशिष्ट पहचान के बाद भी, कभी 'सी पी और बरार' के साथ तो कभी मध्यप्रदेश के साथ किसी प्रपत्र के अनुलग्नक की तरह संलग्न किया गया। एकमेव यह गर्व ही तो पर्याप्त नहीं कि मध्यप्रदेश राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल बनाये गए थे, जिनकी आंचलिकता उन्हें छत्तीसगढ़ से जोड़ती थी। क्या डी पी मिश्रा से ले कर दिग्विजय सिंह तक के समय को विस्मृत किया जा सकता है, जब अंचल की मांगों और आवश्यकताओं से सम्बंधित फ़ाईलें भोपाल दौड़ती और वहीं की हो कर रह जातीं? वर्ष 1966 का वह गोलीकांड जिसमें बस्तर रियासत के अंतिम महाराजा प्रवीर चंद्र भंजदेव की हत्या कर दी गयी अथवा प्रशासनिक केंद्रों की दूरी वनांचलों के भीतर नक्सलवाद जैसे नासूर को प्रबल किया, इसे वृहद मध्यप्रदेश ने अनदेखा ही किया।

माननीय अटल बिहारी बाजपेयी के छत्तीसगढ़ निर्माण से जुड़ी दूरदृष्टि को समझने के लिये हमें इतिहास का रुख़ करना होगा। राष्ट्रीय पटल पर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण को ले कर अनेक प्रकार की भ्रांतियां हैं, चूंकि उत्तराखंड निर्माण आन्दोलन जैसी उग्रता छत्तीसगढ़ में विद्यमान नहीं थी। कोई भी सम्वेदनशील दूरदृष्टा ही वनवासी क्षेत्रों की महत्ता और उसकी स्निग्धता को समझ सकता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही लगभग वर्ष 1918 के आसपास छत्तीसगढ़ परिक्षेत्र की एक पृथक राज्य के रूप में संकल्पना साहित्यकार पं सुन्दरलाल शर्मा ने रख दी थी। जैसे-जैसे अंचल ने उपेक्षा के भाव को महसूस किया, एक अलग राज्य का दृष्टिकोण स्पष्ट आकार लेता गया। वर्ष 1955 में मध्यप्रदेश विधानसभा में रायपुर से तत्कालीन विधायक ठा. रामकृष्ण सिंह ने पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग की थी, जिसे अनदेखा कर दिया गया। वर्ष 1956 में राजनांदगांव में आयोजित 'छत्तीसगढ़ महासभा' ने राज्य की मांग को आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया था। छत्तीसगढ राज्य निर्माण की यह संकल्पना व्यावहारिक थी, किंतु लम्बे समय से मध्यप्रदेश राज्य में सत्ताधारी राजनीतिक दल कांग्रेस को भोपाल केंद्रितता में कुछ भी अनुचित प्रतीत नहीं हुआ। कहते हैं कि साहस केवल उस सूत्रधार के पास ही है जिसकी दृष्टि विशाल हो और जो समग्रता से परिस्थितियों की विवेचना कर सकता है। अटल जी ने वनवासी समाज की समस्याओं, अपेक्षाओं और राजनीति में उनकी हिस्सेदारी न होने के कारकों की समुचित विवेचना कर ली थी। यही कारण है कि वे नब्बे के दशक में ही इस बात के लिए आश्वस्त हो गए थे कि छत्तीसगढ़ को अलग राज्य बनाया जाना

चाहिए। कोई भी प्रशासक अपनी वनवासी सहृदयता को यदि वास्तव में मूर्त रूप देना चाहता है तो उसे आदिवासी जन के निकट जाना होगा। अधिक अधिकार सौपने होंगे। पारदर्शी-स्वायत्तता प्रदान करना होगा। छत्तीसगढ़ के संदर्भ में स्थानीयता और जनजातीय अस्मिता को सम्मान राज्य निर्माण के पश्चात ही दिया जा सकता था।

छत्तीसगढ़ महतारी की संकल्पना वह आधारशिला है जिसपर इस अंचल की विकास का वह पैमाना निर्मित हुआ; जिसकी बानगी डॉ. रमन सिंह शासित भाजपा सरकार के दौरान संकल्पित 'अटल नगर' में देखी जा सकती है। वर्ष 1999 के लोकसभा चुनावों के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण एक अनिवार्य मुद्दा बन कर उभरा। अटल जी ने सप्रे शाला मैदान में हुई अपनी विशाल जनसभा में घोषणा की थी कि आप छत्तीसगढ़ से भाजपा को ग्यारह सीटें दिलवाईये, राज्य निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा। छत्तीसगढ़ परिक्षेत्र से भाजपा को तब आठ सीटें मिली थी। केंद्र में कमल खिल गया था। माननीय अटल जी जैसे ही प्रधानमंत्री बने उन्होंने राष्ट्र निर्माण की अपनी संकल्पना को साकार करना आरम्भ कर दिया, जिसकी अनिवार्य कड़ी थी शासन को जनता के अधिकाधिक निकट ले जाना अर्थात अनिवार्य राज्यों का निर्माण। छत्तीसगढ़ राज्य की मांग को माननीय प्रधानमंत्री के समक्ष श्री बलीराम कश्यप, डॉ. रमन सिंह, श्री चंद्रशेखर साहू, श्री लखीराम अग्रवाल आदि के सक्रिय प्रयासों द्वारा मसौदे का स्वरूप दिया गया। समस्त कार्य आनन-फ़ानन में हुआ। दिनांक 31 जुलाई, 2000 को लोकसभा में एवं 9 अगस्त, 2000 को राज्यसभा में छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के प्रस्ताव पर मुहर लग गयी। इस तरह 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़, भारत वर्ष का छब्बीसवां राज्य बन कर मानचित्र में उभर गया। सार-संक्षेप यही कि मध्यप्रदेश की क्षेत्रीय वृहदता के भीतर छत्तीसगढ़ की हो रही उपेक्षा को तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी बाजपेयी ने न केवल समझा अपितु क्षेत्र को उसका वास्तविक अधिकार राज्य निर्माण कर प्रदान भी किया।

**छत्तीसगढ़ महतारी की संकल्पना वह आधारशिला है जिसपर इस अंचल की विकास का वह पैमाना निर्मित हुआ; जिसकी बानगी डॉ. रमन सिंह शासित भाजपा सरकार के दौरान संकल्पित 'अटल नगर' में देखी जा सकती है।**

छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर परिक्षेत्र में व्याप्त नक्सल समस्या को क्या कभी मध्यप्रदेश की सरकार ने इस दृष्टि से देखा था कि इसके पीछे के बुनियादी कारण क्या हैं? साठ के दशक में बस्तर में ब्यूरोक्रेट हो कर आए थे ब्रम्हदेव शर्मा, जिनका विचार था की सड़कों के बनाये जाने से जनजातीय क्षेत्र अपनी निजता खो देते हैं। उन्होंने अपने इस निजी विचार को नीति की तरह प्रतिपादित किया। वर्तमान बस्तर संभाग के बहुत बड़े हिस्से जिसे अबूझमाड़ के नाम से जाना जाता है, वहाँ के लिए प्रस्तावित सड़कों के काम को रुकवा दिया गया। अबूझमाड़ क्षेत्र में लोगों के प्रवेश पर रोक लगा दी गयी। मानो विदेशयात्रा करना है और पासपोर्ट-वीज़ा चाहिए; सभी भारतीय नागरिकों को इस क्षेत्र में भीतर जाने के लिए कलेक्ट्रेट से पास बनवाना अनिवार्य कर किया गया। अवहेलना पर अनेक नागरिकों और पत्रकारों को जेल की हवा भी खानी पड़ी। सौभाग्य से यह डॉ. रमन सिंह ने मुख्यमंत्री रहते हुए इस निर्णय की विभीषिका को समझा और आदेश को ख़ारिज करवाया। इन वर्षों में जो नुक़सान होना था, बहुत व्यापक था।

अबूझमाड़ के भीतर नक्सली आसानी से घुसे और उसे अपने आधार इलाक़ा की तरह प्रयोग करने में सफल हुए क्योंकि प्रशासन ने ही तब सड़कें बनने नहीं दी थीं। नागरिकों के प्रवेश निषेध के आदेश ने प्रशासन को विलोपित कर दिया। यह प्रशासनिक निर्णय आज तक छत्तीसगढ़

की पीड़ा बना हुआ है। यह माननीय अटल जी की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने सड़कों की महत्ता को गम्भीरतापूर्वक समझा और देश भर के गांवों को सौग़ात दी। प्रधानमंत्री सड़क योजना के अंतर्गत वे सभी गांव जोड़े जाने लगे जिनकी आबादी पांच सौ या अधिक थी। **बस्तर के परिप्रेक्ष्य में यह संख्या घटा कर 'ढाई सौ की आबादी' कर दिया गया। यह बहुत सोचा समझा और बड़ा कदम था जो आज बस्तर अंचल के विकास के रूप में स्पष्ट दिखाई पडता है।** बस्तर के छोटे छोटे गांव जब मुख्य सड़क से जुड़े तो वनवासी जन अपने उत्पादों के लिए बेहतर बाज़ार तलाश सके, शहर तक अपनी सहज पहुंच बना सके, साथ ही साथ नक्सलवाद को सिमटाने में भी इन्हीं सड़कों की भूमिका देखी जा सकती है। प्रधानमंत्री सड़क योजना से केवल बस्तर ही नहीं अपितु सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ लाभान्वित हुआ है।

छत्तीसगढ़ के निर्माण और विकास का जो सपना अटल जी ने देखा उसे अपने कार्यों और नीतियों से वे सतत प्रतिपादित भी करते रहे। भिलाई स्टील प्लांट के बाद जैसे इस दिशा में कोई नवीन उदाहरण सम्मुख प्रतीत नहीं होता। अटल जी ने इस राज्य के लिए अधिक बड़ा स्वप्न देखा। उनके ही द्वारा वर्ष 2002 में सुपर थर्मल बिजली घर बनाने की घोषणा की गयी थी। बिलासपुर जिले के सीपत में बनाया गया यह थर्मल पावर प्लांट एनटीपीसी लि. द्वारा 2980 मेगावाट क्षमता का निर्मित किया गया है। प्रदेश की विद्युत आत्मनिर्भरता के दावे में इसकी बड़ी भूमिका है। यह तो उनके द्वारा किए गए अनेक प्रगति प्रतिमानों में से एक उदाहरण भर है। अटल जी ने जन-जन से जुड़ने के दो रास्ते निकाले थे सड़क और शिक्षा। छत्तीसगढ़ यहां भी उनकी प्राथमिकता बना रहा। वर्ष 2004 में माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी ने छत्तीसगढ़ राज्य में तीन विश्वविद्यालयों की आधार शिला रखी। ये तीन विश्वविद्यालय हैं - कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर, तकनीकी विवि दुर्ग तथा पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विवि बिलासपुर। आज तीनों ही शिक्षा संस्थान नए मानक गढ़ रहे हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण एक पुरातन स्वप्न था जिसे माननीय अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा पूरा किया गया। यह प्रमुख कारण है की प्रदेश की जनता ने राज्य के पहले ही चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की सरकार गठित करने का मार्ग प्रशस्त किया जो क्रमिकता से अपने तीन गौरवशाली कार्यकाल को पूर्ण कर सका। अटल जी की ओजस्विता सर्वदा चर्चा में रही है किंतु उनकी दूरदृष्टि का सबसे बड़ा उदाहरण है छत्तीसगढ़ राज्य। मध्यप्रदेश से पृथक होने के बाद इस राज्य ने प्रगति के जितने सोपान चढ़े हैं उनमें अटल जी की सत्ता विकेंद्रित करने की सोच ही समाहित है। राज्य बनाने के बाद से शिक्षा, स्वास्थ्य और सड़क जैसे बुनियादी कदमों पर अधिक से अधिक ध्यान दिया गया क्योंकि अटल जी जन जन के थे और वे आख़िरी व्यक्ति की मूल आवश्यकता को पूरी भावुकता के साथ महसूस करते थे। अटल जी ने जो भी कार्य किए उसका अंतिम लक्ष्य ही राष्ट्र आराधन था। छत्तीसगढ़ महतारी को आपने जो सम्मान दिया इसके लिए प्रत्येक छत्तीसगढ़िया कृतज्ञ है, नतमस्तक है। अटल जी पर अपनी बात का अंत उनकी ही पक्तियों से कर रहा हूं, जो उनकी सोच को परिलक्षित करती है -

*जब तक ध्येय न पूरा होगा,*
*तब तक पग की गति न रुकेगी।*
*आज कहे चाहे कुछ दुनिया,*
*कल को बिना झुके न रहेगी।* •

प्रधानमंत्री सड़क योजना के अंतर्गत वे सभी गांव जोड़े जाने लगे जिनकी आबादी पांच सौ या अधिक थी। बस्तर के परिप्रेक्ष्य में यह संख्या घटा कर 'ढाई सौ की आबादी' कर दिया गया। यह बहुत सोचा समझा और बड़ा कदम था जो आज बस्तर अंचल के विकास के रूप में स्पष्ट दिखाई पडता है।

स्व. अटलजी, स्व. कुशाभाऊ ठाकरे, छगनलाल मुंदड़ा, एवं दुलीचंद, प्रजापति के साथ लेखक की एक दुर्लभ तस्वीर।

# हां...मैंने अटल जी का नमक खाया है

-अनिल पुरोहित

भारतीयता, राष्ट्रीयता, मानवता, सहृदयता और उदात्तता की भावभूमि पर सर्जना के स्वरों को मुखरित करके संसद और उसके बाहर पूरे देश को मंत्रमुग्ध करने वाले पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय स्व. अटलबिहारी वाजपेयी जी ने लगभग 55 वर्षों से देश की राजनीति को वैचारिक दृष्टि देकर सही दिशा का बोध कराने में अहम भूमिका का निर्वहन किया है, यह बात न केवल उनके दलीय समर्थक और प्रशंसक, अपितु उनके राजनीतिक विरोधी भी अंतर्मन से स्वीकार करते हैं। अपनी विशिष्ट राजनीतिक शैली और वाक्-पटुता के कारण अटलजी भारतीय राजनीति के अजातशत्रु हैं। भारतीय जनसंघ और फिर भारतीय जनता पार्टी और भारतीय राजनीति में अटलजी ने जो प्रतिमान गढ़े, वे एक युग का आदर्श हैं। अटलजी तेजी से खत्म होती जा रही ऐसे राजनीतिक नेताओं की पीढ़ी के महत्वपूर्ण सदस्य थे, जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में नैतिकता और सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया।

वस्तुतः अटलजी के संपूर्ण व्यक्तित्व को एक ओर जहां उनका कवि-मन प्रभावित करता था, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कार उन्हें सार्वजनिक जीवन में शुचिता के लिए प्रेरित करते थे। यही कारण है कि राजनीति के भदेस खेल न कभी वे खेल सके और न दूसरों को उन्होंने ऐसा करने दिया। 25 दिसंबर, 1924 को ग्वालियर स्थित शिंदे की छावनी में जन्मे अटलजी का संपूर्ण जीवन त्याग, शुचिता, नैतिकता, सच्चरित्रता और उदारता का प्रतीक है। न्यायप्रियता और अनुशासन के प्रति उनका आग्रह

**वस्तुतः अटलजी के संपूर्ण व्यक्तित्व को एक ओर जहां उनका कवि-मन प्रभावित करता था, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कार उन्हें सार्वजनिक जीवन में शुचिता के लिए प्रेरित करते थे। यही कारण है कि राजनीति के भदेस खेल न कभी वे खेल सके और न दूसरों को उन्होंने ऐसा करने दिया।**

अटलजी, के साथ लेखक के पिता।

बचपन से लेकर जीवन पर्यंत नजर आता है। रिश्तों की मर्यादा और उन्हें निभाने का व्यावहारिक दृष्टिकोण जो अटलजी में दिखाई देता था, वह बिरले ही नजर आता है। यही कारण है कि भाजपा के पितृ-पुरुष लालकृष्ण आडवाणी के साथ वे लगभग पांच दशक से अपने रिश्तों का निर्वहन निर्बाध रूप से करते रहे। रिश्तों की मर्यादा ऐसी कि परिवार के रिश्तों को राजनीति में इस्तेमाल नहीं किया और राजनीति के रिश्तों को परिवार तक नहीं खींचा। संघ के प्रचारक और एक राजनेता के रूप में भी उनकी भूमिका हमेशा अलग रही। संघ के संस्कार तो उन पर थे ही, लेकिन राजनीतिक सीमाओं और वास्तविकताओं को भी उन्होंने नजरंदाज नहीं किया। एक ओर संघ प्रचारक के रूप में उन्होंने सिद्धांतों की अलख जागाई तो दूसरी ओर उन सिद्धांतों की रक्षा करते हुए एक राजनेता के रूप में समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया। अटलजी का कवि-मन इन सारे रिश्तों का निर्वहन हर अवसर पर करता नजर आता है।

अटलजी के व्यक्तित्व के वैशिष्ट्य ने उन्हें विश्व राजनीति में भी एक विशेष महत्व प्रदान किया। अटलजी ने जितना देश के कोने-कोने को मंझाया है, विदेशों की यात्राएं भी उन्होंने उतनी ही की। गहन संकट के दिनों में जब भी भारत का पक्ष रखना होता, विश्व मंच पर उन्होंने ही भारत की ओर से मोर्चा संभाला था। अटलजी मानते थे कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। वे लोकतंत्र और वार्ता के द्वारा सकारात्मक समाधान की नीति पर निष्ठा रखते थे, शायद यही कारण है कि कारगिल की लड़ाई के दौरान उन्होंने प्रयत्नपूर्वक पाकिस्तान के साथ सीधे युद्ध की स्थिति को टालकर विश्व-शांति की नीति के प्रति भारतीय प्रतिबद्धता की पुष्टि की। अपने सार्वजनिक जीवन की इस गौरवशाली यात्रा में अटलजी का नित्य अभिनंदन और सम्मान होता रहा है। इनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय है, 25 जनवरी 1992 को उन्हें प्रदत्त पद्मविभूषण अलंकरण और बाद में 17 अगस्त 1994 को प्रदत्त सर्वश्रेष्ठ सांसद और फिर भारत रत्न का सम्मान। लेकिन इन सबके बावजूद उन्हें अहंकार स्पर्श तक नहीं कर सका। जब उन्हें सर्वश्रेष्ठ सासंद का सम्मान मिला, तब उन्होंने कहा था : 'मैं अपनी सीमाओं से परिचित हूं। मुझे अपनी कमियों का अहसास है। निर्णायकों ने अवश्य ही मेरी न्यूनताओं को नजरंदाज करके मुझे निर्वाचित किया है। सद्भाव में अभाव दिखाई नहीं देता। यह देश बड़ा अद्भुत है, अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा सकता है, अभिनंदन किया जा सकता है।' इस विनम्रता के साथ ही उन्होंने संसदीय गरिमा के प्रति भी सचेत किया था।

> अटलजी के व्यक्तित्व के वैशिष्ट्य ने उन्हें विश्व राजनीति में भी एक विशेष महत्व प्रदान किया। अटलजी ने जितना देश के कोने-कोने को मंझाया है, विदेशों की यात्राएं भी उन्होंने उतनी ही की। गहन संकट के दिनों में जब भी भारत का पक्ष रखना होता, विश्व मंच पर उन्होंने ही भारत की ओर से मोर्चा संभाला था।

**स्मृति-पटल पर अंकित सतत स्मरणीय क्षण...**

श्रद्धेय अटलजी यूं तो उससे पहले भी अनेक बार छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों पर प्रवास कर चुके थे, लेकिन 1979 में जनता सरकार के पतन के बाद रायपुर में हुई सभा में पहली बार उनको

प्रत्यक्ष सुनने का मौक़ा मुझे मिला था। **1977 में विदेश मंत्री बनने के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ में उनका हिन्दी में दिया भाषण काफी चर्चा में था। उस भाषण के कुछ अंश उन दिनों सिनेमाघरों में फिल्म शुरू होने के पहले ट्रेलर के तौर पर दिखाए जाते थे और मैं वह सुनने-देखने रोज सिनेमाघर पहुंच जाता और गेटकीपर से अनुनय-विनय करके बस दो-ढाई मिनट का वह ट्रेलर गेट पर ही खड़े-खड़े देख-सुनकर वापस लौट आता।** सन् 1980 में भारतीय जनता पार्टी के गठन के बाद जुलाई माह के दूसरे पखवाड़े (संभवतः 18 से 20 जुलाई, 1980) में रायपुर में रेलवे स्टेशन के पास स्थित गुर्जर क्षत्रिय धर्मशाला में अविभाजित मध्यप्रदेश के भाजपा कार्यकर्ताओं का तीन दिनों का अभ्यास वर्ग आयोजित था। इस निमित्त श्रद्धेय स्व. अटल जी राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते पूरे समय मार्गदर्शन के लिए रायपुर आए थे। अटल जी के लिए इसी धर्मशाला के ठीक बाजू में स्थित सत्यनारायण धर्मशाला में एक कक्ष विश्रामादि के लिए आरक्षित था। बैठक के तीन-चार सत्रों में उनका मार्गदर्शन मिला और उसी दौरान रायपुर में उनकी एक विशाल जनसभा भी हुई थी। वर्ग के पहले दिन अपराह्न में रायपुर रेल्वे स्टेशन के पास स्थित सत्यनारायण धर्मशाला में उनकी पत्रकार वार्ता हुई थी। वार्ता के दौरान पार्टी के पितृ-पुरुष श्रद्धेय स्व. कुशाभाऊ ठाकरे जी (चित्र में अटलजी की दायीं ओर) के साथ ही भाजपा की तत्कालीन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमंत राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी भी उपस्थित थीं।

1977 में विदेश मंत्री बनने के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ में उनका हिन्दी में दिया भाषण काफी चर्चा में था। उस भाषण के कुछ अंश उन दिनों सिनेमाघरों में फिल्म शुरू होने के पहले ट्रेलर के तौर पर दिखाए जाते थे और मैं वह सुनने-देखने रोज सिनेमाघर पहुंच जाता और गेटकीपर से अनुनय-विनय करके बस दो-ढाई मिनट का वह ट्रेलर गेट पर ही खड़े-खड़े देख-सुनकर वापस लौट आता।

पत्रकार वार्ता के बाद अटलजी अपनी बायीं ओर बैठीं श्रीमंत राजमाता जी से किसी विषय पर गंभीर मंत्रणा कर रहे थे, तभी शुभचिंतक छायाकार स्व. बीएल डूंभरे ने चित्र क्लिक किया था, जो मेरे लिए एक अनमोल धरोहर है। तब मैं महाविद्यालयीन अध्ययन के साथ ही रायपुर से प्रकाशित होने वाले हिन्दी दैनिक 'युगधर्म' से पत्रकारिता के क्षेत्र से बतौर संवाददाता जुड़ा था। उस वर्ग के लिए भाजपा ने अविभाजित रायपुर ज़िले के कुछ चुनिंदा कार्यकर्ताओं को वर्ग की व्यवस्था में सहयोग के लिए चयनित कर बुलवाया था। इनमें से एक मैं भी था और मुझे अटलजी के सेवा-सत्कार व विश्राम आदि की व्यवस्था करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। स्व. डूंभरे जी द्वारा खींची गई इस तस्वीर में मैं सबसे दायें बैठा नज़र आ रहा हूँ और मेरी बायीं ओर पीछे की तरफ़ पूर्व पार्षद स्व. दुलीचंद जी प्रजापति और स्व. ठाकरे जी की दायीं ओर बैठे सीएसआईडीसी के पूर्व अध्यक्ष श्री छगनलाल मूंदड़ा दिखाई दे रहे हैं।

इस वर्ग में अविभाजित मध्यप्रदेश भाजपा के सभी वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता उपस्थित थे, जिनमें पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी जी, वीरेंद्रकुमार सखलेचा जी व सुंदरलाल पटवा जी के साथ प्यारेलाल जी खंडेलवाल, गोविंद सारंग जी, कैलाश सारंगजी, राजेंद्र धारकर जी, सत्यनारायण सत्तन जी सहित मप्र भाजपा के सभी पदाधिकारी, तत्कालीन विधायक, सांसद, पूर्व मंत्री-सांसद-विधायक आदि उल्लेखनीय हैं। तब रायपुर के ही वामपंथी विचारों के माने-जाने वाले एक दैनिक अख़बार ने समाचार छापा था- 'तीन पूर्व मुख्यमंत्री बनियान पहने, एक साथ, एक कमरे में।' उसी समाचार पत्र ने श्रीमंत राजमाता जी का एक साक्षात्कार भी ट्विस्ट करके छापा था और भाजपा नेताओं में भ्रम पैदा करने की असफल कोशिश की थी। अटलजी तक यह बात पहुंची तब पत्रकार वार्ता के बाद उन्होंने राजमाता जी से इस संबंध में चर्चा कर इसका समाधान कर दिया, लेकिन आमसभा में 'तीन पूर्व मुख्यमंत्री बनियान पहने, एक साथ, एक कमरे में' वाले समाचार को लेकर चुटकी ली और कहा कि यह दृश्य केवल भाजपा में ही दिख सकता है, क्योंकि हम एक परिवार-भाव के साथ साथ-साथ जीने और काम करने की कला जानते हैं।

संभवतः दूसरे दिन रात को सत्यनारायण धर्मशाला में ही अटल जी के सान्निध्य में एक कवि गोष्ठी हुई, जिसमें भाजपा के कवि-हृदय राजनेताओं ने अपनी रचनाओं से वर्ग में शामिल सभी कार्यकर्ताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इंदौर के सत्यनारायण सत्तन जी ने क्रांतिकारियों भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को दी जाने वाली फांसी की से एक रात पहले का वर्णन अपनी कविता में करके सभी के नयन सजल कर दिए थे। बाद में वर्ग के समापन सत्र में कार्यकर्ताओं के आग्रह पर अटल जी की उपस्थिति में सत्तन जी ने वह कविता फिर सुनाई। समापन सत्र के बाद अटल जी अपने कक्ष से गुर्जर

धर्मशाला में भोजन के लिए निकले तो अपना दायित्व-निर्वहन करता मैं उनके साथ था।

वर्ग के लिए मिली पार्टी की प्रवेशिका मेरे कुर्ते पर लगी थी और चलते-चलते अटल जी ने उस पर अंकित नाम अनिल पुरोहित कहकर पढ़ा तो मैं गदगद हो गया! इसी के बाद भोजन के लिए पंगत में बैठे अटलजी के ठीक बाजू में एक स्थान रिक्त था और यह देख मैं अटल जी के साथ भोजन करने बैठ गया। भोजन परोसते समय कार्यकर्ता ने उनकी थाली में नमक परोसा, अटल जी ने मुझसे कहा, कार्यकर्ता नमक ज़्यादा परोस गया है। मैं तत्काल उनकी थाली का नमक अपनी थाली में लेने लगा तो मुस्कुराकर कहने लगे- अरे भाई, थोड़ा मेरे लिए भी छोड़ दो। अपनी थाली में लिया वह नमक मैंने जूठा नहीं छोड़ा। किसी और की तो नहीं कह सकता, मुझे तबसे आजतक इस बात का गर्व है कि मैंनें अटलजी का नमक खाया है और यह गर्व जीवन पर्यंत रहेगा।

**ओड़िशा जाते हुए अटलजी का सान्निध्य जब बागबाहरा के कार्यकर्ताओं को मिला**

मेरे पू. पिताश्री श्रद्धेय स्व. देवकृष्ण पुरोहित जी प्रसंगवश चर्चा के दौरान अटल जी के छत्तीसगढ़ प्रवास के बारे में बताया करते थे। एक बार अटल जी रेल से प्रवास कर रहे थे। उसी ट्रेन से पिताजी भी दूसरी बोगी में यात्रा कर रहे थे। जनसंघ के एक पदाधिकारी द्वारा दिए गए दायित्व का निर्वहन करते हुए पिताजी हर रेल्वे स्टेशन पर उतरकर अटलजी के पास जाते और उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखते। यह संभवतः 1962 के आसपास का कालखंड था। अटलजी की बिलासपुर में सभा थी। पिताजी बताते थे कि सभा से पहले विश्राम के क्षणों में एक कमरे में ज़मीन पर बैठकर वे कोई रचना लिपिबद्ध कर रहे थे। जैसा पिताजी बताते थे, छत्तीसगढ़ के बिलासपुर को यह गौरव हासिल है कि 'जीता-जागता राष्ट्रपुरुष' अटलजी ने सबसे पहले बिलासपुर की सभा में सुनाया था।

मार्च, 1995 में ओड़िशा (तब उसे उड़ीसा कहा जाता था) राज्य में विधानसभा चुनाव के मद्देनज़र भारतीय जनता पार्टी की चुनावी सभाएं लेने के लिए अटलजी कार द्वारा रायपुर से निकले तो रास्ते में पड़ने वाले मेरे गृहनगर बागबाहरा (छत्तीसगढ़) के अनेक भाजपा कार्यकर्ताओं ने अभिभूत होकर उनका भावभीना अभिनन्दन किया! उनमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता, विचारक-पत्रकार और मेरे पूज्य पिताश्री श्रद्धेय स्व. देवकृष्ण पुरोहित जी के अलावा स्व. गोपालदास व्यास जी, स्व. नंदकिशोर अग्रवाल जी, स्व. गजेंद्र तिवारी जी, स्व. नानालाल चौहान जी, स्व. नरेंद्र अग्रवाल जी, स्व. शांतिकुमार शुक्ला जी, गिरधर सारडा, किशोर बागानी, विवेकानंद सिंह ठाकुर, पुरुषोत्तम कुंजेकार समेत भाजपा-भाजयुमो के पदाधिकारी व कार्यकर्ता काफी संख्या में थे। जोश से भरे कार्यकर्ता गगनभेदी नारों से उनका स्वागत कर रहे थे। 'प्रधानमंत्री की अगली बारी, अटलबिहारी-अटलबिहारी' नारा सुनकर अटलजी ने अपनी चिर-परिचित विनोद की शैली में कहा- 'वह बारी जब आएगी, तब आएगी, अभी तो भोजन की बारी है। भूख लगी है, भोजन की कोई व्यवस्था है?' संयोग से स्व. नरेंद्र अग्रवाल का निवास मुख्यमार्ग पर स्वागत स्थल के एकदम क़रीब था और उसी दिन उनके घर पर उनके पुत्र श्री राहुल अग्रवाल (जो उस समय बागबाहरा के सरस्वती शिशु मंदिर में प्राथमिक विभाग में पढ़ रहे थे और वर्तमान में इसी विद्यालय की संचालन समिति के सचिव/व्यवस्थापक का दायित्व सम्हाल रहे हैं) के जन्मदिन पर पारिवारिक उत्सव और भोजन का कार्यक्रम था। कार्यकर्ताओं के आग्रह पर अटलजी पैदल अग्रवाल-निवास पहुंचे और लगभग पौन घंटे वहां भोजनादि के लिए रुके। इसी समय उनकी नज़र मेरे पिताश्री पर पड़ी। स्लिपडिस्क के कारण मेरे पिताजी चलने-फिरने में संतुलन बनाए रखने के लिए बेंत का सहारा लेते थे। आपातकाल में नज़रबंदी के दौरान अटलजी को भी स्लिपडिस्क के कारण शारीरिक कष्ट उठाना पड़ा था। पिताजी की वरीयता व स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अटलजी ने उन्हें संकेत करके बुलाया और अपने पास ही बैठने को कहा। उसी दौरान कैमरे की मदद से यह यादगार पल सहेजा गया था जिसमें पिताजी अटलजी के ठीक दायीं ओर बैठे दिख रहे है। इस प्रवास के लगभग सवा साल बाद ही अटलजी ने सन् 1996 में पहली बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। श्रद्धेय अटल जी की पावन स्मृतियों को कोटिशः नमन!! •

अटल जी ने मुझसे कहा, कार्यकर्ता नमक ज़्यादा परोस गया है। मैं तत्काल उनकी थाली का नमक अपनी थाली में लेने लगा तो मुस्कुराकर कहने लगे- अरे भाई, थोड़ा मेरे लिए भी छोड़ दो। अपनी थाली में लिया वह नमक मैंने जूठा नहीं छोड़ा। किसी और की तो नहीं कह सकता, मुझे तबसे आजतक इस बात का गर्व है कि मैंनें अटलजी का नमक खाया है और यह गर्व जीवन पर्यंत रहेगा।

# अटलजी की आपातकालीन कविताएं

-प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार भगत

अभिव्यक्ति मानव का नैसर्गिक स्वभाव है। इसकी स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखना लोकतांत्रिक सरकार की सबसे बड़ी कसौटी है। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में सन् 1975 में पहली बार आपातकाल की घोषणा के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया गया। आपातकाल की काल-कोठरी में कानून के नाम पर प्रशासन ने अकांड तांडव मचाया। हजारों-हजार कलमकारों को रातों-रात जेल के सींखचों के अंदर बंद कर दिया गया। रचनाकार कराह उठे। फिर रचनाकारों की लेखनी लहूलुहान होकर कोरे कागज को लाल करने लगी।

सन् 1974 के बिहार-आंदोलन और उसके बाद 25 जून, 1975 को घोषित आपातकाल के दौरान साहित्यकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस आंदोलन के दौरान पहली बार साहित्यकार नुक्कड़ों पर उतरे और भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शैक्षणिक अराजकता और महंगाई के खिलाफ आवाज बुलंद की। संपूर्ण क्रांति के पुरोधा पुरुष लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने न सिर्फ स्वयं कविताएं लिखीं, अपितु एहसास भी किया कि इसमें जन-जागरण की अद्भुत क्षमता है। उस समय देश के सैकड़ों कवियों ने तानाशाही सरकार के खिलाफ लेखनी उठाई और अग्निवर्षा की।

**सन् 1974 के बिहार-आंदोलन और उसके बाद 25 जून, 1975 को घोषित आपातकाल के दौरान साहित्यकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस आंदोलन के दौरान पहली बार साहित्यकार नुक्कड़ों पर उतरे और भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शैक्षणिक अराजकता और महंगाई के खिलाफ आवाज बुलंद की।**

सुप्रसिद्ध राजनेता और कविश्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आपातकाल के दौरान जेल की यातना भोगते हुए 'कैदी कविराय की कुंडलिया' नाम से कविता-पुस्तक लिखी है। उन्होंने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और काव्य-रचना की। कविवर वाजपेयी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कुठाराघात किए जाने की घटना से मर्माहत हुए। उनकी काव्य-सर्जना में आपातकाल का जोरदार विरोध देखा जा सकता है। आजादी की दूसरी लड़ाई के रूप में प्रतिष्ठित आपातकाल-विरोधी आंदोलन के हर पहलू को उन्होंने अपनी कविताओं में चित्रित किया है। उनका आपातकालीन साहित्य व्यापक और गहरी पैठ बनाने में समर्थ हुआ है।

कविवर अटल बिहारी वाजपेयी ने आपातकाल की तानाशाही प्रवृत्ति से उपजी पीड़ा और कसक को अपनी कुंडलिया में अभिव्यक्त किया है। वरिष्ठ पत्रकार श्री दीनानाथ मिश्र ने उनकी कुंडली 'मीसा तंत्र महान्' पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा है-''ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शस्त्रागार का एक अंधा हथियार था रोलट एक्ट। मीसा यानी आंतरिक सुरक्षा कानून अपने उस पुरखे से कहीं ज्यादा खूंखार और धारदार हथियार साबित हुआ। आपातकाल में देश ने मीसा को हर गली-कूचे में टहलते देखा था। और जब श्रीमती गांधी गद्दी की रक्षा के लिए न्याय और औचित्य की क्षमता से परे हो गईं, तब यह दायित्व मीसा ने संभाला।'' सत्ता की तानाशाही प्रवृत्ति के प्रलय-नृत्य का चित्रण उनकी इस कविता में हुआ है-

*दोषी औ' निर्दोष में, जिसकी दृष्टि समान;*
*वीजा है वह जेल का, मीसा तंत्र महान;*
*मीसा तंत्र महान, राजगद्दी का रक्षक;*
*इंद्राणी को लेकर, स्वाहा होगा तक्षक;*
*कह कैदी कविराय, मार मीसा की भारी;*
*रोलट की संतान, त्रस्त है जनता सारी।*

आपातकाल में तानाशाही और स्वेच्छाचारिता काफी बढ़ गई थी। श्री वाजपेयी ने अपनी कुंडलिया 'कार्ड की महिमा' में चिट्ठियों को भी सेंसर डेस्क से गुजरने की बात कही है। उस समय तो पत्र-पत्रिकाओं पर सेंसर लगा ही था, किंतु चिट्ठियों तक पर सेंसर लगाकर तानाशाही के पंजों को सख्त बना दिया गया था। स्वतंत्रता नाम की कोई चीज नहीं रह गई थी। आदमी को निहायत बौना और तुच्छ समझा जाने लगा था। पुलिस-प्रशासन के अनाचार को सूचित करती उनकी निम्नलिखित काव्य-पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

*पोस्ट कार्ड में गुण बहुत, सदा डालिए कार्ड;*
*कीमत कम, सेंसर सरल, वक्त बड़ा है हार्ड;*
*वक्त बड़ा है हार्ड, सँभलकर चलना भैया;*
*बड़े-बड़ों की फूँक सरकती, देख सिपहिया;*
*कह कैदी कविराय, कार्ड की महिमा पूरी;*
*राशन, शासन, शादी, व्याधी, कार्ड जरूरी।*

पुत्रमोह में फंसी तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी की तानाशाही को रेखांकित किया गया है 'छोटे सरकार' नामक कुंडलिया में। यहां छोटे सरकार श्री संजय गांधी का प्रतीक है, जिनका कद दिल्ली दरबार में उन दिनों तेजी से बढ़ने लगा था। राजकाज के निर्णयों में उन्हें प्रमुखता दी जाने लगी थी। केंद्रीय मंत्रियों और राज्य के मुख्यमंत्रियों को उनके आदेश की अवहेलना करना भारी पड़ने लगा था। लोकशाही पर तानाशाही की सवारी और परिवारवाद की आंच में जलती व्यवस्था से संदग्ध कविमन की पीड़ा निम्नलिखित पंक्तियों में उजागर हुई है-

*सब सरकारों से बड़े हैं छोटे सरकार;*
*गुड्डी जिनकी चढ़ रही, दिल्ली के दरबार;*
*दिल्ली के दरबार, बुढ़ापा खिसियाता है;*
*पूत सवाया सिंहासन, चढ़ता आता है;*
*कह कैदी कविराय, लोकशाही की छुट्टी;*
*बेटा राज करेगा, पीकर मुगली घुट्टी।*

कवि अटल बिहारी वाजपेयी जी 'पुनः चमकेगा दिनकर' शीर्षक कुंडलिया में निराशा और नाउम्मीद के समुद्र में गोता लगाकर भी आशा, आस्था और विश्वास के जगमगाते दीप निकाल लाए हैं। कविवर वाजपेयी का अटल विश्वास जनजीवन को ललकारता है। 'चीर निशा का वक्ष, पुनः चमकेगा दिनकर' कहकर कवि ने असत्य पर सत्य की विजय के प्रतीक को सुचित्रित किया है। कारागर में लंबे समय तक कैद रहकर भी नैराश्य का भाव उनके इर्द-गिर्द भी फटकता नजर नहीं आता है। उनकी निम्नलिखित रचना द्रष्टव्य है -

*आजादी का दिन मना, नई गुलामी बीच;*
*सूखी धरती, सूना अंबर, मन आंगन में कीच;*
*मन आंगन में कीच, कमल सारे मुरझाए;*
*एक-एक कर बुझे दीप, अंधियारा छाए;*
*कह कैदी कविराय, न अपना छोटा जी कर;*
*चीर निशा का वक्ष, पुनः चमकेगा दिनकर।*

'महाभारत होता है' शीर्षक कुंडलिया में भी कवि ने मिथक का प्रयोग कर जनजीवन को ललकारा है। 'सत्यमेव जयते' की अखंड परंपरा को उद्धृत कर उन्होंने सत्ता की तानाशाही

**कवि अटल बिहारी वाजपेयी जी 'पुनः चमकेगा दिनकर' शीर्षक कुंडलिया में निराशा और नाउम्मीद के समुद्र में गोता लगाकर भी आशा, आस्था और विश्वास के जगमगाते दीप निकाल लाए हैं। कविवर वाजपेयी का अटल विश्वास जनजीवन को ललकारता है। 'चीर निशा का वक्ष, पुनः चमकेगा दिनकर' कहकर कवि ने असत्य पर सत्य की विजय के प्रतीक को सुचित्रित किया है। कारागर में लंबे समय तक कैद रहकर भी नैराश्य का भाव उनके इर्द-गिर्द भी फटकता नजर नहीं आता है।**

के खिलाफ संघर्ष की प्रेरणा दी है। कवि ने स्मरण दिलाया है कि अत्याचारी कंस की ही मौत मारा जाता है। पाप का घड़ा भर जाने से कवि का तात्पर्य अत्याचार, अनाचार के अंत होने से है। आपातकाल जैसी अंधी सुरंग की स्थिति में भी कवि में आशावादी दृष्टि विद्यमान है। तभी तो उनकी ललकार दिग्दिगंत में सुनाई पड़ती है। उनकी निम्नलिखित कविता द्रष्टव्य है-

*जन्म जहां श्रीकृष्ण का, वहां मिला है ठौर;*
*पहरा आठों याम का, जुल्म-सितम का दौर;*
*जुल्म-सितम का दौर, पाप का घड़ा भरा है;*
*अत्याचारी यहाँ, कंस की मौत मरा है;*
*कह कैदी कविराय, धर्म गारत होता है;*
*भारत में तब सदा, महाभारत होता है।*

श्री वाजपेयी जी जब मनव्यथा को शब्द देते हैं, तब विषाद का सही चित्रण हो पाता है। पीड़ा प्रमथित होकर पन्नों पर पसर जाती है। आपातकाल के दौरान आम लोगों की करुणा का स्वर उनकी 'एक नया इलहाम' कुंडलिया में गुंजित हो रहा है। महंगाई से जूझ रहे किसान से लेकर क्लर्क तक की कथा-व्यथा को किस तरह उन्होंने चित्रित किया है, उसे इस कुंडलिया में देखा जा सकता है-

*बीस सूत्र का कार्यक्रम एक नया इलहाम;*
*बीस आठ बीते बरस, भरे हुए गोदाम;*
*भरे हुए गोदाम, दाम से जेबें खाली;*
*रोता कभी किसान, कभी बाबू घरवाली;*
*कह कैदी कविराय, कर्ज सब माफ हो गए;*
*झुग्गी वाले कर्जदार, भी साफ हो गए।*

'बेचैनी की रात' शीर्षक कुंडलिया को पढ़कर ऐसा लगता है, मानो कविवर वाजपेयी जेल की यातनाओं से परेशान हों। अपनी बेचैनी कबूलकर भी उन्होंने ईश्वर पर भरोसा रखा है। यह आशावादी दृष्टि है। तनाव की पीड़ा इस रचना में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। विषाद-केंद्रित लगती है उनकी यह काव्य-रचना। इसे इस दृष्टि से भी देखा जा सकता है कि परिस्थितियों का चित्रण करते हुए कवि की वेदना घनीभूत हो गई हो। ऐसे में वे अपने आपको भगवान् भरोसे छोड़ देते हैं। देखिए, वे क्या लिखते हैं -

लोकनायक जयप्रकाश नारायण के साथ अटलजी।

**आपातकाल के दौरान सरकार का बीस-सूत्रीय कार्यक्रम कथित विकास का पर्याय हो गया था। इसके स्तुति-गान के लिए लेखकों और रचनाकारों की लंबी कतार लग गई थी।**

*बेचैनी की रात, प्रात भी नहीं सुहाता;*
*घिरी घटा घनघोर, न कोई पंछी गाता;*
*तन भारी, मन खिन्न, जागता दर्द पुराना;*
*सब अपने में मस्त, पराया कष्ट न जाना;*
*कह कैदी कविराय, बुरे दिन आनेवाले;*
*रह लेंगे जैसा, रखेगा ऊपरवाले।*

आपातकाल की समयावधि ज्यों-ज्यों बढ़ती गई, वाजपेयी जी की कविताओं में वेदना, करुणा और विषाद का भाव बढ़ता गया। विडंबनाओं का दंश कवि को टीसता रहा, तड़पाता रहा। तनाव की पीड़ा ने उन्हें बेचैन भी किया। आपातकाल की आफत झेल-झेलकर उनकी अंतर्ज्वाला अवसाद बनने लगी। गमजदगी के इन्हीं क्षणों में शायद इन्होंने निम्नलिखित पंक्तियां लिखी हों -

*दूर दीवाली, पास अंधेरा;*
*चारदीवारी, कसता घेरा;*
*हटी गरीबी, लक्ष्मी-पूजन;*
*गिरी झोंपड़ी, नव-परिवर्तन;*
*घिरी अमावस, दीप बुझ गए;*
*पासा पलटा, साधु लुट गए।*

आपातकाल के दौरान सरकार का बीस-सूत्रीय कार्यक्रम कथित विकास का पर्याय हो गया था। इसके स्तुति-गान के लिए लेखकों और रचनाकारों की लंबी कतार लग गई थी। इसी पर कुठाराघात किया है कवि ने अपनी कुंडलिया 'काव्य के बीस सूत्र हैं' में। सत्ता की चापलूसी करनेवाले की हद पर कवि ने व्यंग्य किया है। कवियों द्वारा सत्ता-सुख पाने की बेचारगी को देखकर अटल जी मर्माहत हैं। ऐसे चापलूसी कवियों को उन्होंने बिन हड्डी की रीढ़ तक कह डाला है। देखिए, निम्नलिखित पंक्तियां-

*कवि मिलना मुश्किल हुआ, भांडों की है भीड़;*
*ठकुरसुहाती कह रहे, बिन हड्डी की रीढ़;*
*बिन हड्डी की रीढ़, सत्य से नाता तोड़ा;*
*सत्ता की सुंदरी नचाती लेकर कोड़ा;*
*कह कैदी कविराय, काव्य के सूत्र बीस हैं;*
*स्तुति-गायन प्रथम, शेष के कढ़ी खीस हैं।*

इस प्रकार हम देखते हैं कि कविवर वाजपेयी की कविताओं में एक ओर जहां विरोध, ललकार और चुनौती का शंखनाद है, वहीं दूसरी ओर सत्ता की तानाशाही प्रवृत्ति और आतंक का स्वर है। उनकी कविता में वेदना, करुणा और विषाद के साथ-साथ व्यंग्य भी है। वे चुटकियां लेकर विसंगतियों पर प्रहार करते हैं और खिल्ली उड़ाकर उनकी दुर्बलताओं को उजागर करते हैं।

**-लेखक सम्प्रति 'बिहार लोक सेवा आयोग' के सदस्य हैं।** •

# जब वाजपेयी ने विरोधी सुरों को भी समर्थक बना लिया...

-उमेश चतुर्वेदी

शहरों और गांवों के चौक-चौराहों और सड़कों के किनारे स्थित चाय और पान की दुकानों के बारे में सामान्य अवधारणा यह है कि ये सिर्फ सड़क छाप लोगों का ही केंद्र होती हैं। लेकिन हकीकत यह है कि सामान्य और छोटी दिखने वाली ये दुकानें असल में ना सिर्फ लोकमत तय करने, बल्कि उसे प्रभावित करने का सबसे बड़ा केंद्र होती हैं। इन दुकानों पर कही और सुनी गई बातें कई बार राजनीति की दिशा और दशा भी तय कर देती हैं। शायद यही वजह है कि साल 1995 में गठित अखिल भारतीय पान विक्रेता संघ की राष्ट्रीय बैठक में शामिल होना भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वीकार कर लिया था। जिस समय यह संगठन बना, उन दिनों 1996 के आम चुनावों की आहट सुनाई देने लगी थी। देश का एक बड़ा वर्ग अटल बिहारी वाजपेयी को भावी प्रधानमंत्री के तौर पर देखने लगा था। वाजपेयी जी ने सोचा था कि पनवाड़ी संघ के अधिवेशन में अपनी जो वे बात रखेंगे, उसकी अनुगूंज देर तक बनी रहेगी।

इस संगठन का पहला अधिवेशन संसद के नजदीक स्थित मावलंकर हाल में हो रहा था। मुख्य अतिथि के नाते जैसे ही अटल जी अधिवेशन में पहुंचे, दो तरह के नारे लगने लगे। एक नारा स्वाभाविक रूप से अटल बिहारी वाजपेयी जिंदाबाद था तो दूसरा पनवारियों के गुस्से का इजहार।

दरअसल दिल्ली की पहली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर हर्षवर्धन ने दिल्ली को सिंगापुर की तर्ज पर साफ और पान-सिगरेट मुक्त बनाने का सपना देखा था। इसकी तैयारियों में वे जुट भी गए थे। पान-सिगरेट विक्रेताओं और खोमचों वालों को लग रहा था कि अगर डॉक्टर हर्षवर्धन की योजना लागू हुई तो उनकी रोजी-रोटी पर संकट आ जाएगा। संभवतः वाजपेयी जी को इस बात की उम्मीद नहीं थी कि मावलंकर हाल में जुटे पनवाड़ी लोग अपनी तुर्श आवाज उठाएंगे।

बहरहाल, वाजपेयी ने इस अप्रत्याशित विरोध को संभालने की कोशिश की। मंच पर चढ़ते ही उन्होंने कहा – 'मैंने सोचा था कि पनवाड़ी बंधुओं का सम्मेलन है, लिहाजा मेरा पान-सुपारी से स्वागत होगा। लेकिन यहां तो गरमी है। वाजपेयी जी की आवाज का सम्मोहन था या कुछ और .... एक बारगी हॉल में शांति छा गई। वाजपेयी जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज में कुछ देर के ठहराव के बाद मुस्कान के साथ कहा- 'अपने यहां देवताओं को पूजा में तांबूल-सुपारी चढ़ाई जाती है। तांबूल पत्रं समर्पयामि।' अटल जी के अंदाज से सभा में मोहक सन्नाटा बना रहा। इसी बीच सन्नाटे को एक तीखी आवाज ने तोड़ा- 'शराब बेचने पर पाबंदी नहीं, लेकिन पान वालों के पेट पर दिल्ली में लात मारने की तैयारी है। उसे क्यों नहीं रोका जाता?' सभा के बीच से आई इस आवाज को वाजपेयी ने बीच में ही काट दिया... उनकी भंगिमा बदल गई... शराब का किसने नाम लिया...कौन है वह? वाजपेयी जी के रौद्र रूप को देख जैसे मावलंकर हॉल में बैठे लोगों को सांप सूंघ गया। उन्होंने गुस्से में कहना जारी रखा, 'शराब की पान से तुलना नहीं की जा सकती। सोच समझकर बोला करो।' सभा में विरोध के जो सुर थे, वे बदल गए। आयोजकों ने फिर परंपरा के मुताबिक अधिवेशन की शुरूआत की। वाजपेयी जी ने उद्घाटन करते हुए ऐसे भाषण दिया मानों कुछ हुआ ही न हो। अपनी मोहक वाणी से उन्होंने देशभर से जुटे पनवाड़ियों को मोह लिया। पान विक्रेताओं को परिवर्तन चक्र का सहयोगी बताते हुए उन्हें देश की नब्ज भी बताया।

> **शायद साल 2000 की बात है। पत्रकारों ने अपने लिए संसद भवन परिसर में अलग कैंटीन की मांग रखी। ममता जी ने इस मांग को फौरन मान लिया और संसद भवन की पहली मंजिल पर यह कैंटीन स्थापित हुई। कैंटीन का उद्घाटन संसद के शीत सत्र के दौरान प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने ही किया। वाजपेयी जी खाने-पीने के शौकीन थे।**

वाजपेयी जी का ही कमाल था कि उन्होंने भाजपा के खिलाफ खड़े पान विक्रेताओं का ना सिर्फ मन बदल दिया, बल्कि उन्हें अपना मुरीद भी बना लिया।

पत्रकारिता, विशेषकर रिपोर्टिंग की दुनिया एक विशेषाधिकार देती है। समाज, राजनीति, नौकरशाही, अभिजात्य और कारपोरेट आदि की उन हस्तियों से सीधे मुखातिब होने का, जिनसे सामान्य जन का मिल पाना मुश्किल होता है। वाजपेयी जी से अपनी मुलाकात भी ऐसी ही रही। रिपोर्टिंग के दौरान जितना मिले, उनसे जुड़े अनुभव की वही अपनी पूंजी है। उनके चुटीले और विनोदी स्वभाव का एक और अनुभव बेहद दिलचस्प रहा। उन दिनों वाजपेयी सरकार

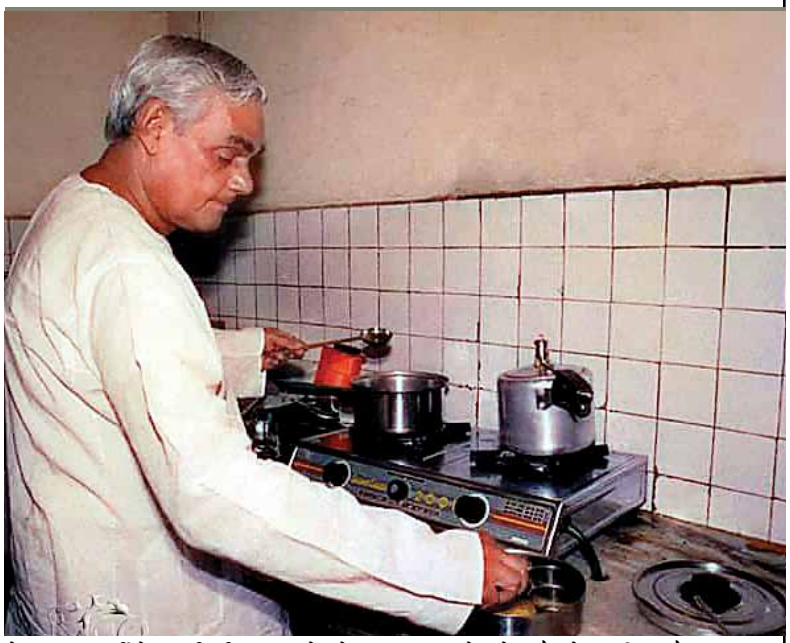

में ममता बनर्जी रेल मंत्री थीं। संसद में जो कैंटीन चलती है, जिसके सस्ते भोजन की आए दिन चर्चा होती रहती है, उसे रेल मंत्रालय के अधीन आने वाले संस्थान आईआरसीटीसी चलाता है। शायद साल 2000 की बात है। पत्रकारों ने अपने लिए संसद भवन परिसर में अलग कैंटीन की मांग रखी। ममता जी ने इस मांग को फौरन मान लिया और संसद भवन की पहली मंजिल पर यह कैंटीन स्थापित हुई। कैंटीन का उद्घाटन संसद के शीत सत्र के दौरान प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने ही किया। वाजपेयी जी खाने-पीने के शौकीन थे। लेकिन उन दिनों डॉक्टरों की सलाह पर उनके खान-पान पर नियंत्रण रखा जा रहा था। फिर भी वे खाने-पीने का मौका तलाश ही लेते थे। कैंटीन के उद्घाटन के बाद वे ममता जी की तरफ मुखातिब हुए और पूछ बैठे- 'ममता जी, कैंटीन का उद्घाटन सूखा-सूखा थोड़े होता है।' कैंटीन का मैनेजर समझ गया। उसने फौरन पकौड़ों की एक प्लेट उन्हें पेश कर दी, जो पत्रकारों के लिए तैयार की गई थी।

उन्होंने कुछ पकौड़े खाए भी। कैंटीन का कमरा पत्रकारों से भरा था, उसी में प्रधानमंत्री भी समाये हुए थे।

इसी दौरान हमारे मित्र संजय त्रिपाठी वाजपेयी से मुखातिब हुए। उन दिनों त्रिपाठी मध्य प्रदेश के इंदौर से प्रकाशित चौथा संसार अखबार के दिल्ली स्थिति संवाददाता था। वाजपेयी जी, कभी-कभी इस तरफ भी आते रहिए।' संजय का सुझाव सुन वाजपेयी जी उनकी तरफ घूमे। प्रश्नवाचक निगाहें उठाई। 'आपके आने से यहां हरियाली रहती है।' प्रधानमंत्री की प्रश्नवाचक निगाहों का संजय को तत्काल यही कारण समझ आया। वाजपेयी जी विनोद की मुद्रा में आ गए। उन्होंने चारों तरफ अपनी निगाह घुमाई और फिर संजय से रूबरू हुए – 'लेकिन मुझे तो कहीं नजर नहीं आ रही।' कैंटीन जोरदार ठहाकों से गूंज उठी। वाजपेयी जी से जुड़े ऐसे अनगिन अनुभव हैं।

दैनिक भास्कर के तत्कालीन दिल्ली ब्यूरो प्रमुख शरद यादव मुंहफट और दबंग पत्रकार थे। शायद 1996 के आम चुनावों से पहले की बात है। तब वाजपेयी जी नेता प्रतिपक्ष थे और छह रायसीना रोड के बंगले में रहते थे, जिसमें अभी मुरली मनोहर जोशी जी रहते हैं। उन दिनों प्रेस क्लब में 'वाजपेयी से मिलिए' कार्यक्रम हुआ। उस कार्यक्रम में भी वाजपेयी जी को भावी प्रधानमंत्री के तौर पर प्रस्तुत किया गया। जब सवाल-जवाब शुरू हुआ तो शरद जी ने उनसे तीखे सवाल पूछे। यहां तक कह दिया कि 1960 से रिपोर्टिंग करते हुए आपको देख रहा हूं, लेकिन कभी आपको स्टैंड लेते नहीं देखा। आप प्रधानमंत्री बनेंगे तो कैसे स्टैंड लेंगे?

आज के राजनेता होते तो ऐसे सवाल से चिढ़ जाते, लेकिन वाजपेयी जी इस सवाल के बाद हंसने लगे। उस वक्त इस सवाल का जवाब टाल दिया, लेकिन नाश्ते के वक्त वे शरद जी से मुखातिब हुए और कह दिया – 'शरद जी, मिठाई खाओ। हमेशा मुंह तीखा क्यों किए रहते हो।'

प्रधानमंत्री के सात रेसकोर्स रोड पर कई बार रिपोर्टिंग के सिलसिले में जाना हुआ। हर बार देखा, वाजपेयी जी कार्यक्रम के बाद अच्छे पारंपरिक भारतीय गृहस्थ की तरह मेजबान की भूमिका निभाते थे। खुद हर व्यक्ति से खाने-पीने का इसरार करते थे। देश की कार्यपालिका के सर्वोच्च पद पर पहुंचने के बाद भी उन्होंने ना तो विनोदी स्वभाव छोड़ा और ना ही सहजता। उनका हृदय विशाल था।

सुमित्रानंदन पंत ने पहले कवि के बारे में लिखा है,

वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान! वियोगी होने के साथ ही कविता रचने के लिए एक और शर्त होती है, व्यक्ति का सहृदय होना। सहृदयता और विनोद व्यक्तित्व को चार चांद लगा देते हैं। वाजपेयी जी दोनों ही गुणों से युक्त थे। उनसे जुड़े ऐसे अनेक ऐसे किस्से हैं, जिन्हें अगर लिखा जाए तो जगह छोटी पड़ जाए...●

**शायद साल 2000 की बात है...पत्रकारों ने अपने लिए संसद भवन परिसर में अलग कैंटीन की मांग रखी...ममता ने इस मांग को फौरन मान लिया और संसद भवन की पहली मंजिल पर यह कैंटीन स्थापित हुई..**

**– लेखक वरिष्ठ पत्रकार और आकाशवाणी के सलाहकार हैं.**

# भारतीय राजनय के शिल्पी अटल जी

-अजयभान सिंह

प्रधानमंत्री जिसने भारत को परमाणु शक्ति बनाया, प्रतिष्ठित अमरीकी अखबार 'वाशिंगटन पोस्ट' ने अजातशत्रु पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन पर अपनी शब्दांजलि का प्रारम्भ इस वाक्य से किया था. वैश्विक संचार माध्यमों में उनके व्यक्तित्व, राजनीति और प्रधानमंत्री के रूप में उनके बहु-प्रतीक्षित, अविस्मरणीय कार्यकाल को लेकर विस्तार से लिखा गया. लेकिन क्या एक सौ बीस करोड़ लोगों की आकांक्षाओं के प्रतिनिधि और संरक्षक के रूप में वाजपेयी जी का अवदान सिर्फ उतना ही था, जितना विदेशी मीडिया संस्थानों ने जाना, समझा और बताया? दरअसल, दार्शनिक और कवि वाजपेयी का आभामण्डल इतना विराट हो है कि उनके वाक्-चातुर्य पर मुग्ध संसार स्टेट्समैन-प्रशासक वाजपेयी को ठीक से देख समझ ही नहीं पाया.

भारत जैसी उलझी और भ्रष्ट प्रशासनिक व्यवस्था के होते हुए भी देश के चारों कोनो और तमाम गावों में पक्की सड़कों का दिवा-स्वप्न साकार कर दिखाने वाले प्रधानमंत्री को अपनी प्रशासनिक दक्षता और आर्थिक समझ के लिए क्यों नहीं याद किया जाना चाहिए? पंडित नेहरू के जमाने से अंग्रेज़ीदां बाबुओं के भरोसे चली आ रही लुंज-पुंज, उबाऊ, सांप निकलने पर लकीर पीटने का प्रहसन करने वाली एक पक्षीय विदेश नीति को उसके लम्बे शीर्षासन से उठाकर एक वैश्विक शक्ति के रूप में भारत की गरिमा को प्रतिष्ठापित करने वाले एक निपुण राजनयिक के रूप में उनका स्मरण क्यों नहीं किया जाना चाहिए? दुनिया भर की नज़र बचाकर अपनी आणविक क्षमता का प्रस्फुटन और उसके बाद दुनिया की वक्रदृष्टि से जिस लालित्य से उन्होंने देश के हितों की रक्षा की उसका भी समवेत स्तुति-गान होना चाहिए। नेहरू-युग में भारत की विदेश नीति के शैशवकाल से ही लगातार दृष्टि देने वाले वाजपेयी को अगर भारत के 'राजनय का शिल्पी' कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

> **सही अर्थों में भारत की लकवाग्रस्त कूटनीति को उसकी कल्पित-रूमानी जकड़न से झिंझोड़कर युगानुरूप लय-ताल देने वाले वाजपेयी ही थे। वाजपेयी जी संसद की बहसों में अक्सर कहा करते थे कि ज्यादा शीर्षासन करने की वजह से नेहरू की दृष्टि उलटी हो गयी है। हमारा राजनय कितना अकर्मण्य और अपने ही वर्तुल के मकड़जाल मे उलझा था, इस बात का अगर ठीक-ठीक अनुमान करना हो तो सोवियत संघ के पतन के बाद के दौर को याद कीजिये।**

सही अर्थों में भारत की लकवाग्रस्त कूटनीति को उसकी कल्पित-रूमानी जकड़न से झिंझोड़कर युगानुरूप लय-ताल देने वाले वाजपेयी ही थे। वाजपेयी संसद की बहसों में अक्सर कहा करते थे कि ज्यादा शीर्षासन करने की वजह से नेहरू की दृष्टि उलटी हो गयी है। हमारा राजनय कितना अकर्मण्य और अपने ही वर्तुल के मकड़जाल मे उलझा था, इस बात का अगर ठीक- ठीक अनुमान करना हो तो सोवियत संघ के पतन के बाद के दौर को याद कीजिये। हम 'काल' के 'भाल' पर लिखी नियति को न भली प्रकार पढ़ पा रहे थे, न समझ रहे थे, न उसपर एक अरब से अधिक भारतवासियों की अदम्य अभिलाषाओं को 'लिख' पा रहे थे और न ही भारत के सदियों के दुर्भाग्य और दमन को 'मिटा' कर कोई 'नया गीत' गा पा रहे थे। भारत का आत्ममुग्ध अभिजात्य यह समझना ही नहीं चाहता था कि जिस साम्यवाद की विषाक्त छाया में उसका लालन-पालन हुआ है, उसके दिन अब लद गए। अगले दो-तीन दशक के लिए दो-ध्रुवीय विश्व-व्यवस्था का अंत हो चुका है और हमें पश्चिम, खासकर अमेरिका के साथ बेहतर कदम-ताल करनी होगी। हालांकि, बीच में पी. वी. नरसिम्हाराव ने उदारीकरण के साथ ही पश्चिम की तरफ रुख तो किया लेकिन तब तक उनकी पार्टी समाजवाद के तिलिस्म से खुद ही मुक्त नहीं हो पाई थी, ऐसे में उससे यह उम्मीद करना बेमानी ही था कि वो राव को राजनय की असीमित छूट लेने देती।

लेकिन पांच दशक बाद के नव्य-भारत की हुंकार को दर्प के 'हुंह' से उपेक्षित करना मुमकिन नहीं था। सुदीर्घ काल से भविष्य के गर्भ में सुप्तप्राय भारत की नियति तब तक किल्लोल करने लगी थी और श्रीराम मंदिर आंदोलन की सफलता से ऊर्जस्वी, नये ओज से संपृक्त भाजपा देश के सत्ता प्रतिष्ठान पर दस्तक दे

रही थी। नेहरू से वैचारिक-मतभेद का आशय यह भी नहीं था कि वाजपेयी ने उनके कूटनीतिक अवदान को इतिहास के कूड़ेदान में डाल दिया हो, उन्होंने बस उसे कोरे आदर्शों और रूमानी ख्यालों से निकालकर वास्तविकता के कठोर धरातल पर उतारा। जनता पार्टी सरकार में विदेशमंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में उनका हिंदी में दिया ख्यात भाषण हो या तब के चीन के साथ सीमा विवादों से इतर विषयों पर खुले मन से चर्चा की पहल हो, वाजपेयी जी ने हमेशा अपने 'राजकर्म-कौशल' से सबको चमत्कृत किया।

1996 में 13 दिन की सत्ता के प्रयोग ने न केवल भारत और भाजपा के आत्म-विश्वास पर गहरा आघात किया बल्कि एकबारगी तो 'जीत' में और 'हार' में सदा एकरस और निस्पृह रहने वाले कोमल हृदय वाजपेयी जी को भी लगने लगा कि कहीं वो भारत के राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास में महज एक फुटनोट बनकर तो नहीं रह जायेंगे। हालांकि भवितव्य को तो भारत की दो हजार साल से दमित आकांक्षाओं का जगज्जयी उद्घोष उन्हीं से कराना था। 1998 में अचानक पोकरण परमाणु विस्फोट कर वाजपेयी ने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्वपटल पर भारत के आगमन और पुनरोदय का प्रस्फुटन कर दिया। अपने सामर्थ्य का वैश्विक प्रकटीकरण करने के बाद वाजपेयी ने संयम और अहिंसा में अडिग विश्वास का परिचय कराते हुए दुनिया को बताया कि उनका देश परमाणु बम का उपयोग पहले नही करेगा.

**1996 में 13 दिन की सत्ता के प्रयोग ने न केवल भारत और भाजपा के आत्म-विश्वास पर गहरा आघात किया बल्कि एकबारगी तो 'जीत' में और 'हार' में सदा एकरस और निस्पृह रहने वाले कोमल हृदय वाजपेयी जी को भी लगने लगा कि कहीं वो भारत के राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास में महज एक फुटनोट बनकर तो नहीं रह जायेंगे।**

वाजपेयीजी के सामने असली चुनौती पोकरण विस्फोट के बाद आने वाली थी। यूरोप और अमेरिका जो तब तक भारत को उसके साम्यवादी झुकाव के कारण न केवल संदेह की नज़र से देखते थे, बल्कि अपनी श्रेष्ठता की ग्रंथि के कारण हमेशा हिकारत भरी नज़रों से भी देखते थे। भारत की आणविक क्षमता को स्वीकार कर उसे वैश्विक वरीयता क्रम में प्रतिष्ठित करना उन्हें नागवार था, इसलिए तमाम तरह की पाबंदियां देश पर थोप दी गयी। मृदुचित्त वाजपेयी को इसका भान था इसलिए वे इस पर कठोर हो गए। संसद में विपक्ष की घेराबंदी का जवाब देते हुए उन्होंने ताल ठोक कर कहा कि "भारत ने न कभी किसी के दबाव में आकर अपनी नीतियां बनायी है न कभी बनायेगा। कुछ ही महीनों के इस कठिन दौर में अपने राजनय कौशल से उन्होंने बाजी पलट दी।

दो परस्पर विपरीत धड़ों को एक साथ

साधने की कला शायद उनके व्यक्तित्व का ही हिस्सा थी। इसलिए एक तरफ वाजपेयी बेहद सख्त और तेज तर्रार छवि के लिए जाने जाने वाले इजराइल के प्रधानमंत्री एरियल शेरोन के साथ देश की मैत्री को नए स्तर पर ले जा रहे थे तो दूसरी तरफ वह इजराइल के धुर विरोधी ईरान को भी साध रहे थे। ईरान के साथ पाकिस्तान से गुजरने वाली गैस पाइप-लाइन का समझौता उन्हीं की दूरदर्शी सोच थी, जिसे पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान ने अपनी अंध-भारत घृणा के चलते मूर्त रूप नहीं लेने दिया। चीन से तमाम इक्तिलाफ़ात और उसके उभार से देश की सुरक्षा को प्रत्यक्ष संकट के बावजूद उन्होंने निजी तौर उसके साथ संबंधों को सामान्य करने का प्रयास किया। इसका परिणाम भी जल्दी ही सामने आया। चीन ने सिक्किम को लेकर अपने दावे वापस लिए और उसे भारत के एक राज्य के रूप में स्वीकार किया।

वाजपेयीजी के सत्तासीन होने तक आत्म-घात की सीमा तक मुस्लिम परस्ती से ग्रस्त भारत के साम्यवादी-समाजवादी राजनैतिक अधिष्ठान के वैचारिक दुराग्रहों के कारण अमेरिका और इजराइल और अमेरिका सदा भारतीय विदेश नीति में अस्पृश्य ही बने रहे। चीन के उद्भव और पाकिस्तान से उसके गठजोड़ को देखते हुए अटलजी ने भू-राजनैतिक और रणनीतिक बदलाव को पहले ही भांप लिया था। भारत को तहस-नहस करने के लिए घात लगाए बैठे इस्लामिक चरमपंथ और साम्यवादी के बीच बढ़ती वैश्विक गलबहियों ने उन्हें इजराइल और अमेरिका से सहयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। आज ये दोनों देश आतंक के इस्लामी और वाम-चरमपंथ के खिलाफ हमारे संघर्ष के सबसे मज़बूत साथी हैं।

कंधार विमान अपहरण कांड में भारत के धैर्य और सामर्थ्य की जिस तरह से परीक्षा ली गयी, जिस तरह विश्व बिरादरी ने हमारी चिंताओं को अनदेखा किया, उससे वाजपेयी जी के अंतस में गहरी चोट पहुंची और उन्होंने दुनिया में भारत की धमक बढ़ाने के लिए चतुर्दिक कूटनीतिक अभियान चलाया। जिसके नतीजे हम आज पूरी धरा पर भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी की यश पताका के रूप में देख रहे हैं।

उनके तीसरे कार्यकाल में क्लिंटन की भारत-यात्रा ने अमेरिका के साथ हमारे संबंधों को हमेशा के लिए बदल दिया। सोवियत संघ के पतन से एकमात्र महाशक्ति होने के गुमान से लबरेज अमेरिका ने भारत के उदय को पहचाना, अंगीकार किया और दो महान लोकतांत्रिक देशों के बीच प्रगाढ़ रणनीतिक संबंधों की आधारशिला रखी. उभरते बाजार, रंग-बिरंगी संस्कृति और दुनिया के हर कोने में अपने

**कंधार विमान अपहरण कांड में भारत के धैर्य और सामर्थ्य की जिस तरह से परीक्षा ली गयी, जिस तरह विश्व बिरादरी ने हमारी चिंताओं को अनदेखा किया, उससे वाजपेयी जी के अंतस में गहरी चोट पहुंची और उन्होंने दुनिया में भारत की धमक बढ़ाने के लिए चतुर्दिक कूटनीतिक अभियान चलाया। जिसके नतीजे हम आज पूरी धरा पर भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी की यश पताका के रूप में देख रहे हैं।**

शील और दक्षता के लिए विख्यात विशाल अप्रवासी भारतीयों के कारण भारत अब दुनिया की निगाह में चमक रहा था। टेलीकॉम, रियल एस्टेट, बीमा, इंफ्रास्ट्रक्चर, बैंकिंग, सर्विस, हेल्थ, टूरिज्म सेक्टर गगनचुम्बी छलांगे लगा रहे थे और 75 साल के कवि दृदय दार्शनिक प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश के इस उभार को पूरी दुनिया विस्मय से देख रही थी।

भारत में लगातार उन्नति की चकाचौंध से पड़ोसी भयभीत न हों शायद इसीलिए राजनय के मर्मज्ञ वाजपेयी ने लाहौर बस यात्रा के रूप में पाकिस्तान को लेकर सद्भाव से परिपूर्ण एक बड़ा दांव चला। लेकिन कारगिल घुसपैठ के ज़रिये पाकिस्तानी सेना के छल ने एक बार फिर शांति और समन्वय की कोशिशों को पलीता लगा दिया। वाजपेयी इस संकट के दौरान बेहद दृढ़ और संयत राजनेता के रूप में उभरे। एक तरफ उन्होंने सेनाओं को अपनी भूमि का एक एक इंच वापस लेने के लिए पूरी छूट दी, दूसरी तरफ ये भी तय कर दिया कि सेना किसी भी सूरत में नियंत्रण रेखा को पार न करे। उनके इस संयम और दृढ़ता को देख अमेरिका और पश्चिमी ताकतों ने पाकिस्तान पर कारगिल से पीछे हटने का दबाव बनाया। बाद में 2001 और 2004 में उसी पाकिस्तानी के राष्ट्रपति जनरल परवेज़ मुशर्रफ को उसी गर्मजोशी से भारत बुलाकर दोनों देशों के दरार को पाटने का भी प्रयास किया। •

**-लेखक अंग्रेज़ी दैनिक स्टेट्समैन के छत्तीसगढ़ प्रमुख हैं.**

# राष्ट्र की ऋषि और कृषि परम्परा को समृद्ध किया अटल जी ने

-संदीप शर्मा

कृषि के क्षेत्र में लंबे समय से बदलाव की मांग थी। हरित क्रांति के बाद से ही कृषि में लगातार उत्पादन बढ़ाने पर ही जोर दिया गया। हरित क्रांति से उत्पादन जरूर बढ़ा पर पर्यावरण और मानवीय स्वस्थ को बड़ी हानि उठानी पड़ी। श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जी का खाद्यान्नों के गुणवत्ता पर व्यापक दृष्टिकोण था, पर्यावरण और मानवीय स्वस्थ की दृष्टि से सुरक्षित खाद्यान्न का उत्पादन कैसे हो इस पर वे चिंता करते थे। कर्ज के बोझ से दबे किसान का कर्ज से मुक्ति कैसे हो, मौसम के मार से होने वाले नुकसान की भरपाई किसानों को कैसे किया जाय ,इन विषय पर अटलजी की सोच गहरी थी।

> **अटल जी जब प्रधान मंत्री बने तब उन्होंने इन सब पर धीरे धीरे काम करना शुरू किया। जिस जैविक खेती को आज देश के किसान अपना रहा है वह अटल जी की देन है, उनके कार्यकाल में ही जैविक कृषि को बढ़ावा देकर गुणवत्ता पूर्ण खाद्यान्न उत्पादन के लिए कृषि मंत्रालय द्वारा पहल की गई।**

अटल जी जब प्रधान मंत्री बने तब उन्होंने इन सब पर धीरे धीरे काम करना शुरू किया।

जिस जैविक खेती को आज देश के किसान अपना रहा है वह अटल जी की देन है, उनके कार्यकाल में ही जैविक कृषि को बढ़ावा देकर गुणवत्ता पूर्ण खाद्यान्न उत्पादन के लिए कृषि मंत्रालय द्वारा पहल की गई।

किसानों को कर्ज के लिए बैंकों का चक्कर न लगाना पड़े इसलिए किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुवात अटल जी के प्रधानमंत्रित्व काल मे ही शुरू हुआ, जिससे किसानों के धारित कृषि भूमि के आधार पर क्रेडिट लिमिट तय कर क्रेडीट कार्ड बनाया जा सका और किसान जब चाहे लिमिट के भीतर राशि आहरण करने लगे।

कर्ज में ब्याज की राशि कम हो इसकी चिंता अटल जी ने ही सर्व प्रथम की, किसानों को समस्त प्रकार के कर्जो में लगने वाले ब्याज से दुगनी ब्याज देनी पड़ती थी। जब मोटर कार के लिए लोन में 8% ब्याज लगता था तब किसानों को हमारे छत्तीसगढ़ में ही अल्पकालीन कृषि ऋण 14% में मिलता था, दंड ब्याज के 3% अतिरिक्त लगते थे जिसे घटाने का कार्य भी स्व अटल बिहारी बाजपेयी जी ने किया, बाद में भाजपा की छत्तीसगढ़ की रमन सरकार ने ब्याज दर को घटाते घटाते शून्य प्रतिशत कर दिया, आज छत्तीसगढ़ में किसानों को सहकारी समितियों के माध्यम से जो शून्य प्रतिशत कृषि ऋण मिल रहा है वह अन्तोगत्वा अटल जी की ही देन है।

अटल बिहारी वाजपेयी 15 अगस्त 2003 को जब लाल किले के प्रचीर से देश को संबोधित कर रहे थे तब पहली बार उन्होंने ही किसानों की आय दोगुना करने की बात कही थी। हालांकि उनका ये लक्ष्य 2010 तक पूरा करने का था। 2004 के बाद यूपीए की सरकार आ गयी । अब 2017 में मोदी सरकार 2022 तक किसानों की दोगुनी आय करने का संकल्प लिया है।

सन 1999- 2000 के खरीफ फसल के समय से ही किसानों के जोखिम को कवर किये जाने हेतु राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना (NAIS) लागू की गई। सन 2000- 2001 में छत्तीसगढ़ में अवर्षा के चलते गैर आपसी क्षेत्र के धान किसानों को भारी नुकसान हुआ परन्तु इस योजना के चलते उस समय राज्य के किसानों को खासकर मुंगेली, दुर्ग, कवर्धा जिला सहित अनेक सूखा तहसील के किसानों बीमा लाभ के रूप में 350 करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे।

अटल जी के प्रधान मंत्री बनने से पहले धान और गेहूं के समर्थन मूल्य प्रति वर्ष 5 या 10 ही बढ़ते थे, वर्ष 1998-99 में वाजपेयी जी ने गेहूं के समर्थन मूल्य में 60 रु और धान के समर्थन मूल्य में 40 रु की बढ़ोतरी की। इससे पहले इतनी बढ़ोत्तरी नहीं हुई थी। चीनी मिलों को लाइसेंस प्रणाली से मुक्त करने का एतिहासिक फैसला किया, इसे चीनी मीलें बढ़ी। फैसले से पहले किसान का सिर्फ 55 फीसदी गन्ना ही चीनी मिलों पर जाता था, बाकी गन्ना कोल्हू और खांडसारी इकाइयों का जाता था। इससे किसान को आर्थिक चोट लगती थी। चीनी मिलें बढ़ने से किसान का अब

90 फीसदी से ज्यादा गन्ना चीनी मिलों को जाता।

किसानों को कृषि संबंधी सारी जानकरी टेलीवीजन के माध्यम से भी मिले और किसान ज्यादा से ज्यादा सीखे, इसलिए उन्होंने किसान चैनल की भी शुरुआत की थी, हालांकि उनके कार्यकाल के बाद इसे और सरकार द्वारा बंद भी कर दिया गया था , जिसे मोदी जी की सरकार ने 26 मई 2015 को पुनः शुरू किया ।

गांवों को इंटरनेट से जोड़ने की पहल सबसे पहले वाजपेयी ने ही अपने कार्यकाल के दौरान की थी। इंटरनेट की बहाली के लिए उन्होंने आईटी नीतियों में बदलाव किया था।

- विकास के लिए सड़क को सर्वाधिक जरूरी चीज मानते थे अटल जी आज के स्वर्णिम चतुर्भुज योजना हो या ग्रामीण सड़क योजना, गाँव को शहर से जोड़ना और शहरों को अच्छी सड़क को जोड़ने के काम की शुरुवात अटल जी ने किया।

छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता श्रद्धेय अटल जी 1998 के लोक सभा चुनाव के पूर्व रायपुर आये थे तब उन्हों ने यहाँ की जनता से अपील किये थे कि छत्तीसगढ़ क्षेत्र के भीतर आने वाले 11 लोक सभा सीट आप भाजपा को दीजिये, हम आपको छत्तीसगढ़ राज्य देंगे। यद्यपि चुनाव में तब इस अंचल से भाजपा को 8 ही सीट में जीत प्राप्त हुई परंतु अटल जी तो अटल जी थे उन्होंने अपने कार्यकाल में छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण कर दिया।

मुझे याद है छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद जब प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी जब रायपुर आये थे उस दिन प्रदेश के कोने कोने से जन सैलाब उमड़ पड़ा था, सप्रे स्कूल का मैदान (तब उसमें कोई काट छांट नही हुआ था?) बौना पड़ गया था सप्रे स्कूल से गवर्नमेंट स्कूल, कालीबाड़ी स्कूल, सिटी कोतवाली, सदरबाजार सद्दानी चौक, पुरानी बस्ती थाना से बूढ़ातालाब के पीछे कैलाशपुरी तक कि सड़कों में पांव रखने की जगह नही थी। पूरे शहर में जहां भी देखते जनसैलाब। राजधानी थम सी गई थी। उस दिन उन्हें उनने वालों में आम जनों के साथ साथ हर राजनैतिक दल के नामचीन कार्यकर्ता दिखे थे, पूरा छत्तीसगढ़ उसदिन उन उनका आभार मानने, कृतज्ञता ज्ञापित करने, धन्यवाद करने रायपुर में उपस्थित थे।

> **छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता श्रद्धेय अटल जी 1998 के लोक सभा चुनाव के पूर्व रायपुर आये थे तब उन्हों ने यहां की जनता से अपील की थी कि छत्तीसगढ़ क्षेत्र के भीतर आने वाले 11 लोक सभा सीट आप भाजपा को दीजिये, हम आपको छत्तीसगढ़ राज्य देंगे।**

यरर25 सितंबर को उनके जन्म दिन पर स्मरण करते हुए कोटि कोटि प्रणाम करता हूँ।

छत्तीसगढ़ के किसानों के धान की समर्थन मूल्य में केंद्र सरकार द्वारा खरीदी 2000- 2001 से शुरू हुई और तब प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपे जी ही थे, इस पहल का श्रेय भी उन्हें ही जाता है। •

## जब किसानों के लिए गिरफ्तार हुए थे अटलजी

अटलजी को किसानों के मुद्दे पर आवाज उठाने की खातिर जेल भी जाना पड़ा था।

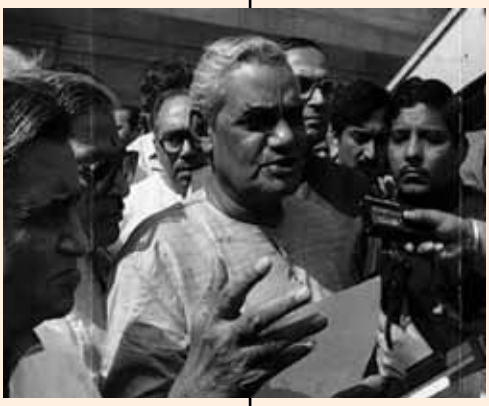

सन 1973 में जब उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी और सत्ता की कमान हेमवती नंदन बहुगुणा के हाथों में थी। उस साल गेहूं की फसल अच्छी हुई थी। यूपी की कांग्रेस सरकार किसानों को सरकारी दामों पर गेहूं बेचने के लिए मजबूर कर रही थी। सरकार का आदेश था कि सभी किसानों का सरकारी मूल्यों पर गेहूं बेचना अनिवार्य है। गेहूं का तब बाजार में भाव अच्छा मिल रहा था, लेकिन सरकारी आदेश के चलते किसान परेशान थे। जनसंघ ने सरकार के खिलाफ देश भर में गेहूं की लेवी आंदोलन शुरु किया। इस किसान आंदोलन की अगुवाई की जिम्मेदारी अटल बिहारी बाजपेयी के हाथो में थी। वे अपने साथ हजारों लोगों को लेकर सड़क पर उतर गए। इससे खलबली मच गई थी। अटल जी को तब लखनऊ में गिरफ्तार कर लिया गया कर नैनी जेल में रखा गया था। अटलजी समेत पांच सौ लोगों को नैनी जेल की पांच नंबर बैरिक में रखा गया था। तब किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य से अधिक कीमत बाजार से पा रहे थे। अब परिस्थिति बदल गयी है।

# छत्तीसगढ़ निर्माता अटलजी के वे महान फैसले जो क्रांतिकारी साबित हुए

### समर्थन मूल्य में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी

वर्ष 1998-99 में वाजपेयी ने गेहूं के समर्थन मूल्य में 19.6 प्रतिशत रही। इससे पहले और आज भी एक साथ इतनी बढ़ोत्तरी नहीं हुई।

### किसान क्रेडिट कार्ड

रिजर्व बैंक और वित्त मंत्रालय ने इस मामले में तब हाथ खड़े कर दिए थे। अटलजी के पास तब कृषि मंत्री का पद भी था। अटलजी ने किसान हित का बड़ा कदम मानते हुए क्रेडिट कार्ड व्यवस्था की शुरूआत की।

### कृषि बीमा योजना

वाजपेयीजी का चौथा एतिहासिक कदम था राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना। आज यह किसानों के लिए लाइफलाइन है।

### प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना

2001 में प्रधानमंत्री रहते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने ग्रामीणों को आवास देने के लिए प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (ग्रामीण आवास) लॉन्च की थी। योजना का लक्ष्य था कि सबके पास अपना घर हो।

### संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

इसके तहत ग्रामीण भारत के गरीबों को मजबूत बनाना था। योजना के लाभार्थियों को प्रतिदिन की मजदूरी के हिसाब 40 रुपए या 8 किलो गेहूं दिया जाता था। यह योजना अनुसूचित जनजातियों, अनुसूचित जातियों और गरीब बच्चों के माता-पिता के लिए थी।

### जनजातीय कार्य मंत्रालय का गठन

अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में ही आदिवासी मंत्रालय का गठन किया गया था।

### आईटी क्षेत्र में क्रांति गांवों को इंटरनेट से जोड़ने की पहल

सबसे पहले वाजपेयी ने ही अपने कार्यकाल के दौरान की थी। इंटरनेट की बहाली के लिए उन्होंने आईटी नीतियों में बदलाव किया था। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में देश को नई टेलीकॉम नीति दी गई थी। इस टेलीकॉम नीति के आने के बाद देश दूरसंचार क्रांति का आगाज हुआ था। आज उनकी इस नीति के चलते ही देश में दूरसंचार उद्योग फल-फूल रहा है। उन्होंने ही 15 सितंबर 2000 को बीएसएनएल का गठन किया।

### देश की सबसे बड़ी खाद्य सुरक्षा योजना

### 'अंत्योदय अन्न योजना

यह भी वाजपेयीजी के कार्यकाल में शुरू हुई थी। इसके अंतर्गत देश के अत्यंत गरीब डेढ़ करोड़ परिवारों के लिए 2 रुपए किलो गेहूं और 3 रुपए किलो चावल के अंतर्गत हर महीने 2 रुपए किलो गेहूं और 3 रुपए किलो चावल हर महीने 35 किलो अनाज दिया जा रहा था। इतना सस्ता अनाज पहले कभी नहीं दिया गया। दुनिया की सबसे बड़ी खाद्य सुरक्षा योजना।

### 1998 में परमाणु परीक्षण

अटल सरकार को बने हुए भी तीन महीना ही हुआ था बावजूद इसके उन्होंने परमाणु परीक्षण का फैसला लिया। अमेरिकी खूफिया एजेंसी सीआईए की नजर भारत की गतिविधियों पर थीं। 11 और 13 मई को राजस्थान के पोखरण में भारत ने दोबारा परमाणु परीक्षण किया और इस बार सफलता मिल ही गई।

### छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण:

दशकों से छत्तीसगढ़ कांग्रेस के शासन में एक पिछड़े और शोषित अंचल के रूप में था। अपनी सांस्कृतिक एवं भौगालिक विशेषताओं समेत हर कसौटी पर एक अलग प्रदेश बनने के उपयुक्त था। अटल जी ने अंचल की पीड़ा को समझा और एक अलग आदिवासी प्रदेश के रूप में उन्होंने 1 नवम्बर 2000 को छत्तीसगढ़ प्रदेश का गठन किया।

### स्वर्णिम चतुर्भुज योजना

1999 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने ही देश के चार बड़े शहर दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज योजना की शुरूआत की।

### प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना

अटल जी ने गांवों को सड़क से जोड़ने का काम शुरू किया था। उन्हीं के शासनकाल के दौरान प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना की शुरूआत हुई थी। इसी योजना की बदौलत आज लाखों गांव सड़कों से जुड़ पाए हैं।

### शिक्षा का मौलिक अधिकार

5- 14 साल के बच्चों को मुफ्त शिक्षा अटल सरकार ने ही इस ओर अमल किया था। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उनकी सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान को मूर्त रूप दिया था जिसके तहत 6 से 14 साल के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने की कवायद की गयी। इसके साथ ही शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया।

**नोट : यह कंटेंट आजतक, गांव कनेक्शन समेत अनेक वेब पोर्टल्स से साभार लिया गया है।**

अटल जी का रायपुर फिर उड़ीसा प्रवास में स्वर्गीय जगदीश जैन जी। फोटो श्री अवधेश जैन के सौजन्य से

स्वर्गीय श्री जगदीश प्रसाद जैन जी तब अविभाजित रायपुर शहर ज़िले के भाजपा जिला अध्यक्ष होते थे । तब उनका श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ उड़ीसा प्रवास पर जाना हुआ था। श्रद्धेय अटल जी विभिन्न कार्यक्रम हेतु रायपुर आना हुआ था तब का नारा हुआ करता था- आज पांच प्रदेश कल सारा देश। - अवधेश जैन।

प्रदेश भाजपा के विधायकदल दिल्ली में अटल जी से मिलते हुए। फ़ोटो तात्कालीन विधायक श्री गौरीशंकर अग्रवाल जी के सौजन्य से।

रायपुर विमान तल के वीआईपी लॉऊंज में विमान की प्रतीक्षा करते अटलजी। साथ में हैं डॉ. राजेंद्र दुबे। (सन् 1984-85)

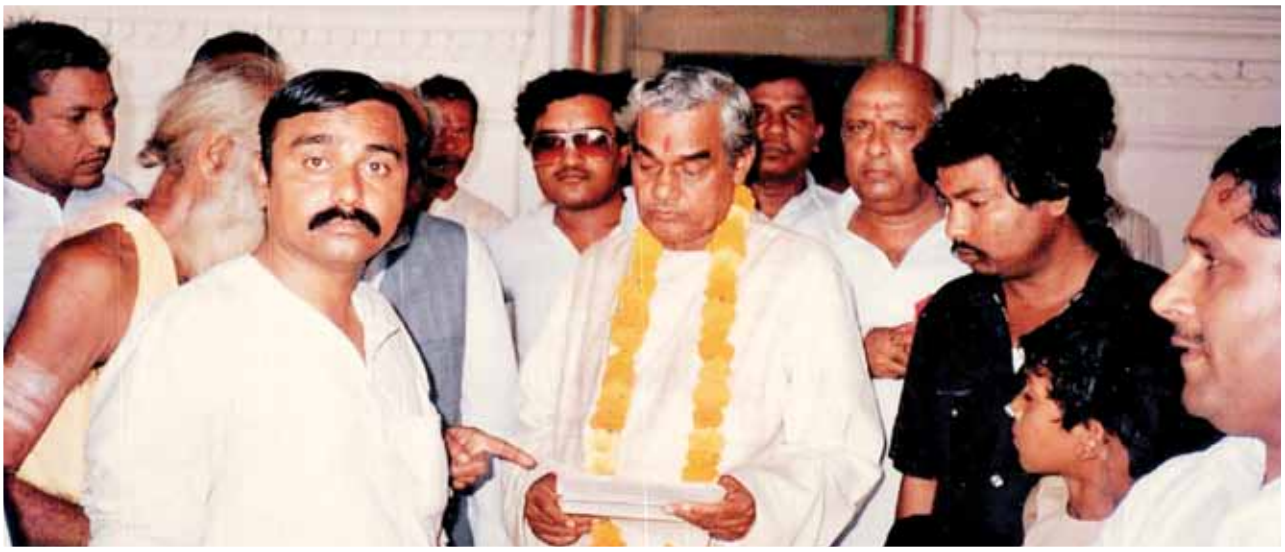

यह चित्र सन् 1984-85 का है, जब अटलजी देशभर के वनवासी क्षेत्रों को प्रवास के सिलसिले में जगदलपुर आए थे। उस समय ली गई इस तस्वीर में एकदम बायें श्री वीरेंद्र पांडेय, अटलजी की दायीं ओर पीछे डॉ. राजेंद्र दुबे, महावीर सिंह राठौर और चित्र में एकदम दायें राणा राजबहादुर सिंह।

यह चित्र सन् 1962 का है। अटलजी ने रायपुर प्रवास के दौरान रामसागरपारा स्थित किरोड़ीमल धर्मशाला में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की बैठक में मार्गदर्शन किया था। चित्र में बायें से डॉ. राजेंद्र दुबे, पूर्व राज्यमंत्री स्व. डॉ. रमेश, श्री केवलराम साहू, अटलजी की बायीं ओर पीछे श्री मंगलमूर्ति अग्रवाल, श्री शिवरतन मल्ल, चित्र में एकदम दायीं ओर डॉ. सुरेंद्र अहलूवालिया और उनके पीछे डॉ. सुरेश।

1984 का चुनाव हारने के बाद अटल जी देश भर के दौरे पर थे। इसी दौरान सरगुजा के तस्वीर। साथ दिख रहें हैं स्व. कुमार दिलीप सिंह जूदेव और स्व. लखीराम अग्रवाल जी। ड्राइविंग सीट पर हैं श्री रणविजय सिंह जूदेव। फ़ोटो साभार।

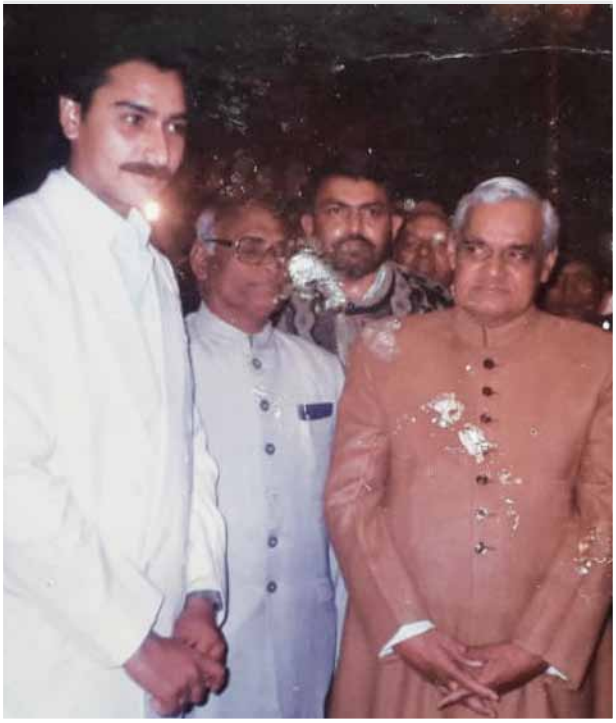

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद अटलजी सर्वप्रथम 2003 के चुनाव से पहले अंबिकापुर आए थे। उस चुनाव में सरगुजा के 8 विधानसभा में से 7 पर भाजपा को जीत मिली थी।

वरिष्ठ भाजपा नेता श्री छगनलाल मुंदड़ा सपरिवार अटल जी के साथ। पीछे खड़े हैं श्री नितिन अग्रवाल।

प्रदेश के पहले विधायक दल से मुलाक़ात की यह तस्वीर तात्कालीन विधायक श्री लीलाराम भोजवानी जी के सौजन्य से।

यह जानते हुए भी कि नए छत्तीसगढ प्रदेश की विधानसभा में कांग्रेस की सरकार बनेगी, अटलजी ने प्रदेश के निर्माण में कोई भेदभाव नहीं किया।

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रदेश महामंत्री संगठन श्री पवन साय, डा. रमन सिंह जी, श्री बृजमोहन अग्रवाल, श्री रमेश बैस और सुश्री सरोज पांडेय।

# अस्ताचलगामी हो जाना भारतीय राजनीति के सूर्य का

-पंकज झा

वरिष्ठ भाजपा नेता शांता कुमार जी ने अटल जी पर एक संस्मरण में 1985 के शुरुआत का वर्णन किया है। श्रीमती इंदिरा गांधी की दुखद हत्या के बाद हुए लोकसभा चुनाव में नवोदित भाजपा मात्र दो सीटों तक सिमट कर रह गयी थी। तब ऐसा लगा था मानो पार्टी का अस्तित्व शुरू होते ही ख़त्म हो गया हो। सर मुड़ाते ही ओले पड़े हो जैसे। ऐसे नैराश्य के समय में एक दिन पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक शांता कुमार अटल जी के यहां किसी कार्यक्रम का आमंत्रण देने पहुचे थे। संवेदनशील अटल जी ने दो टुक मना करते हुए कहा था कि अब किसी राजनीति का कोई अर्थ नहीं है। क्या करेंगे लोगों के बीच जा कर? शांता कुमार ने उन्हें समझाते हुए कहा था कि पार्टी से जुड़े जितने भी लोग हैं, उन सबके पास कोई न कोई काम है, उन सबके पास अपना घर-परिवार है। सब अपने जीवन में व्यस्त हो जायेंगे। लेकिन अटल जी के पास तो कुछ भी नहीं है ऐसा। अगर राजनीति में सक्रिय नहीं रहेंगे तो करेंगे क्या वे आखिर? बात अटल जी को जंच गयी और नए सिरे से फिर से निकल पड़े थे वे तूफानों में दीया जलाने का संकल्प लिए।

उसके बाद का तो खैर सब कुछ इतिहास ने सुनहरे शब्दों में सब कुछ लिख कर रख ही लिया है अटल जी के बारे में। आप स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति में से अटल जी को हटा दें, देख लीजिये कितना कम कुछ रह जाएगा तब आपके पास बताने को। गोया एक भरे-पूरे शरीर में से उसकी आत्मा निकाल दी गयी हो। भरी दुपहरी मानो सूरज ने अनुपस्थित होकर अंधियारा बिखेर दिया हो।

इस धरा पर कोई सदा रहने के लिए तो आया नहीं है। सबको जाना है एक दिन। अटल जी भी गए। पर अटल जी का जाना निश्चय ही राजनीति के क्षितिज पर शुचिता और औदार्य के सूरज का अस्ताचलगामी हो जाना है। सत्ता प्राप्ति की लिप्सा को एकमात्र साध्य मान लेने को 'राजनीति' कहे जाने वाले वक्त में 'न भीतो मरणादस्मि, केवलम दूषितो यशः (मृत्यु से नहीं, अपयश से डरता हूं)' कहते हुए इस्तीफा हाथ में ले कर राष्ट्रपति भवन पहुच जाने वाले व्यक्तित्व का कोई दूसरा उदाहरण कहां

इस धरा पर कोई सदा रहने के लिए तो आया नहीं है। सबको जाना है एक दिन। अटल जी भी गए। पर अटल जी का जाना निश्चय ही राजनीति के क्षितिज पर शुचिता और औदार्य के सूरज का अस्ताचलगामी हो जाना है। सत्ता प्राप्ति की लिप्सा को एकमात्र साध्य मान लेने को 'राजनीति' कहे जाने वाले वक्त में 'न भीतो मरणादस्मि, केवलम दूषितो यशः (मृत्यु से नहीं, अपयश से डरता हूं)' कहते हुए इस्तीफा हाथ में ले कर राष्ट्रपति भवन पहुच जाने वाले व्यक्तित्व का कोई दूसरा उदाहरण कहां से लायेंगे आप?

से लायेंगे आप?

बताइये भला, राजनीति में रचा-बसा-पगा, रग-रग समर्पित किया हुआ कोई युगपुरुष एक बाल सुलभ डर के साथ प्रभु से कभी ज्यादा ऊंचाई नहीं दे देने की मांग करता हुआ नज़र आये, ऐसा कभी और हुआ है क्या? इस भय से कोई ज्यादा ऊंचाई तक नहीं पहुंचना चाहे क्यूंकि उसके बाद फिर वह अपनों को गले नहीं लगा पायेगा, मानो कंधे पर झोला लटकाए कोई बच्चा बार-बार पिता की साइकिल से कूद कर उतर जाना चाहता हो कि वो स्कूल नहीं जाएगा। ऐसी संवेदना, अपनों के लिए इतना अगाध प्यार, 'अपनापन' की इतनी व्यापक परिभाषा, वसुधा को ही कुटुंब समझ लेने की भारतीय संस्कृति से होली के रंगों की तरह सराबोर, अटल जी अब हमारे बीच नहीं हैं। वे अटल जी जिन्हें राजनीति की रपटीली राहें कभी डिगा नहीं पायी कर्तव्यपथ से। तारीख का हर इम्तहान जिन्हें कुंदन ही बनाता रहा।

अपने-आपमें यह अजूबा ही है कि राजनीति के जिस डगर पर लोग चलते ही इसलिए हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा 'ऊंचाई' हासिल कर जल्द से जल्द अपनों के ही गले में फंदा डाल सकें, वहां कोई एक कविमन राजनेता अपने ईश्वर से यह प्रार्थना करता है कि उसे ज़मीन पर ही रहने देना, नहीं करना है परवाज़ उसे किसी महत्वाकांक्षा के आसमान में। हालांकि यह भी सही है कि ऐसे विरले लोग जब फिर भी किसी ऊंचाई तक पहुंच ही जाते हैं, तब तक उनका कद उनके द्वारा धारित पद से इतना ज्यादा बड़ा हो जाता है, कि फिर प्रभुता कभी उन्हें मदांध नहीं कर पाता। कहते हैं, कोई व्यक्ति महान तभी हो सकता है जब उससे मिलने वालों को कभी अपनी कमतरी का अहसास नहीं हो। अटल जी जैसे राजनेता की महानता इसी बात में छिपी थी कि उनसे मिलने वाले किसी भी इंसान को कभी नहीं लगा होगा कि वह कहीं से भी कम महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ के मख्यमंत्री डा. रमन सिंह जी के कक्ष में लिखा वाक्य 'आप मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं' की प्रेरणा भी निस्संदेह अटल जी के व्यक्तित्व से ही ली गयी होगी।

**भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री रहे अटल जी के बारे में यही कहा जा सकता है कि अगर राजनीति जैसे संवेदनहीन क्षेत्र में चुटकी भर भी 'साहित्य' मिला दिया जाय तो वह कितना खुबसूरत हो सकता है, अटल जी का कृतित्व इसका जागता-जीता उदाहरण रहा.**

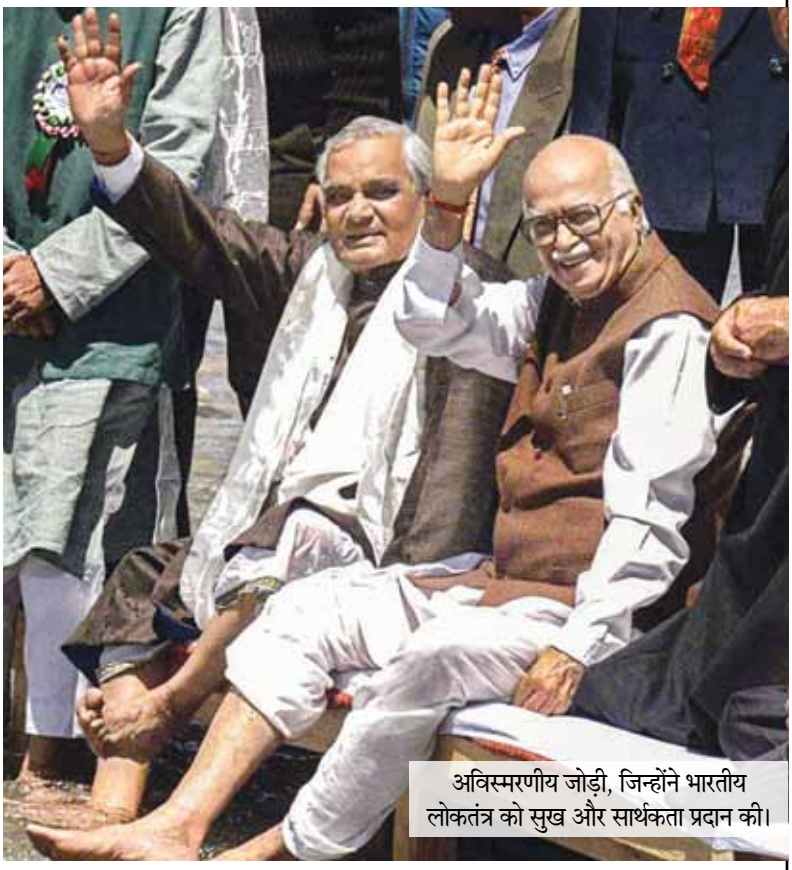

अविस्मरणीय जोड़ी, जिन्होंने भारतीय लोकतंत्र को सुख और सार्थकता प्रदान की।

एक ऐसा अटल योद्धा जो सत्ता में रहकर भी स्थितिप्रज्ञ सा रहे। उस रपटीली राहों पर चलते हुए भी कभी खुद को फिसलने नहीं दिया। कीचड़ में भी कमल के सदृश खिले रहने को कभी केवल चुनाव निशान मात्र नहीं समझने वाले अटल जी अब हमारे बीच नहीं हैं। सत्ता में रहकर भी स्थितिप्रज्ञ हो जाने, उस कीचड़ में भी कमल के सदृश खिले रहने वाले अटल जी, क्या हार में क्या जीत में, किंचित भी भयभीत नहीं रहने वाले, संघर्ष पथ पर जो मिला यह भी सही वह भी सही, ऐसा केवल लिखने के लिए लिखते-कहते रहे हों, ऐसी बात नहीं है। लखनऊ के एक चुनाव की बात है. बार-बार एक पत्रकार उन्हें कहता रहा कि वे इस बार जीत नहीं पायेंगे, फिर क्या करेंगे वे? बार-बार पूछने पर

अटल जी कह बैठे- नहीं जीतेंगे तो हार जायेंगे, इसमें क्या बात है...कहते हुए लोगों को मुस्कुराता छोड़ निकल गए थे प्रचार के लिए।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री रहे अटल जी के बारे में यही कहा जा सकता है कि अगर राजनीति जैसे संवेदनहीन क्षेत्र में चुटकी भर भी 'साहित्य' मिला दिया जाय तो वह कितना खुबसूरत हो सकता है, अटल जी का कृतित्व इसका जागता-जीता उदाहरण रहा। कवि, साहित्यकार, पत्रकार, राजनेता अटल जी मोटे तौर पर 'अभिव्यक्ति के व्यक्ति' के रूप में हमेशा लोगों के मानस पटल पर अमिट बने रहेंगे। राजनीति के अटल धुरंधर जीवन भर एक से एक आक्षेप झेलते हुए भी हमेशा असहमति का मुस्कान के साथ स्वागत करते रहे। ऐसी कठिन साधना के बाद ही किसी युग को एक ऐसा नायक मिलता है जिसे अटल बिहारी वाजपेयी कहा जाता है।

युगपुरुष, राजनेता, लोकनायक, राजर्षि, स्टेट्समैन, पत्रकार, लेखक, कवि, प्रेरक, भारत का पहरुआ, विश्व में भारत का प्रसारक, संस्कृति का अग्रदूत और इनसे भी बढ़कर रग-रग में भरे हिंदुत्व के अपने परिचय को तमगा की तरह पहने, मुकुट की तरह सजाए उन्नत मस्तक और उभरा सीना के साथ पीड़ाओं में पलने, तूफानों से टकराने का साहस संचार करते हुए, कदम मिलाकर चलने का आह्वान करने वाले अटल जी लोकतांत्रिक भारत के इतिहास को एक अनोखा और अद्भुत उपहार के रूप में ही हमेशा याद किये जाते रहेंगे. राजनीति में साहित्य का चितेरा, विचारधारा में असहमति का ध्वजवाहक, संगठन में अपनेपन का अग्रदूत, दल में दिल की बात करने वाला हीरो, साहित्य में सहिष्णुता का राजदूत ...तमाम विशेषण इस महानायक के लिए ज़रा कम ही साबित हो रहे हैं।

**छत्तीसगढ़ समेत तीन प्रदेशों के निर्माता राजनीति के देदीप्यमान इस नक्षत्र का समुचा जीवन ही राजनीति और समाज के लिए एक सन्देश की तरह ही है। भारत को मिले इस पुनीत सन्देश को ग्रहण करने की पात्रता अपने भीतर ले आ कर ही हम अटल जी को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। इस महामानव के प्रति अशेष कृतज्ञता ज्ञापन एक समृद्ध विरासत का गौरव भाव हम भारतीयों में एक युग तक सतत भरते रहने के लिए। भारतीय राजनीति का अटल काल हम सबके स्मृति में अनंत काल तक यथावत रहेगा।**

छत्तीसगढ़ समेत तीन प्रदेशों के निर्माता राजनीति के देदीप्यमान इस नक्षत्र का समुचा जीवन ही राजनीति और समाज के लिए एक सन्देश की तरह ही है। भारत को मिले इस पुनीत सन्देश को ग्रहण करने की पात्रता अपने भीतर ले आ कर ही हम अटल जी को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। इस महामानव के प्रति अशेष कृतज्ञता ज्ञापन एक समृद्ध विरासत का गौरव भाव हम भारतीयों में एक युग तक सतत भरते रहने के लिए। भारतीय राजनीति का अटल काल हम सबके स्मृति में अनंत काल तक यथावत रहेगा। •

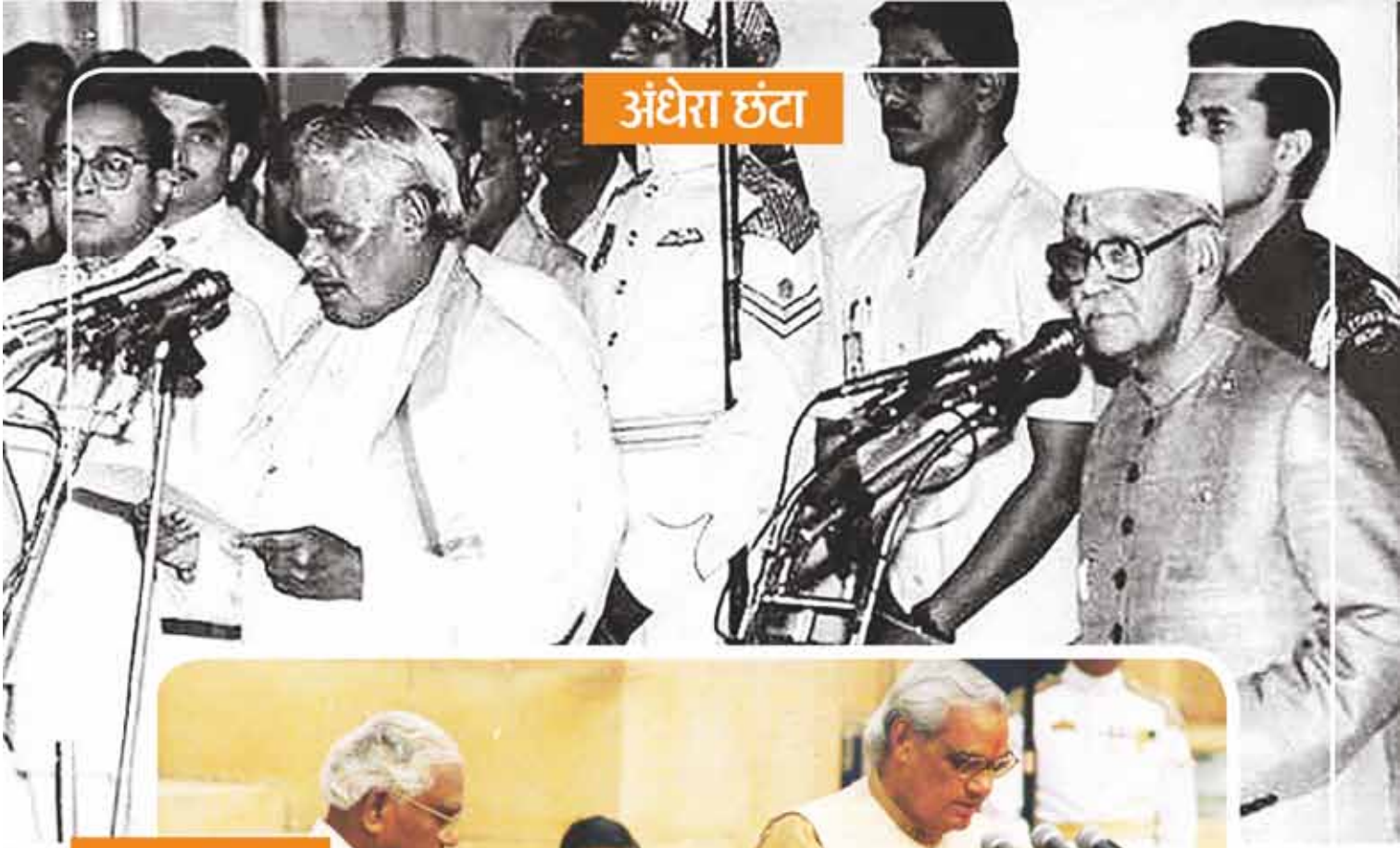
अंधेरा छंटा

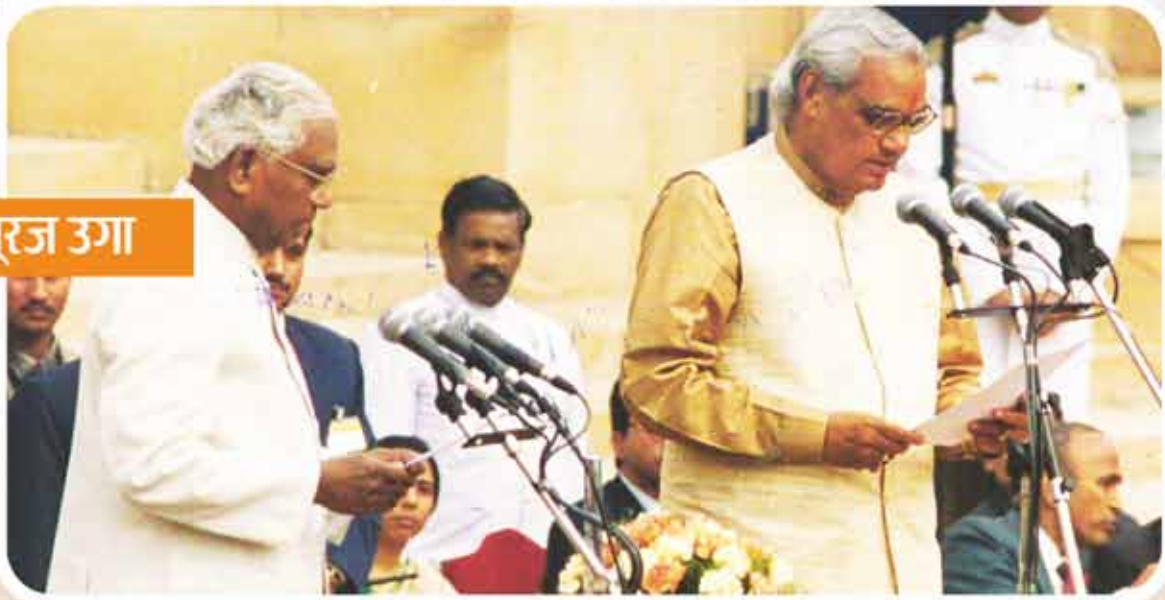
सूरज उगा

कमल खिला...

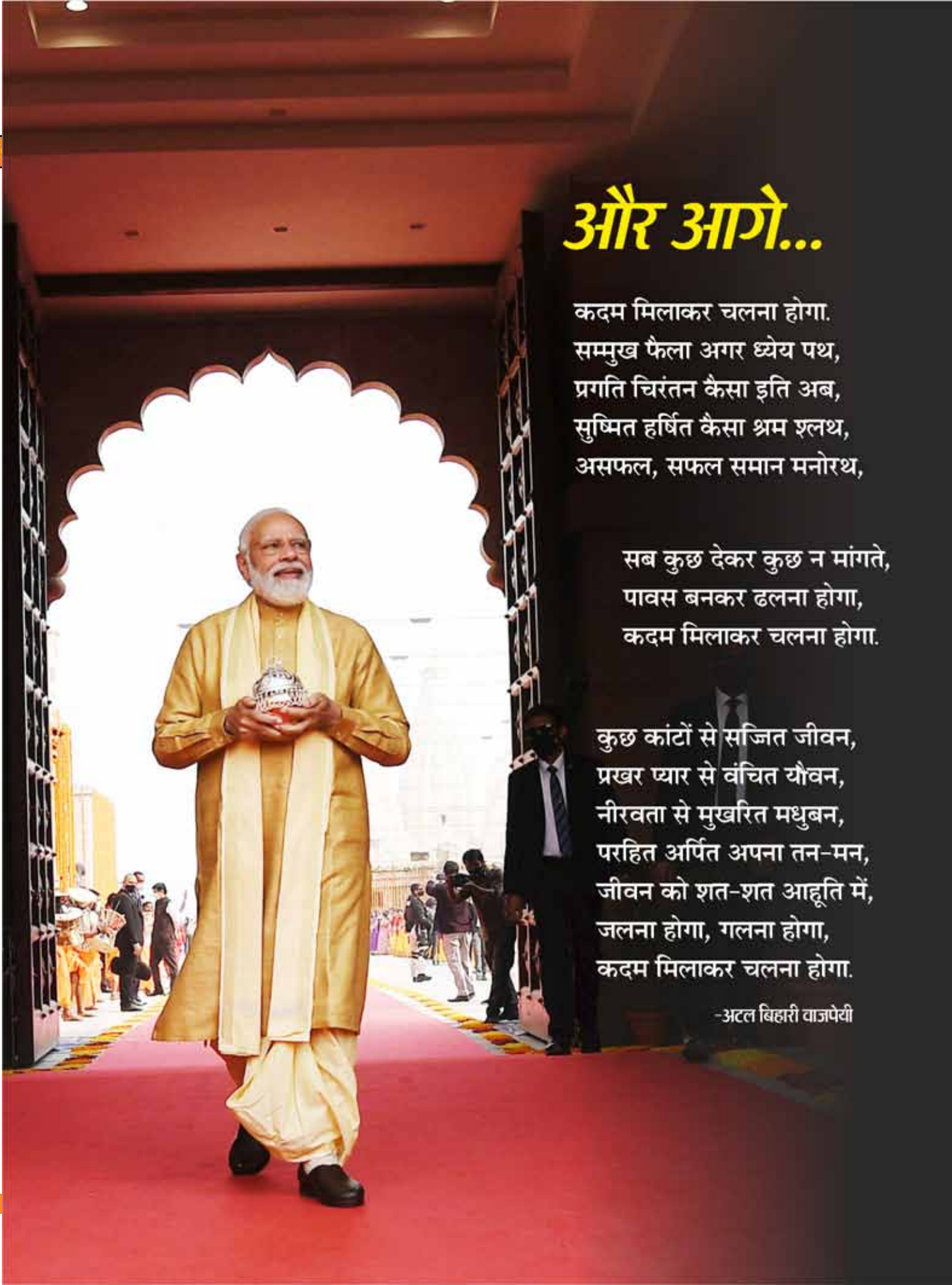

# और आगे...

कदम मिलाकर चलना होगा.
सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अब,
सुष्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,

सब कुछ देकर कुछ न मांगते,
पावस बनकर ढलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा.

कुछ कांटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुबन,
परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहूति में,
जलना होगा, गलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा.

-अटल बिहारी वाजपेयी